ज्ञानांजली

वार्षिक पत्रिका
2022-23

सी. एल. जैन कॉलेज

(सम्बद्ध डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, यूनिवर्सिटी, आगरा)

आगरा रोड, सुहाग नगर के पास, फिरोजाबाद

www.cljaincollege.org.in

cljaincollege@gmail.com

ॐ सरस्वती नमस्तुभंय वरदे कामरुपिणि।
विद्यारंभ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

स्थापना वर्ष – 1959

ज्ञानांजली

वार्षिक पत्रिका

2022-23

सी. एल. जैन कॉलेज

(सम्बद्धः डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, यूनिवर्सिटी, आगरा)

आगरा रोड, सुहाग नगर के पास, फिरोजाबाद

www.cljaincollege.org.in

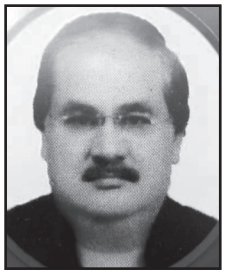

श्री महावीर जैन
अध्यक्ष

श्री प्रवीन कुमार भटनागर
सचिव

प्रबन्ध समिति
(सी.एल. जैन महाविद्यालय, फिरोजाबाद)

1.	श्री महावीर जैन	:	अध्यक्ष
2.	श्री के. राजीव गुप्ता	:	उपाध्यक्ष
3.	श्री प्रवीन कुमार भटनागर	:	सचिव
4.	डॉ एस.सी. सिंह	:	सदस्य
5.	श्री सम्भव प्रकाश जैन	:	सदस्य
6.	श्री संजय जैन	:	सदस्य
7.	श्री रोहित जैन	:	सदस्य
8.	श्रीमती सरोज	:	सदस्य
9.	प्रो. डा. वैभव जैन (प्राचार्य)	:	पदेन सदस्य
10.	(शिक्षक प्रतिनिधि)	:	चक्रानुसार वरिष्ठता क्रम के एक वर्ष की अवधि हेतु
11.	'' '' '' '' ''	:	'' '' '' ''
12.	(तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि)	:	चक्रानुसार वरिष्ठता क्रम के एक वर्ष की अवधि हेतु

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	शुभकामना संदेश : प्रो. आशु रानी – कुलपति डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा : डॉ. रेखा रानी तिवारी – क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, आगरा– अलीगढ मण्डल, आगरा : श्री महावीर जैन – अध्यक्ष – प्रबन्ध समिति : श्री प्रवीन कुमार भटनागर– सचिव – प्रबन्ध समिति : प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन – प्राचार्य : अनिल कुमार यादव – पूर्व सचिव प्रबन्ध समिति	1–7
2.	सम्पादक मण्डल – महाविद्यालय के जनक – : महाविद्यालय के प्रेरणास्त्रोत : महाविद्यालय का परिचय	8–14
3.	उत्तम अनुशासन एवं दिशा निर्देश – डॉ. अरूण कुमार यादव	15
4.	रोवर्स-रेंजर्स – डॉ. (श्रीमती) रश्मि जिन्दल	22
5.	लघु निर्माण व भवन अनुसरण समिति तथा जल व्यवस्था समिति की वार्षिक रिपोर्ट	23
6.	एन. एस. एस. – श्रीमती पूजा त्यागी	24
7.	एन. सी. सी. – डॉ. मुकेश चौधरी	25
8.	A Nuclear Reactor - Dr. Ravindra Kumar	26
9.	भारत में वाणिज्य शिक्षा इतिहास का विकास – डॉ. के.के. सिंह	27
10.	उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल प्रकोष्ठ वार्षिक रिपोर्ट – दीपक कुमार	28
11.	वाणिज्य शिक्षा व भविष्य निर्माण – डॉ. अरूण कुमार यादव	28
12.	रैगिंग दण्डनीय अपराध है – डॉ. अरूण कुमार यादव	29
13.	अपने लक्ष्य को पहचानें – डॉ. दीपिका चौधरी	30
14.	अध्यापक का गुणगान – कु. अनामिका तिवारी	31
15.	Food that fight against cancer - Dr. Rashmi Jindal	32
16.	भारतीय भाषा संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ वार्षिक रिपोर्ट – डॉ. हेमलता यादव	32
17.	नई शिक्षा नीति 2020 से सेमेस्टर प्रणाली एक नजर में – डॉ. अरूण कुमार यादव	33
18.	C.V. Raman Biography - Km. Shivangi Jadaun (M.Sc. Final Chemistry)	34
19.	Prafulla Chandra Ray Contribution to Swadeshi Movement-Dr. Pradeep Jain	36
20.	जी. एस. टी. – डॉ. अरूण कुमार यादव	38
21.	ई–शिक्षा का महत्व – डॉ. अरूण कुमार यादव	40
22.	एन. सी. सी. कविता – कु. राधिका मुद्गल	41
23.	जगत में बड़ो बतायौ काम – डॉ. संजय कुमार सिंह	42
24.	बेटियाँ – नन्दनी शर्मा	42
25.	Indian Army - Nandini Sharma	42

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
26.	प्यारी मोरी मैया – डॉ. अरूण कुमार यादव	43
27.	Indian Mathematician S. Ramanujan, Biography - Dr. Udai Raj Singh	45
28.	ऐसी थी मेरी माँ – डॉ. अरूण कुमार यादव	47
29.	डायरी में शायरी – कु. अनामिका तिवारी	48
30.	कोशिश कर, – अशिंका सागर	48
31.	संघर्ष – अशिंका सागर	48
32.	मैं नारी हूँ – श्रद्धा उपाध्याय	49
33.	कोई अर्थ नहीं – प्रशान्त बघेल	49
34.	किताबों की बातें – अंकित कुमार	50
35.	एन. सी. सी. पर कविता –	50
36.	भारतीय समाज में नारी का स्थान – डॉ. हेमलता यादव	51
37.	भारत रत्न प्राप्त डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम – डॉ. राहुल चतुर्वेदी	52
38.	तकनीकी संसाधनों से सामाजिकता का हनन हुआ है – मदन बघेल	53
39.	मित्रता – साक्षी राठौर	54
40.	धुँधली सी यादें – डॉ. प्रदीप जैन	56
41.	सच्चा गुरू अपने शिष्यों में जीवित रहता है – डॉ. एस. पी. सिंह	57
42.	महिला सशक्तीकरण – डॉ. रूबी यादव	59
43.	About Chemistry - Nandini Sharma	60
44.	Importance of English for Student - Dr. Ruby yadav	61
45.	विभिन्न विभागों की वर्षवार प्रगति रिपोर्ट	
	a. Zoology	64
	b. Commerce	64
	c. Computer Science	65
	d. रसायन विज्ञान विभाग	66
	e. गणित विभाग	66
	f. वनस्पति विज्ञान विभाग	66
	g. भौतिक विज्ञान	67
	h. शारीरिक शिक्षा विभाग	67
46.	वागवानी समिति वार्षिक रिपोर्ट – डॉ. हेमलता यादव	68
47.	AISHE समिति वार्षिक रिपोर्ट – दीपक कुमार	68
48.	नगण्य स्थिति – मदन बघेल	69
49.	एसिड अटैक – अनामिका तिवारी	70
50.	किताबों की दुनिया – रूपाली	70
51.	Elbert Einstein Ka Jeevan Parichay - Dr. S.C. Yadav	71
52.	अर्धांगिनी – डॉ. जी. सी. यादव	73
53.	परीक्षा में शिक्षक का महत्व – शिवानी गोयल	74
54.	महाविद्यालय शिक्षक मण्डल –	75
55.	महाविद्यालय शिक्षणेत्तर मण्डल –	76

प्रो. आशु रानी

कुलपति

Prof. Ashu Rani

Vice-Chancellor

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(पूर्ववर्ती आगरा विश्वविद्यालय)

Dr. BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

(Formely : Agra University)

AGRA- 282 004 (U.P.) INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि "छदामी लाल जैन महाविद्यालय फिरोजाबाद" अपनी वार्षिक पत्रिका "ज्ञानांजली–2022–23" को प्रकाशित कर रहा है।

निसंदेह हमारे विद्यार्थी देश का भविष्य हैं जो राष्ट्र को नवायं पथ पर ले जाने में सहायक होंगे। उन्हें प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता का उनके व्यक्तित्व पर निश्चित प्रभाव छोड़ती है। मुझे उम्मीद है कि महाविद्यालय अपना सौहार्दपूर्ण शैक्षणिक माहौल बनाये रखने में कामयाब रहेगा और अपने नवोदित पेशेवरों को भविष्य का सामना करने के लिए सक्षम बनाने के ढेर सारे अवसर प्रदान करेगा।

कॉलेज पत्रिकाओं का एक बड़ा ही शिक्षाप्रद मूल्य है। वे छात्रों को सोचने और लिखने के लिए प्रोत्साहित करता है और अपनी रचनात्मक व लेखन प्रतिभाओं को वास्तविक दुनिया के समक्ष रखने का मंच भी उपलब्ध कराती है। किसी भी संस्थान/महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका मात्र पत्रिका न होकर, उस संस्था/महाविद्यालय का दर्पण होती है जो अपनी उपलब्धियों, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि गतिविधियों का संचयन करती है एवं आगामी आयामों को तय करने की रूपरेखा बनाने में भी सहायक सिद्ध होती है।

मुझे आशा है कि यह प्रकाशन इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा । महाविद्यालय परिवार को "ज्ञानांजली – 2022–23" के सफल प्रकाशन एवं सम्पादन मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

Ashu Rani

(आशु रानी)

डॉ. (रेखा रानी तिवारी)
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
आगरा

अर्द्ध.शा.प.सं. : क्षे.का.आ./मेमो
दिनांक :

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि सी.एल.जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा 2022-23 में वार्षिक पत्रिका '**ज्ञानांजली**' को प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें महाविद्यालय की शैक्षणिक और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का समावेश किया जायेगा। इस प्रयास से महाविद्यालय के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता एवं प्रतिभा को नए पंख लगेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में ऐसे तथ्यों व लेखों को स्थान दिया जाएगा जो सभी पाठकों के लिए उपयोगी होंगे। किसी भी शिक्षण संस्थान की गतिविधियों को सार्वजनिक किये जाने की कड़ी में इस तरह के प्रकाशन सबसे अच्छे माध्यम होते हैं।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रवक्ताओं एवं छात्र/छात्राओं को वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामना सहित उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित...

(डॉ. रेखा रानी तिवारी)

प्रतिष्ठा में,

डॉ. वैभव जैन
प्राचार्य
सी.एल. जैन कॉलेज
फिरोजाबाद

Message

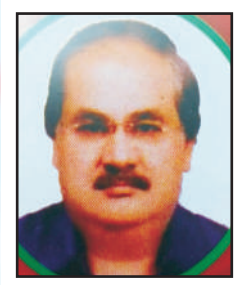

As the President of our management committee of college, I would like to heartily congratulate Principal Professor (Dr.) Vaibhav Jain and his team for the successful publication of the Annual Magazine. His dedication, hard work and commitment have made this achievement possible.

The magazine is not just a collection of articles and photographs, but a reflection of the creativity, talent and achievements of our students and teachers. It is an important platform to showcase the achievements of our college and inspire others to strive for excellence.

I am sure that this magazine will be a source of pride for our college and its members. I am honored to be a part of this achievement and wish you all the best for future endeavours.

Sincerely

Mahavir Jain

President

(Management Commitee)

C.L. Jain College, Fzd

Message

I am writing to convey my heartiest congratulations and best wishes on the successful publication of the college Magazine "GYANANJALI" this year. As the Manager of our reputed post graduate College, I am proud of the tremendous effort and hard work put in by principal and editorial board bringing out such a wonderful magazine.

This annual publication not only showcases the creativity and talent of our student but also highlights the achievements and milestones of our college throughout the year. The magazine is an excellent platform for our students to express themselves and share their experiences, which will undoubtedly inspire others.

I would like to take this opportunity to thank all college staff for their unwavering dedication to our college and for always ensuring that our students get the best possible education. Leadership and vision of principal Professor (Dr.) Vaibhav Jain have been instrumental in shaping the future of our college, and we are fortunate to have him at them helm.

Once again, congratulations on the successful publication of the college magazine, and I wish all the best for future endeavours in our college.

Sincerely

Praveen Kumar Bhatnagar

L.L.M., Advocate

(Secretary - Management Committee)

C.L. Jain College, Fzd

संदेश

महाविद्यालय के उभरते रचनाकारों की रचनाएँ, विद्वान प्राध्यापकों के ज्ञानवर्धक लेख एवं विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय के पूरे सत्र की विशिष्ट उपलब्धियों के संकलन से "ज्ञानांजली" पत्रिका के प्रकाशन पर महाविद्यालय परिवार, संपादक मंडल एवं सभी छात्र-छात्राओं को ढेर सारी बधाइयाँ।

महाविद्यालय के समग्र विकास अध्ययन/अध्यापन में गुणवत्ता परीक्षा परिणाम प्रयोगशालाओं का उन्नयन, ग्रंथालय, क्रीड़ांगन एवं खेलकूद अन्य सुविधाओं के साथ अधोसंरचना का व्यवस्थित विस्तार करते हेतु महाविद्यालय प्रशासन एवं कार्य समितियां निरंतर प्रयास कर रहे हैं इसका परिणाम है कि महाविद्यालय को विश्वविद्यालय में उचित स्थान प्राप्त है। महाविद्यालय को उत्कृष्टता के इस उच्च स्तर पर लाने हेतु महाविद्यालय प्रशासन एवं कार्य समितियों के साथ-साथ अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को हृदय से साधुवाद, आभार व्यक्त करता हूँ।

छात्र-छात्राओं में निरंतर गुणवत्ता विकास हेतु महाविद्यालय में नई शिक्षा नीति 2020 (NEP) के अंतर्गत पठन-पाठन, छात्र-छात्राओं का सतत् मूल्यांकन, सेमिनार, कार्यशाला, कक्ष परीक्षा, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा प्रोजेक्ट आदि आयोजन होता रहता है।

महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को विभिन्न जानकरी देने एवं उनकी समस्याओं के निराकरण एवं अभिभावकों से सीधे संवाद हेतु महाविद्यालय में इस सत्र से शिक्षक अभिभावक योजना पर जोर दिया जा रहा है। सभी अभिभावाकों एवं छात्र-छात्राओं से अपील है कि वे शिक्षक अभिभावक बैठक में उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य सुझाव दें ताकि हम महाविद्यालय को और बेहतर बना सकें।

महाविद्यालय निरंतर नई ऊँचाइयों के साथ नई उपलब्धियों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। इस संदेश के माध्यम से महाविद्यालय के समस्त अधिकार कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं से विनम्र अपील है कि महाविद्यालय को निरंतर उपलब्धियों के शिखर पर जाने का प्रयास करते समय भिन्नता अनुशासन धैर्य एवं नैतिक मूल्यों को हमेशा ध्यान में रखें एवं महाविद्यालय की गरिमा को बढ़ाते हुए अच्छे नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें । सभी छात्र-छात्राओं को आगामी परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद।

प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन

प्राचार्य

सी.एल.जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय

फिरोजाबाद

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हमारे महाविद्यालय के वर्तमान प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन जी द्वारा वार्षिक पत्रिका 'ज्ञानंजली' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियो की बौद्धिक क्षमता का बढ़ावा देने के साथ-साथ मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरणा में भी सहायक सिद्ध होगी । मेरा मानना है कि उक्त पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को लेख, निबंध एवं कविता आदि के लेखन का जो अवसर मिलेगा उससे उनका विश्वास बढ़ेगा और रचनात्मक गुणों का विकास होगा।

'ज्ञानंजलि' पत्रिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

धन्यवाद् !

शुभकामनाओं सहित...

Anil Kumar Yadav

डॉ. अनिल कुमार यादव

(पूर्व सचिव प्रबन्ध समिति)

सी.एल. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय

EDITORIAL

As the name of **" Gyananjali"** suggests, in fact this magazine is an ocean of knowledge of the young talent, energy, creativity and positivity of the students. **"Gyananjali"** is a treasure trove of invaluable thoughts of the students. This magazine has been published keeping in mind the golden future and achievements magazine is not just a collection of poems and stories, but it is a mirror of the students' attitude towards the country and society.

This volume is the result of the untiring efforts of the team which is made special by our young student representatives. **"Gyananjali"** the testimony of the activities and achievements of the college students.

Our especially thanks to college management, with whose permission and support this magazine could be published. We take this opportunity to acknowledge the staunch support of the dynamic leadership of our respected Principal Prof. (Dr.) Vaibhav Jain Sir Ji. and all our Editorial team and our college staff members. Our thanks are due to all the students for their valuable contributions to this volume and the cooperation of the "Gyananjali" team for the timely release of this volume:

Our wish to share the Golden words of Dr. APJ Abdul Kalam.....

" You cannot change your future
But you can change your habits
And surely your habits will change your future"

And last we would just like to say that the golden word of our college is

" Enter to Grow in Wisdom and Depart to serve the Mankind"

With Best Wishes.... S

Dr. (Smt.) Rashmi Jindal (Chief Editor)
Dr. Arun Kumar Yadav (Editor)
Dr. Hemlata Yadav (Editor)
Ms. Shivani Goel (Editor)
Dr. Kuber Singh (Editor)
Dr. K. K. Singh (Editor)

महाविद्यालय के जनक

स्व. सेठ छदामी लाल जी जैन
महाविद्यालय संस्थापक

छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय श्री सेठ छदामी लाल जैन जी का जन्म 12 जून सन् 1896 में पल्लीवाल दिगंबर जैन समाज में हुआ था। सेठ जी के पिताजी का नाम श्री मोतीलाल जी जैन और माता जी का नाम श्रीमती कुंदनबाई था। सेठ जी तीन भाई थे। श्री बाबूलाल जी जैन, श्री प्यारेलाल जी जैन व सेठ जी। सेठ जी अपने भाइयों में सबसे छोटे थे।

मात्र सात साल की अल्प आयु में सेठ जी अपने माता और पिता दोनों की छाया से वंचित हो चुके थे इस प्रकार उनका बचपन जल्दी समाप्त हो गया था। वह बचपन से ही बड़े मेहनती व स्वावलंबी प्रकृति के बन गए थे। सेठ जी ने अपने जीवन काल में बड़ी कठिनाइयों का सामना किया लेकिन कोई भी बाधा उनके तेज के सामने उनके उज्जवल भविष्य को रोक नहीं पायी। सेठ जी ने हर क्षेत्र मे अपना नाम किया चाहे वह व्यापार का क्षेत्र हो, चाहे वह समाज का क्षेत्र हो या राजनीति या फिर कोई अन्य क्षेत्र। व्यापार के क्षेत्र में सेठ जी ने अपने मेहनत पर, अपने बल पर, अपने कठिन परिश्रम पर उन्होंने मोती प्राइवेट लिमिटेड के नाम से हिरनगांव में फैक्ट्री लगायी जिसमें उस समय दो हजार से भी ज्यादा मजदूर कार्य करते थे और तीन पालियों में कारखाना चलता था।

कठिन परिश्रम और ईमानदारी के बल पर सेठ जी को कांच उद्योग में सफलता मिलती गई। व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। धीरे-धीरे श्रम की सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते सेठ जी ने दूसरा कारखाना भी लगाया और वह दो कारखानों के स्वामी होकर संपन्नता के शिखर तक पहुँच गए। ''भारत का ग्लास किंग और एशिया नंबर दो के खिताब'' उनके नाम के आगे जुड़ गए। यह सब उनकी सूझबूझ और पुरूषार्थ का कमाल था।

संपन्नता बढ़ने के के साथ भी सरल स्वभाव के स्वामी थे। समय के साथ साथ जैसे-जैसे उनका व्यापारिक और औद्योगिक विकास हो रहा था। वैसे ही वैसे उनकी धार्मिक गतिविधियाँ भी विकसित हो रही थी। सन् 1947 में उन्होंने छदामी लाल जैन ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट का उद्देश्य धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को बढ़ाने का था। इस ट्रस्ट के अंतर्गत उन्होंने नौ संस्थाओं की स्थापना की।

1. श्री दिगंबर जैन महावीर जिनालय
2. श्री मोतीलाल जैन धर्मार्थ औषधालय
3. श्री मोतीलाल जैन पार्क
4. श्री गणेश प्रसाद वाणी स्वाध्याय कक्ष
5. श्री कानजी पुस्तकालय एवं वाचनालय
6. श्रीमती सरस्वती देवी दिगंम्बर जैन धर्मशाला
7. श्री छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय
8. श्री छदामी लाल जैन जूनियर स्कूल हिरन गांव
9. श्री दिगंबर जैन चंद्रपाल पाठशाला चंदवार

इस धनी परिवार के प्रबंधन में यह सभी संस्थाएं आज भी सुव्यवस्थित ढंग से संचालित हो रही हैं। और दान देने की परंपरा को यथावत रखते हुए सेठ जी के पौत्र सेठ महावीर जैन जी ने वर्तमान में सेवार्थ संस्थान सेठ विमल कुमार जैन ट्रामा सेंटर को भी जमीन दान की।

सन् 1959 में जब सेठ जी को यह पता चला उनके नगर के विज्ञान वर्ग के मेधावी छात्र–छात्राऐं पढ़ने के लिए शहर से अन्य शहरों में जाते हैं तब उन्होंने छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की जिसमें सभी छात्र–छात्राओं को पढ़ने का मौका मिला और इस महाविद्यालय में पढ़ कर कई छात्र एवं छात्राऐं आज अच्छे मुकाम पर कायम हैं।

सेठ छदामी लाल जैन जी ने धार्मिक संस्थाओं के सुरूचिपूर्ण निर्माण के विचार में श्वेत धवल संगमरमर का भव्य ''श्री महावीर जिनालय'' का निर्माण कराया था। तत्पश्चात उनके पुत्र स्वर्गीय सेठ श्री विमल कुमार जैन के द्वारा भगवाल बाहुबली की 130 टन वजनी और 43 फुट उँची प्रतिमा को स्थापित कराया था।

सेठ जी ने एक बार स्थानीय राजनीति में भी प्रवेश किया था। फिरोजाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष भी रहे किंतु स्वार्थी तत्व की दलबंदी भ्रष्टाचार और निरर्थक वाद–विवाद का अनुभव करने के बाद उन्होंने शीघ्र ही पद से त्यागपत्र दे दिया और सदैव के लिए राजनीति को त्याग दिया। सेठ जी ने हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है ऐसा महापुरूष शताब्दियों में एक बार जन्म लेता है।

13 जनवरी 1976 को दिगंबर जैन समाज का एक उज्जवल नक्षत्र अकस्मात् अस्त हो गया था। फिरोजाबाद अंचल के निस्पृह सेवक और उपकारी महामानव का जीवन दीप सदा के लिए भुज गया था। यह शताब्दी के अनुपम महापरुष का दुखद अंत था।

बड़े आदमी दुनिया में बहुत मिलते हैं, परन्तु बड़प्पन सब मे नहीं होता है। वह जिनमें होता है उन्हें खोकर मानवता कराह उठती है। उस दिन फिरोजाबाद में ऐसा ही हुआ था सेठ छदामी लाल जैन जी अपनी तरह के अकेले महापुरूष थे। उनके विछोह पर यही विश्वास मन को बोध देता है कि उन्हें मार सके इतनी शक्ति मृत्यु में नहीं थी। वह मरे नहीं हैं मर नहीं सकते हैं। उनकी यश काया अमर है। वह उनके द्वारा रोपे गए लोकोपकार पौधों के रूप में फल फूल रही हैं। कई पीढ़ियों तक हमारी संतानो को उन महावृक्षों की छाया मिलती रहेगी। ऐसे अवसर पर हमें एक शेर याद आता है।

इस शहर में जब कोई साया न पाएगा
ये आखिरी दरख्त बहुत याद आएगा
उस आदम कद आदमी की स्मृतियों को लाखों प्रणाम।

महाविद्यालय के प्रेरणास्त्रोत

स्व. सेठ विमल कुमार जैन
महाविद्यालय सहसंस्थापक

छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सह संस्थापक स्वर्गीय सेठ विमल कुमार जी जैन का जन्म 16 सितम्बर 1933 को फिरोजाबाद के दिगंबर जैन परिवार में हुआ था। सेठ विमल कुमार जी के पिता का नाम सेठ छदामी लाल जैन व माता का नाम श्रीमती शरबती जैन था। सेठ विमल कुमार जी अपने माता पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे। एक पिता जो योग्यताऐं अपने पुत्र में देखना चाहता है वह सब आप में विद्यमान थी। आधुनिक ''श्रवण कुमार'' की उपाधि ही आपके लिए उपयुक्त है। आपने सेठ जी की आज्ञा को सदा देव आज्ञा की तरह माना तथा उसे पूरा किया।

सेठ छदामी लाल जैन ने जो ट्रस्ट बनाया था तथा जो मदिंर का निर्माण शुरू किया था उसको सेठ विमल कुमार जैन जी के द्वारा पूर्ण किया गया।

श्रद्धेय, चिरस्मरणीय, सम्मानित श्री विमल कुमार जैन जी छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अध्यक्ष पद पर सन 1959 से मृत्युपर्यान्त आसीन रहे। अपने इस कार्यकाल में आपने अथक परिश्रम त्याग, समर्पण, लग्न, पूर्णनिष्ठा एवं दृढ़ संकल्प शक्ति से महाविद्यालय को प्रगति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने में महत्ती भूमिका का निर्वहन किया।

वे छात्र–छात्राओं के बहुमुखी विकास के लिए सदैव चिंतित रहे जिसके परिणाम स्वरूप महाविद्यालय के पाठ्य सहगामी एवं पाठ्यत्तर क्रियाकलापों जैसे योग, स्वच्छ, सुंदर पर्यावरण एवं क्रीड़ा पर उनका विशेष आग्रह रहा।

इस महाविद्यालय की नींव जो उनके पिताजी द्वारा रखी गई थी उसे उन्होंने शिखर की ऊँचाइयों तक पहुँचाकर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में विशेष स्थान दिया।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी धर्म–कम–योगी की भांति वे निरंतर महाविद्यालय की प्रगति एवं विकास हेतु चिंतित व प्रयत्नशील रहे।

शिक्षक गण, अध्यक्ष जी व सेक्रेटरी साहब

शिक्षणोत्तर

शिक्षणोत्तर

अनुशासन विभाग

EDITORIAL

सी.एल. जैन महाविद्यालय, फिरोजाबाद का परिचय

सम्बद्ध डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा

विभागीय संकेत संख्या –2112, महाविद्यालय कोड – 031

सी.एल.जैन (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद 1959 में उच्चतर शिक्षा के अध्यापन–अध्ययन तथा प्रचार–प्रसार करने हेतु स्थापित किया गया। इस महाविद्यालय की स्थापना सेठ स्व. श्री छदामी लाल जी जैन की दानवीरता के फलस्वरूप (बी.एस.सी. गणित की कक्षाओं के साथ) की गई। सन् 1966 में यहाँ रसायन विज्ञान व गणित विषय में स्नातकोत्तर स्तरीय कक्षाऐं, वर्ष 1992 में जीव विज्ञान , वर्ष 1999 में कम्प्यूटर विज्ञान व 2015 से बी.कॉम की कक्षाऐं विधिवत चल रही हैं।

महाविद्यालय में नई शिक्षा नीति के अनुसार अध्यापन–अध्ययन कार्य, सेमीनार, कार्यशाला, सतत मूल्यांकन, कक्षा, परीक्षा, प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगितायें, प्रयोगात्मक कार्य तथा खेलकूद के लिए सुयोग्य शिक्षक आवश्यक भूमि–भवन उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाऐं, पुस्तकालय तथा अन्य सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। NEP के अन्तर्गत स्नातक तथा परास्नातक कक्षाओं के लिए Minor विषय के रूप में अग्रेंजी विषय भी आरम्भ किया गया।

महाविद्यालय में निम्न पाठ्यक्रम संचालित हैं जो डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से मान्य व सम्बद्ध है।

1. पी. एच–डी. (गणित व रसायन विज्ञान)
2. एम.एस–सी. (गणित व रसायन विज्ञान)
3. बी.एस–सी. (गणित ग्रुप व जीव विज्ञान ग्रुप)
4. बी.एस–सी. (वाणिज्य ग्रुप)

बी.एस–सी. गणित वर्ग में, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान अथवा गणित, भौतिक विज्ञान व कम्प्यूटर विज्ञान के अतिरिक्त छात्र–छात्राओं के लिए शारीरिक शिक्षा विषय भी है। बी.एस–सी. कम्प्यूटर विज्ञान, बी.एस–सी. जीव विज्ञान, बी.कॉम. स्ववित्त पोषित व्यवस्था के अन्तर्गत है।

अनुशासन विभाग

छात्र छात्राओं के अनुशासनात्मक विकास की दृष्टि से महाविद्यालय में एक अनुशासन विभाग है।

अनुशासन प्रमुख व समिति के अध्यापक छात्रों को व्यवहार, आचरण और क्रिया कलापों पर निरन्तर दृष्टि रखतें हैं उनकी गोपनीय आख्या भी तैयार करते हैं।

छात्रों के चरित्र प्रमाण पत्र, अनुशासन विभाग की संस्तुति पर ही निर्गत किये जाते हैं।

छात्र छात्राओं में रेगिंग पूर्णत: वर्जित है। महाविद्यालय परिसर के अन्दर अनुचित व्यवहार करने, अनुशासन भंग करने, महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों या छात्र–छात्राओं से दुर्व्यवहार करने सार्वजनिक स्थानों में अव्यवस्था उत्पन्न करने अथवा किसी प्रकार की विधि विरूद्ध गतिविधियों में संलग्न होने के दोषी पाये जाने पर।

पुस्तकालय व वाचनालय

महाविद्यालय के पास एक समृद्ध पुस्तकालय और वाचनालय है, जिसमें सभी विषयों की उत्कृष्ट स्तर की उपयोगी पुस्तकें तथा जनरल्स उपलब्ध हैं। रिफरेन्स बुक भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। वाचनालय में दैनिक, साप्ताहिक, मासिक व त्रैमासिक पत्र–पत्रिकाऐं मंगाई जाती हैं। सामान्य ज्ञान से शोध स्तर तक के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। पुस्तकालयाध्यक्ष की देखरेख में सभी व्यवस्थायें सुचारू रूप से चलती हैं।

क्रीड़ा–विभाग

शिक्षा के साथ–साथ छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए खेल–कूद जैसे वॉलीबाल, फुटबॉल, क्रिकेट,

हॉकी, बैडमिन्टन, वास्केटवॉल, कबड्डी, जिमनास्टिक, शतरंज, कैरम आदि गेम उपलब्ध हैं। जिनके नियमित अभ्यास के लिए विशाल खेल का मैदान, आवश्यक उपकरण व अन्य सुविधायें भी उपलब्ध हैं। खेल समिति द्वारा सभी खेल व विभिन्न प्रतियोगिताऐं सुचारू रूप से संचालित की जाती हैं। योग्य खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जाते हैं। वेट–लिफ्टिंग व पावर लिफिटंग में हमारे महाविद्यालय की टीम विश्वविद्यालय स्तर पर कई वर्षो से प्रथम व द्वित्तीय स्थान प्राप्त करती रही है।

एक्टीविटी क्लब

एक्टीविटी क्लब के अर्न्तगत रोवर्स–रेंजर्स, राष्ट्रीय सेवा योजना व एन. सी.सी. की टीमें गठित हैं। रोवर्स–रेंजर्स की टीम एक दशक से विश्वविद्यालय तथा प्रदेश स्तर पर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करती रही है। रोवर्स–रेंजर्स द्वारा भाग लेने वाले छात्र–छात्राओं को अतिरिक्त अंक प्रदान किये जाते हैं जो पोस्ट–ग्रेजुएट अन्य कक्षाओं में प्रवेश के लिए सरलता प्रदान करते हैं।

एन. एस. एस. के शिविरों मे विद्यार्थियों ने कई गाँवों मे श्रमदान करके रास्तों को समतल किया निरक्षरों को शिक्षा प्रदान की तथा विविध क्षेत्रों में ज्ञान का विस्तार किया।

एन. सी. सी. व एन. एस. एस. से प्राप्त अतिरिक्त अंक से पोस्ट ग्रेजुएट व अन्य कक्षाओं में प्रवेश सरल हो जाता है। एन. सी. सी. प्रथम वर्ष से लागू की जाती है। एक्टिविटी क्लब द्वारा वर्षभर G-20 सड़क सुरक्षा एवं आजादी के अमृत महोत्सव रैली, पोस्टर प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, फिल्म प्रसारण आदि किए गये।

वाहन स्टैण्ड

महाविद्यालय में प्रवेश द्वार के निकट वाहन स्टैण्ड है। वाहन स्टैण्ड पर छात्र–छात्राओं, स्टाफ तथा अभिभावकों आदि के वाहन रखने हेतु अलग–अलग स्थान नियत है

वाहन स्टैण्ड का अनुशासन तथा व्यवस्था का नियन्त्रण वाहन स्टैण्ड प्रभारी तथा अनुशासन समिति के सदस्यों द्वारा प्राचार्य के स्वयं द्वारा किया जाता है।

NEP

NEP के अन्तर्गत विभिन्न समितियों के निरन्तर कार्य प्रगति पर है।

यूथ–20 के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं ने उच्च मुकाम प्राप्त किये हैं। महाविद्यालय में होने वाले इस्कान द्वारा मेरा भारत महान, पर छात्रा शीतल बंसल ने द्वित्तीय पुरस्कार में 10000/– रू. तथा सन्दली शर्मा **B.Sc. Ist** सेमिस्टर ने सांत्वना पुरस्कार में 500 रू. प्राप्त किए।

महाविद्यालय में कई प्राध्यापक, इसी महाविद्यालय से ग्रेजुएट व पी–एच.डी. किए हुए है।

प्रगति पद पर आरूढ़ छात्र–छात्राओं के पद चिन्ह

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। महाविद्यालय का परीक्षाफल निरन्तर गुणात्मकता की ओर अग्रसर है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय का परीक्षाफल 97 प्रतिशत रहता है। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय परीक्षा 2020–21 में महाविद्यालय स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं का विवरण –

छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	प्राप्तांक	प्राप्त गोल्ड मेडल (स्मृति में)
1. आलोक शर्मा	श्री राकेश कुमार शर्मा	एम.एस.सी. गणित	694/1200	स्व. श्री विमल कमार जैन
2. दीपाली	श्री विश्वनाथ	एम.एस.सी. रसायन विज्ञान	1064/1200	स्व. सेठ श्री छदामी लाल जैन
3. शिवानी यादव	श्री रमेश चन्द्र यादव	बी.एस.सी. गणित	1455/1800	स्व. कु. अंकिता जिन्दल
4. आदित्य प्रताप सिंह	श्री सतीश चन्द्र	बी.एस.सी. जीव विज्ञान	1370/1800	स्व. श्री हजारी लाल जैन
5. प्रियान्सु सोनी	श्री सन्तोष सोनी	बी. कॉम.	1314/1800	स्व. चौ. मक्खन सिंह यादव

बी. कॉम. **3rd Year** की छात्रा काजल शर्मा ने अर्न्तयुनिवर्सिटी, तायक्वांडो चैम्पियनशिप में 08 जनवरी 2023 से 12 जनवरी 2023 तक प्रतिभाग किया।

उत्तम अनुशासन एवं दिशा निर्देश

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर,इंचार्ज, वाणिज्य विभाग
चीफ प्रोक्टर (सी.एल.जैन कॉलेज, फिरोजाबाद)

शिक्षा का कार्य मनुष्य की पाशविक वृत्तियों पर नियन्त्रण कर उसका आध्यात्मिक विकास करना होता है। इसके लिए विद्यालयों में उच्च सामाजिक वातावरण प्रस्तुत करना आवश्यक होता है और इस हेतु वहाँ के लिए आचरण–संहिता एवं नियमावली तैयार करना भी आवश्यक होता है। आदर्शवादी बच्चों से यह आशा करते हैं कि वे विद्यालयीय नियमों का पालन करें और विद्यालय की व्यवस्थानुसार ही कार्य करें। इसे ही वे अनुशासन कहते हैं। अत: विद्यालयीय नियमों का पालन करने अर्थात् अनुशासन में रहने से अनेक लाभ है और इसका विविध दृष्टिकोण से महत्व है। अनुशासन के महत्व को हम निम्नलिखित रूप में समझ सकते हैं–

1. अनुशासन में रहने से शिक्षा की प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती हैं।
2. विद्यालयों में हर काम समय से होता है और इससे समय और शक्ति का सदुपयोग होता है। अनुशासन के अभाव में शक्ति का ह्रास होता है, अत: अनुशासन, शक्ति की प्राप्ति और उसका सदुपयोग करना अधिक महत्वपूर्ण है।
3. बच्चों में सामाजिक आचरण करने की आदत पड़ती है और उन्हें पाशविक व्यवहार करने का अवसर नहीं मिलता है। अत: सामाजिक दृष्टि से अनुशासन का विशेष महत्व है।
4. अनुशासन मनुष्य को अपने उत्तरदायित्वों को निभाने की प्रेरणा देता है और कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है। विद्यालयों में अनुशासन का पालन करने वाले व्यक्तियों में अनेक गुणों का विकास होता है। इसलिए व्यक्तिगत दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अनुशासन व्यक्ति में सच्चरित्रता लाता है।
5. अनुशासन का पालन करने में बच्चों को अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना होता है और सामाजिक आचरण कर पालन करना होता है। इस प्रकार वे इन्द्रिय निग्रह और आत्मानुभूति की क्रिया में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।
6. विद्यालयों में अनुशासन का पालन करने से हम बच्चों को वह सब सिखाने में सफल होते हैं जो हम उन्हें सिखाना चाहते हैं।
7. विद्यालयों में अनुशासन का पालन करने से अराजकता पर नियन्त्रण हो जाता है। अनुशासन के अभाव में विद्यालय का कार्य सम्भव नहीं है बल्कि इससे अराजकता को बढ़ावा मिलता है।

विद्यालय में अनुशासन को स्थापित करने की विधि:

विद्यालय में अनुशासन स्थापना विधि : अनुशासन का व्यक्तिगत एवं सामाजिक – दोनों ही दृष्टियों से बहुत महत्व है। इससे यह प्रश्न उठता है कि वे कौन से सिद्धान्त है जिनके आधार पर विद्यालय में उत्तम अनुशासन स्थापति किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में किसी निश्चित सिद्धान्त का निर्धारण नहीं किया जा सकता है, क्योंकि एक विद्यालय की परिस्थितियाँ दूसरे विद्यालय से भिन्न होती है। सुझाव के रूप में कुछ बातों का विवेचन प्रस्तुत है,

1. अनुशासन का आधार प्रेम, विश्वास तथा सद्भावना हो, क्योंकि भय अथवा संशय पर आधारित अनुशासन क्षणिक होता है। सच्चे अनुशासन की स्थापना के लिए विद्यालय अधिकारियों, प्रधानाध्यापक, शिक्षक वर्ग आदि

तथा विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक प्रेम होना चाहिए। प्रेम विश्वास को उत्पन्न करता है तथा उत्तम अनुशासन की नींव को दृढ़ बनाता है। यदि हम अपने छात्र–छात्राओं को इस प्रकार का अनुशासन सिखायें कि वे अपने गुरुजनों एवं उनके द्वारा बनाये गये नियमों को आदर की दृष्टि से इसलिए न देखें कि वे उनसे डरते हैं या उन नियमों के उल्लंघन करने पर उनको दण्ड मिलेगा, बल्कि इसलिए देखें कि उनको उनसे प्रेम है तो निश्चय ही हमें पारस्परिक प्रेम को इस अनुशासन का आधार बनाना होगा।

2. उत्तम अनुशासन सहयोग पर आधारित होना चाहिए। प्राचार्य एवं प्राध्यापकों एवं अभिभावकों के बीच सहयोग नहीं होगा तो उत्तम अनुशासन ही स्थापना करना अत्यन्त कठिन होगा। इसके लिए हमें सबके बीच मधुर सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक है।

छात्र–छात्राओं के बीच सहयोग होना परमावश्यक है। यदि इनके बीच सहयोग नहीं होगा तो उत्तम अनुशासन ही स्थापना करना अत्यन्त कठिन होगा। इसके लिए हमें सबके बीच मधुर सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक है।

3. अनुशासन को स्थापित करने के लिए दण्ड का प्रयोग न किया जाय। यदि अपनी दुष्प्रवृत्तियों को कोई किसी प्रकार से नहीं छोड़ता है तभी इसके प्रयोग की आवश्यकता का अनुभव किया जाना चाहिए। यदि दण्ड का बार–बार प्रयोग किया गया तो इससे बालकों के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की ग्रन्थियाँ (Complexes) बनने की सम्भावना रहेगी, जिसके परिणामस्वरूप उनका व्यक्तित्व असन्तुलित हो जायेगा। अत: जहाँ तक सम्भव हो, दण्ड का प्रयोग न किया जाए।

4. विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को सुन्दर एवं सामंजस्यपूर्ण बनाया जाए। इसका दायित्व केवल शिक्षकों एवं अन्य अधिकारियों को ही अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए, वरन् इस प्रकार के वातावरण के निर्माण के लिए छात्रों अभिभावकों तथा सम्पूर्ण समाज को उत्तरदायित्व ग्रहण करना पड़ेगा।

5. विद्यालय में छात्रों एवं अध्यापकों को अपने–अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने हेतु पर्याप्त स्वतन्त्रता एवं सुविधाएं प्रदान की जाएं।

6. विद्यालय में विभिन्न रचनात्मक कार्यों को स्थान दिया जाए, जिससे बालकों की उनकी रुचियों के अनुसार विभिन्न कार्यों के करने से मानसिक व संवेगात्मक सन्तोष मिले। इससे अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न होने की सम्भावना न रहेगी।

7. अभिभावकों को पारिवारिक जीवन को सुन्दर व सुखमय बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि बालक का अधिकांश समय अपने घर पर ही व्यतीत होता है। यदि वहाँ का जीवन अनुपयुक्त एवं दूषित है तो विद्यालय के सद्प्रयासों के असफल होने की सम्भावना रहेगी। अत: विभिन्न साधनों द्वारा अभिभावकों को अपने पारिवारिक जीवन को उपयुक्त एवं सामंजस्यपूर्ण बनाने के लिए प्रेरणा दी जाए।

8. विद्यार्थियों को अनुशासन के महत्व के विषय अवगत कराया जाये। इसके लिए उपदेश देना ही उचित नहीं है वरन् विभिन्न महान पुरुषों के उदाहरणों से इसके विषय में ज्ञान दिया जाय तथा स्वयं प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक वर्ग उनके समक्ष अपना उदाहरण प्रस्तुत करें।

9. उत्तम अनुशासन की नींव विद्यालय के सम्पूर्ण कार्यक्रम में निहित है। यदि विद्यालय में उत्तम अनुशासन स्थापित करना है तो प्रधानाध्यापक का परम कर्तव्य है कि विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को उपयुक्त एवं सामंजस्यपूर्ण बनाए।

सामान्य अनुशासन के नियम और निर्देश :

महाविद्यालय परिसर में स्वस्थ शान्त विकसित वातावरण के लिए नैतिक अनुशासन बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसमें छात्रों तथा अभिभावकों की सहायता अत्यन्त आवश्यक है। अनुशासन के मामले प्राचार्य द्वारा गठित अनुशासन समिति के पास भेजे जायेंगे। महाविद्यालय के नियमों का अतिक्रमण तथा अनैतिक कार्य वर्णित है। इस सत्र में संतोषजनक आचरण के विपरीत पाये जाने पर आगामी सत्र में छात्र/छात्रा का प्रवेश नहीं किया जा सकेगा। यदि कोई छात्र दुर्व्यवहार या अवज्ञा के लिए दोषी पाया जायेगा तो अनुशासन समिति की सिफारिश पर प्राचार्य अपराध की प्रकृति तथा गुरुता के अनुरूप निम्नलिखित प्रकार के दण्ड दे सकते हैं:-

क. चेतावनी
ख. अर्थदंड
ग. वित्तीय तथा अन्य सुविधाओं से वंचित किया जाना।
घ. निलंबन (सस्पेंशन)।
ङ. निष्कासन (एक्सपल्शन)।
च. चरित्र प्रमाण पत्र का निरस्त्रीकरण तथ चरित्र प्रमाण पत्र न दिया जाना।
छ. निस्तारण (रेस्टीकेशन)।

छात्रों को अनुशासन के निम्नलिखित सामान्य नियम पर विशेष ध्यान देना चाहिए –

1. छात्रों को उन सभी कार्यकलापों से दूर रहना चाहिए जो उनके या महाविद्यालय के लिए अवांछनीय है।
2. नियमित कक्षाओं तथा आयोजनों में समय से उपस्थित होना चाहिए।
3. महाविद्यालय सम्पत्ति की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
4. महाविद्यालय समय में सभी छात्र/छात्रा अपना परिचय पत्र साथ रखें।
5. घंटा बजाने से पूर्व छात्रों को कक्षाओं के सामने नहीं खड़ा होना चाहिए।
6. महाविद्यालय परिसर तथा बरामदों में अनावश्यक चहलकदमी नहीं करनी चाहिए।
7. महाविद्यालय परिसर में धूमपान व मादक द्रव्य का सेवन करके आना निषिद्ध है।
8. कार्यालय, पुस्तकालय और बरामदे में अनावश्यक भीड़ न लगावें।
9. महाविद्यालय भवन तथा उसकी दीवारों पर कृपया कुछ न लिखे और न उसे गन्दा करे क्योंकि यह अनुशासनहीनता की श्रेणी में आता है।
10. महाविद्यालय में निर्धारित पोशाक में ही प्रवेश करें।
11. अपने छोटी-बड़ी समस्याएं परस्पर मिलजुल कर समझाये बाहरी तत्वों का समावेश अवांछनीय तथा अक्षम्य है।

विशेष – छात्रों का व्यवहार अपने अध्यापकों, सहयोगियों एवं अन्य नागरिकों के प्रति विनम्र एवं शिष्ट होना चाहिए। उन्हें अपने सभी कार्यों में एक भद्रता का व्यवहार करना चाहिए।

महाविद्यालय अनुशासन अधिकारी (चीफ प्रॉक्टर)

रोवर्स – रेंजर्स के वर्षवार कार्यक्रम

C.L. Jain College, Firozabad
Rovers & Rangers

पोस्ट ग्रजुएट विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया

Y 20 Summit program

रोवर्स–रेंजर्स, N.C.C. & N.S.S. द्वारा सड़क सुरक्षा पर रैली

सडक सुरक्षा पर पोस्टर प्रतीक

N.E.P. पर ओरिएन्टेशन

मतदाता जागरूकता पर रंगोली प्रतियोगिता

राष्ट्रीय खेल दिवस पर संगोष्ठी

अमृत महोत्सव पर रैली

शपथ ग्रहण राष्ट्रीय एकता

शिक्षक दिवस पर रिटायर्ड प्रोफेसरों का सम्मान

N.C.C. & Parabasic Camp

रोवर्स – रेंजर्स

डॉ. श्रीमती रश्मि जिन्दल
(रेंजर्स प्रभारी)
राहुल कुमार
रोवर्स प्रभारी

रोवर्स रेन्जर्स की शुरुआत सन् 1907 ई. में मेजर जनरल ऑफ आर्मी लॉर्ड बैडेन पॉवेल ने 20 लड़कों को साथ लेकर ब्रिटेन के ब्राउन सी आइलैंड में एक प्रायोगिक शिविर की शुरुआत की। भारत में सन् 1909 में स्काउटिंग की शुरूआत हुई उस समय केवल अंग्रेज और ऐग्लो इंडियन बालक ही स्काउट में भर्ती हो सकते थे। भारतीय बच्चों के लिए स्काउटिंग के दरवाजे बन्द थे। तब भारत के बड़े नेताओं पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. हृदय नाथ कुजरू, श्री राम वाजपेयी और डॉ. ऐनी बेसेंट, आदि के अथक प्रयासों से सन् 1913 ई. में प्रदेश के शाँहजहापुर जिले में श्री राम वाजपेयी ने इसकी स्थापना की। आजादी मिलने के बाद सन् 1950 में इसका नाम भारत स्काउट और गाइड रखा गया। स्काउट का अर्थ है- युवा लोगों के लिए स्वैच्छिक गैर-कानूनी राजनैतिक आन्दोलन। जो मूल, नस्ल तथा पंथ के भेद के बिना सभी के लिए खुला है। इसका उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है।

इसका एक मूल मंत्र है- 'समाज सेवा' स्काउट वह जगह है जहाँ युवा नऐ दोस्त बनाते हैं और नये कौशल सीखते हैं। इसमें हमें स्काउट से सम्बन्धित प्रतिज्ञा, नियम, प्रार्थना और झण्डा मान का ज्ञान प्रदान किया जाता है। तो फिर एक स्थान चुना जाता है जहाँ हमें दीक्षा दी जाती है। दीक्षा स्काउट मास्टर या गाइड कैप्टन ही देते हैं। स्काउट मास्टर या गाइड कैप्टन हमें पाठ्यक्रम देते हैं जो 6 माह का होता है, जिसे हमें पूर्ण रूप से तैयार करके अपने स्काउट मास्टर या गाइड कैप्टन को सुनाकर उन्हें संतुष्ट करना होता है। प्रथम सोपान की तैयारी पूर्ण करने के बाद फिर द्वितीय सोपान के लिए हमारे स्काउट मास्टर जिला संस्था से आग्रह कर द्वितीय सोपान की परीक्षा के लिए निवेदन करते हैं। जिला संस्था अपने शिक्षक-परीक्षक भेजती है और 6 मास तक कार्य कराती है। द्वितीय सोपान की हम तैयारी करेंगे, याद करेंगे, प्रैक्टिस कर उसे पूर्ण कर अपने स्काउट मास्टर जिला प्रशासन को अपने कार्य व्यवहार से सन्तुष्ट करेंगे। तब फिर से हमारे स्काउट मास्टर जिला प्रशासन से पुन: आग्रह करेंगे कि कृपया उनके तीसरे सोपान की परीक्षा कराने का कष्ट करें। तीसरे सोपान का कार्य प्रादेशिक संस्था उत्तर प्रदेश स्काउट गाइड गोल्ड मार्केट महानगर लखनऊ के माध्यम से कराया जाता है। वहाँ पर पत्र भेज कर तीसरे सोपान का कार्यक्रम किया जाता है। वह आकर हमारी परीक्षा लेगा और बुद्धिमता को परखेगा और फिर आगे की ओर मांग करेगा। 9 माह की तीसरी सोपान प्राप्त करने के बाद तैयार कराया जाता है। पुन: स्काउट मास्टर और गाइड कैप्टन की देख-रेख में राज्य पुरष्कार का पाठ्यक्रम किया जाता है। जिसे हम बड़ी कठिन परिश्रम के साथ पढ़ेंगे, प्रैक्टिस करेंगे और सच्चाई के साथ 9 माह तक कार्य करेंगे। और फिर अपने कार्य व्यवहार से अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अपने स्काउट मास्टर एवं गाइड कैप्टन और जिला संस्था को संतुष्ट करेंगे। फिर हम एक साल बाद राष्ट्रपति पुरष्कार के लिए आवेदन कर सकते हैं। लेकिन इसके बीच राज्य पुरस्कार के पाठ्यक्रम को हमें कंठस्थ रखना होगा, और इसमें जितने दक्षता पदक है उन सभी को प्राप्त करना होगा। तब हम को दक्षता प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा। दक्षता पदक प्राप्त करने के बाद हम राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए हम आवेदन करेंगे। राष्ट्रपति के आवेदन करने के पश्चात् प्रादेशिक कार्यालय राष्ट्रपति प्रधान केन्द्र नई दिल्ली को उस प्रावधान को भेजता है। जिसे हमारी परीक्षा लेनी होती है। परीक्षा होने के बाद हमारा प्री-टेस्ट होगा। फिर जब इसमें उत्तीर्ण होते हैं, तो इसके बाद हमारा फाइनल टेस्ट होगा। हमें उसमें उत्तीर्ण होना होता है। तब जाकर के हमें राष्ट्रपति पुरष्कार प्राप्त होता है। स्काउट गाइड में जब कोई भावात्मक रूप से परिपूर्ण हो जाता है तो वह जहाँ जाता है। वहाँ अपनी दक्षता प्रस्तुत करता है। तो देश, समाज और विभाग उसकी सराहना करते है। स्काउट गाइड को ही ग्रेजुएट स्तर में रोवर्स रेंजर कहते हैं। जो स्काउट गाइड के सीनियर होते हैं।

जय हिन्द.....! जय स्काउट.....!

सी.एल जैन महाविद्यालय में रोवर्स–रेंजर्स के 24–24 छात्र–छात्राओं के दल होते हैं जो विभिन्न वर्षों में विश्वविद्यालयी स्तर पर विजयी होते रहे हैं और ट्रॉफी प्राप्त करते रहे हैं। इन छात्र–छात्राओं ने महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रम जैसे सड़क सुरक्षा, आजादी अमृत महोत्सव, G-20, Y-20 प्रोग्राम, ग्राउण्ड की कचरा मुक्त आदि में निरन्तर भाग लिया है। नेहरू युवा केन्द्र पर यूथ 20 पर होने वाले भाषण प्रतियोगिता में रेंजर नन्दनी गुप्ता व मुस्कान गुप्ता तथा रोवर अमन वर्मा व ऋषभ श्रोत्रिय ने भाग लिया। अमन वर्मा व ऋषभ श्रोत्रिय ने आई.आई.टी. कानपुर व किंग जॉर्ज मेडीकल कॉलेज लखनऊ में प्रतिभाग किया जिसमें उन्हें पुरस्कार में 5000/–रू. का चेक प्राप्त हुआ।

अमृत महोत्सव, सड़क सुरक्षा, G-20, Y-20 आदि में रोवर्स–रेंजर्स ने रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, स्कूल गान, भाषण प्रतियोगिता, गोला फेंक प्रतियोगिता, ऊँची कूद प्रतियोगिता आदि में भाग लिया।

लघु निर्माण एवं भवन अनुरक्षण समिति व जल विभाग की वार्षिक रिपोर्ट

सम्मानीय प्राचार्या जी के कुशल मार्गदर्शन में इस वर्ष (2022–23) में महाविद्यालय में प्राचार्य ऑफिस का नवीनीकरण सभी विभागों की, तथा महाविद्यालय के अग्रिम भाग की रंगाई पुताई की गई। महिला शिक्षिकाओं व छात्राओं के लिए आधुनिक प्रसाधन कक्षों का निर्माण किया गया।

छात्र–छात्राओं व स्टाफ महाविद्यालय में पीने योग्य पानी के लिए गंगाजल व आर.ओ का प्रबन्ध किया गया। फील्ड में छात्र–छात्राओं के बैठने के लिए सीटें लगवाई गई। इसके अतिरिक्त छात्र हित में अन्य कार्य हुए।

National Service Scheme Report

Mrs. Pooja Tyagi

Programme Officer

National Service Scheme

National Service Scheme (NSS) is a central Sector Scheme of Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports. It provides opportunities to the students youth of schools, Technical Institutions, Graduate & Post Graduate at Colleges and University level of India to take part in various government led community service activities and programmes.

National Services Scheme was launched during 1969, the birth centenary year of Mahatma Gandhi in 37 universities involving 40,000 students. NSS is an extension dimension to the higher education system to orient the student youth to community service while they are studying in educational institutions The motto of National Service Scheme is "NOT ME BUT YOU."

The aims and objectives of NSS involve to understand the community in which they work, to identify the needs and problems of the community and involve them in problem solving process to develop among themselves a sense of social and civic responsibility, to gain skills in mobilising community participation, to acquine leadership qualities and to practice national integration and social harmony etc.

students in various universities, colleges and institutions of higher learning volunteer to take part in various community service programmes.

There is one unit of NSS in C.L. Jain College Firozabad. This is a girls unit. NSS uses the opportunities to not only develop and groom the students of the college, but also pay back to the society round the year there are a number of activities that has been done by NSS unit of the college. These activities involve four one day camp and 7-days special camp. Besides these, volunteers have activity participated in sadak Suraksha Ahiyan to spread awareness about the road safety suraksha, poster competetion, rangoli competition etc. Also an awerness programme on G-20 has been organized. Plantation programme, group building activities, litteraly programme and clintiness programme among the programmes that has been carried out throughout the year by the volunteers.

एन. सी. सी.

डॉ. मुकेश चौधरी
एन.सी.सी. प्रभारी

सीएल जैन महाविद्यालय में 6 यूपी एनसीसी बटालियन, फिरोजाबाद की 4 / 6 कंपनी का 01 प्लाटून है। इस प्लाटून में 55 कैडेट की वैकेंसी निर्धारित है। वर्तमान शैक्षिक सत्र 2022–2023 में महाविद्यालय की प्लाटून का बहुत ही अच्छा प्रदर्शन रहा। महाविद्यालय के कैडेट्स ने कई प्रकार के सामाजिक क्रियाकलापों जैसे स्वच्छता अभियान, यातायात जागरूकता अभियान आदि में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। एन.सी.सी. में कई शिविरों में भी महाविद्यालय से कई कैडेट्स ने प्रतिभाग किया और प्रशंसनीय प्रदर्शन किया। संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

1. **ट्रैकिंग कैंप–** यह एक केंद्रीय शिविर है, जो डायरेक्टर जनरल एनसीसी महानिदेशालय द्वारा आयोजित किया जाता है। इस वर्ष यह गुजरात में नर्मदा नदी के किनारे आयोजित किया गया। इसी वजह से इसे नर्मदा ट्रैक भी कहते हैं। वहां पर कई सारी प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के 2 छात्र कैडेटों ने प्रतिभाग किया। स्टेचू ऑफ लिबर्टी पर भी उनको ले जाया गया। यह शिविर 15 दिन का था।

2. कंबाइंड एनुअल ट्रेनिंग कैंप– यह कैंप सितंबर महीने में आयोजित किया गया था। इसमें लगभग 14 कैडेट्स ने महाविद्यालय की प्लाटून की तरफ से प्रतिभाग किया। वहां पर संपन्न हुई प्रतियोगिताओं में कैडेट्स ने भाग लिया और कई मेडल्स भी जीते।

3. पैरा बेसिक कैंप – यह एक केंद्रीय शिविर है, जो डायरेक्टर जनरल एन.सी.सी. महानिदेशालय द्वारा आयोजित किया जाता है। यह कैंप 2022 में सितंबर महीने में आगरा में आयोजित किया गया। इस कैंप में पूरे भारत से 40 कैडिट को प्रतिभाग करने का मौका मिलता है। इस कैंप में सी.एल. जैन महाविद्यालय से सीनियर अंडर ऑफिसर मदन बघेल ने भाग लिया। मदन बघेल ने दो पैरा जंप की। जोकि बहुत साहसिक कृत्य है। वहां पर पैरा के विभिन्न अधिकारियों के साथ 15 दिन पैरा जम्प को सीखने में बिताए।

4. आर्मी अटैचमेंट कैंप– यह एक केंद्रीय शिविर है, जो डायरेक्टर जनरल एन.सी.सी. महानिदेशालय द्वारा आयोजित किया जाता है। यह कैंप 2022 के अंतिम माह दिसंबर में बरेली कैंटोनमेंट में आयोजित किया गया था । इसमें सी.एल. जैन महाविद्यालय से 2 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया। इस कैंप में वह बरेली जाट रेजीमेंट में भी गए तथा वहां की व्यवस्थाएं और बारीकियां समझी। वहां पर सभी प्रकार के हथियार, जो कि आर्मी प्रयोग करती है, दिखाई गये तथा परेड भी हुई। दोनों कैडेट्स वहां पर भी सीएल जैन महाविद्यालय का नाम रोशन करके आए।

6 यू.पी एन.सी.सी. बटालियन में होने वाली 'बी' एवं 'सी' सर्टिफिकेट की परीक्षा में सीएल जैन महाविद्यालय हमेशा से अव्बल रहा है और बटालियन एवं ग्रुप लेवल पर महाविद्यालय का 'बी' एवं 'सी' सर्टिफिकेट परीक्षा में पास प्रतिशत हमेशा सबसे ज्यादा रहा है। इस वर्ष भी भी प्रमाण पत्र परीक्षा में सबसे ज्यादा Ist ग्रेड में पास होने वाले कैडेट्स सी.एल. जैन महाविद्यालय के ही है।

A Nuclear Reactor

Dr. Ravindra Kumar
Assit. Prof. Department of Physics
C.L. Jain College, Firozabad

A nuclear power plant (NPP) is a thermal power station in which the heat source is a nuclear reactor. The main purpose of a reactor is to contain and control the energy released. Uranium is used as the nuclear fuel in the reactors. The heat produced by nuclear nuclear reactions is used to convert the water into steam, which is further converted into carbon-free electricity with the help of turbines.

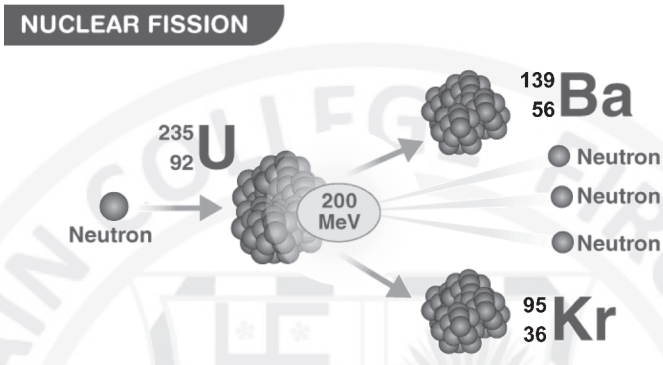

Components of a Nuclear Reactor

The Core: It contains all the fuel and generates the heat required for energy production.

The Coolant: It passes through the core, absorbingthe heat and transferring into turbines.

The Turbine: Transfers energy into the mechanical form.

The Cooling Tower: It eliminates the excess heat that is not converted or transferred.

Neutron Moderator: Moderators are used for reducing the speed of fast neutrons released from the fission reaction and making them capable of sustaining a nuclear chain reaction.

Usually, water, solid graphite and heavy water are used as a moderator in nuclear reactors. Commonly used moderators include regular (Light) water (in 74.8% of the world reactors), solid graphite (20% of reactors), heavy water (5% of reactors).

The Containment: The enveloping structure that seperate the nuclear reactor from the surrounding environment.

Neutron Poison: A neutron poison (also called a neutron absorber or a nuclear poison) is a substance with a large neutron absorption cross-section

. Nuclear Fission, they can be classified into two categories based on the energy of neutrons that sustain the fission chain reaction.

Types of Nuclear Reactor

Thermal Reactors: Thermal reactors (the most common type of nuclear reactor)use slowed or thermal neutrons to keep up the fission of their fuel. Boiling water reactors (BWR) , Pressurized water reactors (PWR), and Heavy water reactors (HWR) operate with thermal neutrons.

Fast Neutron Reactors: Fast Neutron reactors use fast neutrons to cause fission in their fuel. These are very rare due to complexity and costs. They are more difficult to build and more expensive to operate. Fast reactors have the potential to produce less radioactive waste because all fissile is fissionable with fast neutrons { fuel is highly enriched in fissile material}.

भारत में वाणिज्य शिक्षण इतिहास का विकास

डॉ. के. के. सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

इतिहास के पन्ने पलटें तो भारत मे वाणिज्य में उच्च शिक्षा लगभग 102 वर्ष पुरानी है। औपचारिक वाणिज्य शिक्षा भारत में पहली बार 1886 में मद्रास में वाणिज्यिक स्कूल के रूप में पचैयप्पा के दान के ट्रस्टियों द्वारा शुरू की गई थी। इस प्रकार भारत में औपचारिक वाणिज्य शिक्षा लगभग 118 वर्ष पुरानी है। कॉलेजिएट स्तर पर प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता ने 1903 में वाणिज्य कक्षाऐं शुरू कीं।

उस समय ते इस दिल्ली में भी पेश किया गया था।1912 में बंबई में एक और व्यवसायिक संस्थान शुरू किया गया था। स्नातक स्तर पर वाणिज्य शिक्षा 1913 में बंबई के सिडेनहैम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड इकोनोमिक्स में शुरू की गई थी।

1920 के दशक (1921–22) में प्रथम वित्तीय आयोग की स्थापना की गई थी और इस आयोग ने कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें की थीं। इन सिफारिशों के आलोक में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में विशेष रूप से लोहा और इस्पात उद्योग, चीनी उद्योग के क्षेत्र में कुछ प्रमुख सुधार दिखाई दे रहे थे। चाय उद्योग, कपास उद्योग और जूट उद्योग में भी सुधार है।

1920–40 के दौरान व्यावसायिक शिक्षक संस्थानो का बहुत तेजी से विकास देखा गया। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स की स्थापना 1926 में हुई थी, इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेट्स ऑफ इंडिया की स्थापना 1934 में हुई थी। बाद में 1944 में इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स एण्ड कॉस्ट अकाउंटेट्स ऑफ इंडिया की स्थापना हुई। 1955 में, फेडरेशन ऑफ इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई थी।

डॉ. खान के अनुसार ''वाणिज्य शिक्षा को व्यवसाय की मात्रा में वृद्धि के साथ प्रोत्साहन मिला। टाइपिस्ट, आशुलिपिक, पुस्तक–रखवाले और लिपिक श्रमिकों की लगातार बढ़ती मांग ने वाणिज्य पाठ्यक्रम को माध्यमिक विद्यालय कार्यक्रम के लिए एक बहुत ही वांछनीय योग बना दिया। देश के नियोजित आर्थिक विकास के साथ वाणिज्य और उद्योग में जबरदस्त उछाल ने व्यावसायिक कैरियर के लिए आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं पर कब्जा कर लिया।

भारतीय स्कूलों में शिक्षा शॉर्टहैंड और टाइपिंग के अलावा कुछ और विषय जो वाणिज्य में पढ़ाने के लिए शामिल किये गए हैं, वे इस प्रकार हैं:

(I) बुक–कीपिंग एण्ड अकाउंटेंसी (II) वाणिज्यिक गणित (III) सांप्रदायिक अभ्यास (IV) वाणिज्यिक अंग्रेजी/हिंदी (V) वाणिज्यिक कानून (VI) औद्योगिक कानून (VII) कराधान (VIII) आयकर (IX) बिक्री कौशल (X) अनुप्रयुक्त अर्थशास्त्र (XI) जनसंपर्क और (XII) विज्ञापन।

1819 – दुनिया का पहला बिजनेस स्कूल , ESCP यूरोप पेरिस, फ्रांस में स्थापित किया गया था। यह दुनिया का सबसे पुराना बिजनेस स्कूल है और अब इसके परिसर पेरिस, लंदन, बर्लिन, मैड्रिड और टोरिनो में हैं।

1855 – इंस्टीट्यूट सुपीरियर डी कॉमर्स डी एनवर्स (राज्य द्वारा वित्त पोषित)और इंस्टीट्यूट सेंट–इग्रेस–इकोले स्पेशल डी कॉमर्स एण्ड डी इण्डस्ट्री (जेसुइट एजुकेशन) की स्थापना उसी वर्ष एंटवर्प, बेल्जियम, बेल्जियम शहर मे की गई थी। लगभग 150 वर्षों की व्यावसायिक शिक्षा और कैथोलिक और राज्य शिक्षा के बीच प्रतिद्वंद्विता के बाद दोनो संस्थानों के उत्तराधिकारियों का 2023 में एंटबर्प विश्वविद्यालय में विलय हो गया।

1857 – बुडापेस्ट बिजनेस स्कूल की स्थापना ऑस्ट्रियाई साम्राज्य में मध्य यूरोप के पहले बिजनेस

उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल प्रकोष्ठ वार्षिक रिपोर्ट

दीपक कुमार
(असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विभाग)
प्रभारी- AISHE समिति

भारत सरकार द्वारा जारी की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय की व्यवस्था के अनुसार।सत्र 2021-22 में प्रथम बार महाविद्यालय में सुचारू रूप से लागू की गई। इसे लागू करने में उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल प्रकोष्ठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रथम सत्र के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर तथा वाणिज्य संबंधित अनेक औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों को महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया तथा छात्र-छात्राओं को विशेष प्रयोगात्मक ज्ञान देने हेतु योग्य शिक्षकों एवं वक्ताओं को महाविद्यालय में समय-समय पर आमंत्रित किया गया।

वर्तमान सत्र 2022-23 में विश्वविद्यालय द्वारा जारी किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार छात्र-छात्राओं को कौशल विकास संबंधी विषय चुनाव के लिए अनेक नवीन विकल्प सृजित किए गए। परिणाम के दृष्टिकोण से महाविद्यालय ने विश्वविद्यालय में उच्च स्थान प्राप्त किया। अकादमिक पाठ्यक्रमों से अलग-समय पर महाविद्यालय में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया गया जिनमें उन्मुखीकरण कार्यक्रम, कार्यशालायें तथा विभिन्न दक्षता कार्यक्रम आदि प्रमुख रहे। वर्तमान सत्र तत्र में प्रथम बार स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं के लिए भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई जिससे छात्र-छात्राओं को विशेष अनुभव एवं अवसर प्राप्त हुए।

भविष्य में भी महाविद्यालय नवीन अवसरों के सृजन के साथ विकास के नए आयाम तलाश कर रहा है। भविष्य की संभावनाओं मे महाविद्यालय क्षेत्रीय संस्थानों तथा अन्य रोजगार-परक संस्थानो के साथ नए हस्ताक्षरित करने की ओर प्रयत्नशील है। सत्र 2022-23 हेतु वर्तमान में श्रीमती पूजा त्यागी, डॉ. हेमलता यादव, डॉ. एस.पी. सिंह तथा श्री शाहरूख समिति में सक्रिय सदस्य हैं तथा समिति संबंधित कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

वाणिज्य शिक्षा व भविष्य निर्माण

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

प्राचीन काल से ही व्यापार उद्योग व वाणिज्य का हमारे देश में प्रचलन रहा है प्रारम्भ में व्यापार को साहसिक कार्य माना जाता था वह समाज में उन्हें सम्मान मिलता था उस समय व्यापार केवल लेन-देन तक ही सीमित था जिससे व्यापार हेतु पूंजी अनवर सर्च हुआ करती थी व्यापार में संचालन में पूंजी पतियों का एकाधिकार कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वाणिज्य विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना भी वाणिज्य शिक्षण का एक प्राप्य या अनुदेशात्मक उद्देश्य है। सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होने से विषय में रुचि उत्पन्न होती है, लगन व प्रेरणा विकसित होती है, समस्याओं को समझने तथा उनका समाधान करने की योग्यता का विकास होता है।

किसी खास उद्यम के लिए लोगों को तैयार करना ही वाणिज्य शिक्षा का परम उद्देश्य है। जिस प्रकार से हमारे देश की जनसंख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए सबके लिए रोजगार उपलब्ध करा पाना सरकार के लिए लोहे के चने चबाने जैसा है। वोकेशनल शिक्षा किताबी पढ़ाई अर्थात् थ्योरी पर काम प्रैक्टिकल ज्ञान पर अधिक फोकस करता है। छात्र किसी खास विषय के तकनीक या प्रोद्योगिकी पर महारत हासिल करते हैं।

वर्तमान बदलते परिदृश्य में व्यापार की क्रियाओं का उद्भव और विकास हुआ, इससे इस क्षेत्र में रोजगार के नवीन अवसरों का उद्भव हुआ। इससे सामाजिक वातावरण को एक नई दिशा मिली है। जब हम वाणिज्य के क्षेत्र में रोजगार की बात करते हैं तो इसमें स्वरोजगार व सेवा क्षेत्र दोनों ही शामिल होते हैं। इसमें कम्प्यूटर, एकाउंटिंग, इनकम टैक्स सलाहकार, कर अधिकारी, कंपनी सचिव, चार्टर्ड अकाउंटेंट, विज्ञापन सलाहकार, बाजा प्रबंधक, कर्मचारी प्रबंधन, विपणन प्रबंधक आदि अनेक विकल्प मौजूद हैं।

वर्तमान समय विशेषज्ञों का युग है यदि किसी में वाणिज्य संबंधित विशेषता है तो वह अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकता है। वाणिज्य शिक्षा शिखरों के मध्य से निकलने वाला यह सूर्य है जिसकर अनंत किरणे है व इसकी किरण में प्रकाश पुंज समाहित है जो समाज को रोशन व ऊर्जा का संचार करने का कार्य करते हैं।

रैगिंग दण्डनीय अपराध है

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
प्रभारी/संयोजक एंटी रैगिंग समिति

शैक्षणिक संस्थाओं में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि प्राचार्य, शिक्षकों, कर्मचारियों तथा छात्र–छात्राओं के मध्य परस्पर सहयोग एवं समन्वय हो। साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं में अकादमिक गुणवत्ता में निरंतरता एवं अभिवृद्धि के लिए आवश्यक है कि अकादमिक शैक्षणिक संस्थाओं का पर्यावरण भय एवं तनाव मुक्त रहे किंतु शैक्षणिक संस्थाओं में सकारात्मक पर्यावरण बनाए रखने में कभी–कभी रैगिंग द्वारा अनावश्यक व्यवधान निर्मित कर दिया जाता है।

एक शिक्षण संस्थान के किसी अन्य छात्र के खिलाफ एक छात्र द्वारा किये गये किसी भी शारीरिक, मौखिक या मानसिक दुर्व्यवहार को रैगिंग कहते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सा छात्र इसे करता है या किस छात्र के साथ यह दुर्व्यवहार किया जाता है। (यह एक फ्रेशर/नवागत हो सकता है या एक वरिष्ठ भी हो सकता है।)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विनिमय "उच्च शिक्षण संस्थाओं में रैगिंग अपराध निषेध 2009" पैरा 03 के उपशीर्षक रैगिंग कैसी होती है। में कहा गया है– किसी छात्र को (नवीन प्रविष्ट या अन्यथा लक्षित करके रंग, प्रजाति, धर्म, जाति, जातिमूल, लिंग, लैंगिक, प्रवृत्ति, बाह्य स्वरूप, राष्ट्रीयता, क्षेत्रीय मूल, भाषा विशिष्टय, जन्म, निवास, स्थान या आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर शारीरिक एवं अथवा मानसिक प्रताड़ना (दबंगई एवं बहिष्करण) का कृत्य रैगिंग माना जाएगा।

संस्था में छात्र–छात्राओं के बीच रैगिंग कार्यों का न बढ़ावा मिले एवं जूनियर छात्र–छात्राओं में भी भय व्याप्त ना हो इसके लिए संस्था में रैगिंग रोकथाम हेतु Anti Ragging समिति गठित की जाती है। यदि रैगिंग का कोई प्रकरण पाया जाता है तो कठोर कार्यवाही होगी।

- रैगिंग दंडनीय अपराध है यदि कोई छात्र–छात्रा इसें संलिप्त पाए जाते हैं तो कठोर अनुशासनात्मक एवं दंडात्मक कार्यवाई होगी जिसमें–
- रैंगिग में लिप्त पाए जाने पर 5 वर्ष की कठोर कारावास अथवा रू. 5000/– जुर्माने रूप में दंडित किया जा सकता है।
- शिक्षण संस्था प्रमुख द्वारा अभियुक्त छात्र–छात्रा को निलंबित करने तथा शैक्षणिक संस्था परिसर से तथा छात्रावास प्रवेश से वर्जित किया जा सकता है।
- निष्कासित छात्रों को अन्य शैक्षणिक संस्था में राज्य के क्षेत्राधिकार के भीतर 3 वर्ष की अवधि तक प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

अत: हमारा महाविद्यालय छात्र–छात्राओं से यह अपेक्षा करता है कि कोई भी छात्र–छात्रा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से या अन्य किसी भी प्रकार से रैगिंग में भाग नहीं लेगा।

रैगिंग की गतिविधियों को पूर्णता: समाप्त करने के लिए हम सब एकजुट रहेंगे।

अपने लक्ष्य को पहचानें

डॉ. दीपिका चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग

सफल होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने लिए सफलता के अर्थ को समझें। हम यह समझें कि हमारे लिए सफलता क्या है। सफलता के मापदण्ड सभी के लिए समान नहीं हो सकते। निर्धन के लिए धन कमाना सफलता है तो रोगी के स्वास्थ्य प्राप्त करना ही उसकी सफलता है। इसी प्रकार बेरोजगार व्यक्ति के लिए मनचाहा रोजगार प्राप्त करना उसके लिए सफलता का पर्याय है। अत: सर्वप्रथम हम जिस लक्ष्य को सफलता के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं उसे पहचानना होगा। वास्तव में लक्ष्य का निर्धारण ही हमारे संघर्ष पथ का प्रथम सोपान है। मानव जीवन एक बाधा दौड़ के समान है, जहाँ व्यक्ति को परिस्थतियों से निरंतर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना होता है। धावक के लिए यदि लक्ष्य निर्धारित है तो बाधाओं को पार करते हुए भी उसमें लक्ष्य प्राप्ति का उत्साह बना रहता है। तीव्र गति से दौड़ना आपकी कुशलता हो सकती है पर यदि निश्चित लक्ष्य का ज्ञान नहीं है तो आपकी यह कुशलता आपके किसी काम की नहीं है।

अन्य व्यक्ति हमसे क्या चाहते हैं, इसकी अपेक्षा यह जानना हमारे लिए अधिक आवश्यक है कि हम स्वयं से क्या चाहते हैं। विचित्र बात यह है कि लोग यह तो जानते हैं कि अन्य लोग उनसे क्या अपेक्षा करते हैं पर यह जानने की कभी कोशिश नहीं करते उनकी संतुष्टि कहां निहित है। जब आप अपनी संतुष्टि के लिए कार्य करते हैं तो आपको आंतरिक और बाह्य दोनों ओर से पुरस्कार मिलते हैं, यदि आप केवल दुसरों की अपेक्षाओं के अनुरूप ही कार्य करेंगे, तो आपको आंतरिक पुरस्कार नहीं मिल सकेगा और यह कमी ही हीनता को जन्मदायक सिद्ध होगी। व्यक्ति की सफलता और उसकी आत्मिक संतुष्टि में समानुपातिक संबंध होता है।आप जितने अधिक स्वयं से सतुंष्ट होंगें उतना ही स्वयं को सफल भरा मानेंगें। इसलिए लक्ष्य निर्धारित करते समय आत्म संतुष्टि को सबसे प्राथमिक स्थान देना चाहिए क्योंकि इसके बिना आप सफलता का अनुभव कर ही नहीं सकते।

लक्ष्य निर्धारित करते समय लक्ष्य के प्रति हमारी सोच सफलता प्राप्ति का निर्णायक बिन्दु हो सकती है। जब तक निर्धारित लक्ष्य के विकल्प हमारे मन में उपस्थित रहेंगे सफलता संदिग्ध रहेगी। एक बार एक बिल्ली एक चूहे को पकड़ने को दौड़ रही थी। दोनो के ही लक्ष्य निर्धारित थे, बिल्ली के लिए चूहे को पकड़ना और चूहे के लिए बच निकलना। दोनों अपनी पूरी शक्ति से दौड़ रहे थे। कई बार तो ऐसा वक्त आया कि बिल्ली चूहे के एकदम करीब पहुंच गई पर चूहे ने जोर लगाया और अंतत: जाकर बिल में छिप गया। बिल्ली हार चुकी थी अत: निराश भाव से बिल के बाहर बैठ गई। बिल्ली ने चूहे से पूंछ लिया कि हम दोनों अपनी पूरी क्षमता से दौड़े फिर भी मैं हार गई और तुम जीते। मुझसे गलती कहां हुई चूहे ने सिर निकाल कर कहा साधारण सी बात है तुम अपने भोजन के लिए दौड़ रही थी और मैं अपने जीवन को बचाने के लिए दौड़ रहा था। तुम्हारे पास विकल्प था पर में तो विकल्पहीन था इसलिए मैं जीता और तुम हार गई। ठीक यही बात हमारे जीवन पर भी लागू होती है। यह जीवन चूहे बिल्ली की दौड़ की तरह है जब हम बिल्ली की तरह अपने लक्ष्य का पीछा करते हैं तो प्राय: हार जाते हैं। इसलिए उद्देश्य स्थिर करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि जिसके लिए हम चूहे की तरह दौड़ सकें।

अपने लक्ष्य निर्धारित करते समय हमें अपनी क्षमताओं को भी पहचानना होगा। यदि लक्ष्य हमारी क्षमताओं का अतिक्रमण करेगा तो सफलता की राह भी दुर्गम हो जाएगी। हमें अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन करना होगा।

अगर हम यह सोचते हैं कि कोई भी लक्ष्य निर्धारित करके हम चूहे की दौड़ लगा सकते हैं तो हम गलत हैं। क्षमताओं के मूल्यांकन का अर्थ है कि हम ठीक प्रकार से अपनी खूबियाँ और अपनी कमियों को समझें। जो व्यक्ति इंजेक्शन लगते नहीं देख सकता वह सफल सर्जन कैसे बनेगा। इसलिए अपने लिए ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें जो अपनी क्षमताओं के अनुकुल हो याद रखिए एक शिक्षक गणित के नियमों का जानकार हो सकता है वह अपने शिष्य को वह नियम अच्छी प्रकार समझा सकता है। पर जब दौड़ने की बारी आयेगी तो गणित के नियमों से अनभिज्ञ शिष्य उससे आगे निकल जायेगा। विचार और व्यवहार दो अलग-अलग वस्तुऐं हैं। लक्ष्य निर्धारण के समय हमें भली प्रकार से इसका विचार करना होगा।

मानव का जीवन संघर्षों और चुनौतियों से परिपूर्ण है यदि आपने सोच समझकर अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया है तो ये चुनौतियाँ भी आनन्ददायक बन जाता है। इसलिए सर्वप्रथम आप अपने लक्ष्य को विवेकपूर्ण सोच के साथ निर्धारित करें और फिर निर्विकल्प होकर उसके लिए दौड़ जाएं निश्चित रूप से सफलता आपकी प्रतीक्षा में खड़ी है।

अध्यापक का गुणगान

अनामिका तिवारी
बी.एस.सी. (तृतीय सेमेस्टर)

अध्यापक एक भगवान है,
जो करता विद्या दान है।
अध्यापक है एक कुम्हार,
जो मारता है लेकिन
अन्दर से देता है प्यार
अध्यापक एक दीपक है
जो खुद जलता है लेकिन
देता हमको प्रकाश है
यह एक दाता है
जो बाँटता है, विद्या का ज्ञान
हम सभी छात्रों की डोर आज
उसी के हाथ में है।
अध्यापक एक मल्लाह है।
जो करता अपनी नाव से
हमें भवसागर के पार है।
अध्यापक को कभी बुरा न बोले
क्योंकि उसी के कारण
बढ़ती हमारी शान है।
अध्यापक की सदा जय हो
क्योंकि
वही बढ़ाता हमारी शान है।

Foods That Fight Against Cancer

Dr. (Smt). Rashmi Jindal
Assistant Professor, Chemistry Department

Food is now considered a major weapon against cancer. Recent research indicates that what you eat may help to significantly reduce your risk.

Researchers are finding that what you eat may interfear with cancer growth at various stages, for example, certain foods can block the chemicals that initiate cancer. Anti- oxidants found in some vitamins and minerals can surf out oxygen free redicals , substances that are thought to make cells more susceptible to cancer and they can even repair some of the cellular damage that can be done .

One of the most studied antioxidants in vegetable and fruits thought to protect against cancer is beta-carolene, concentrated in deep green , yellow orange vegetable such as carrots , sweet potatoes and spinach. Fruits high is beta carotene includes apricots and muskmelons.

Some other foods that contain cancer fighting chemicals are tomatoes, green vegetable, citrus fruits , pungent prenentives and cnusferous vegetables. One of the compounds in tomatoes that is thought to reduce the risk of cancer is lycopene . Lycopene is an antioxidant which quenches certain cancer-triggering oxygen free radicals .people with pancreatic cancer showed lower levels of by compared with healthy individuals.

Green vegetables such as spinach and dark green tettuces are chock full of anti oxidants, including beta carotene, folete and lutein. Citrus fruits may be particularly effective in reducing the risk of pancreatic cancer. Citrus fruits contain carotenoids, havonoids and other substances .

Vegetables such as cabbage, cauliflower , broccoli, mustured green and turnips reduce the risk of breast cancer. Studies suggest that those who eat more onion and garlic are less prone to gastrointestinal cancer soyabens contains at least five compounds believed to inhabit cancer .

In fact, one of the compounds is chemically similar to the drug tamoxiten, which is routinely used to treat oestrogen dependent breast cancer .Wheat brain may lower the risk of colon cancer .

To get the most cancer protective compounds from your diet , strive for five or more servings of fruits and vegetable daily.

भारतीय भाषा संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ वार्षिक रिपोर्ट

डॉ. हेमलता यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग
प्रभारी– भारतीय भाषा संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ

भारत की संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है। सर्वांगीणता, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिष्णुता की दृष्टि से विश्व की समस्त संस्कृतियों की अपेक्षा अग्रणीय स्थान रखती है। इन्ही भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक एवं साहित्यक प्रतियोगिताओं का महाविद्यालयी स्तर पर समिति द्वारा आयोजन किया जाता है। समिति गठन के फलस्वरूप महाविद्यालय में 13 जनवरी 2023 में सेठ छदामी लाल जैन जी की पुण्यतिथि के अवसर पर सत्र 2020–21 के मेधावी छात्र/छात्राओं को मैडल, मोमेन्टो, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। समिति के सदस्यों द्वारा 74 वाँ गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) का भी आयोजन किया गया।

भारत सरकार द्वारा 3 फरवरी 2023 को निर्देशित न.20 की निबन्ध प्रतियोगिता महाविद्यालय में सम्पन्न करायी गयी। जिसमें प्रथम, द्वित्तीय व तृत्तीय विजेताओं का चुनाव किया गया।

भविष्य में भी महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जायेगा सत्र 2022–23 हेतु श्रीमती पूजा त्यागी, श्री दीपक कुमार, शिवानी गोयल, डॉ. रूबी यादव समिति में सक्रिय सदस्य हैं। तथा समिति सम्बन्धित कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 सेमेस्टर प्रणाली, एक नजर में

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक मूल्यांकन में बदलाव समय की मांग है परम्परागत रूप से चले आ रहे शैक्षणिक मूल्यांकन की वार्षिक प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों का समुचित मूल्यांकन नहीं हो पा रहा था इस तथ्य को ध्यान में रखकर विश्व के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्व विद्यालय द्वारा सेमेस्टर प्रणाली को अपनाया गया सेमेस्टर प्रणाली में एक शैक्षणिक सत्र में दो बार लिखित परीक्षा के आयोजन के साथ आंतरिक मूल्यांकन सेमिनार एवं फील्ड वर्क को भी सम्मिलित किया गया। इस प्रणाली की उपयोगिता को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने देश के सभी विश्वविद्यालयों को सेमेस्टर प्रणाली को लागू करने का निर्देश जारी किया है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में नए सत्र से छात्र स्नातक में प्रवेश के समय एक संकाय का चुनाव करेंगे। उसी संकाय के दो मुख्य (मेजर) विषयों का चुनाव करना होगा। त्रिवर्षीय स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में नई शिक्षा नीति लागू करने की अधिसूचना जारी कर दी गई है। बीए, बीएससी एवं बीकॉम के प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश भी नई नियमावली के अनुसार होंगे।

मेजर और माइनर विषयों की जानकारी

शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार छात्र द्वारा चयनित संकाय (कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि) में से दो मेजर विषयों का चुनाव कॉलेज में मेरिट, उपलब्ध सीट की संख्या व संसाधनों पर निर्भर होंगे। यह संकाय छात्र का अपना संकाय कहलाएगा, जिसमें वह तीन वर्ष अथवा पांच वर्ष तक शिक्षा लेगा। तीन मुख्य विषयों के अलावा एक माइनर विषय भी लेना होगा। यह माइनर विषय छात्र द्वारा चयनित संकाय या अन्य संकाय का भी हो सकता है। स्नातक के छात्र को प्रथम व द्वितीय वर्ष में एक-एक माइनर विषय का अध्ययन करना होगा।

स्नातक स्तर के हर छात्र को प्रथम दो वर्ष के प्रत्येक सेमेस्टर में तीन क्रेडिट का एक कौशल विकास कोर्स करना होगा। स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र को प्रत्येक सेमेस्टर में शोध परियोजना करनी होगी। छात्र द्वारा चुने गए तीसरे वर्ष के दो मुख्य विषयों में से किसी एक विषय एवं चतुर्थ, पंचम एवं षष्टम् वर्ष के मुख्य विषय से संबंधित शोध परियोजना करनी होगी। इसमें दो प्रकार के पाठ्यक्रम होंगे। पहला इंडीविजुअल नेचर यानी एक सेमेस्टर में पूरा होने वाला पाठ्यक्रम व दूसरा प्रोग्रेसिव नेचर यानी एक ही पाठ्यक्रम जिसकी विशेषज्ञता प्रत्येक सेमेस्टर के साथ बढ़ती जाएगी।

द्वितीय या तृतीय वर्ष में बदल सकेंगे विषय

शासनादेश के अनुसार छात्र द्वितीय या तृतीय वर्ष में विषय बदल सकेंगे। विषय न्यूनतम एक वर्ष के बाद ही बदला जा सकेगा। छात्र को प्रवेश के समय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य में से संकाय चुनना होगा। चुने हुए संकाय के दो मुख्य विषय लेने होंगे। पहले से छठें सेमेस्टर तक इसकी शिक्षा दी जाएगी। तीसरे मुख्य विषय का चुनाव अन्य किसी भी संकाय के साथ कर सकेगा। तीन मेजर और माइनर इलेक्टिव विषय चुनते हुए यह अनिवार्य होगा कि छात्र को कम से कम एक विषय अन्य संकाय से लेना होगा।

लेने होंगे अनिवार्य सह पाठ्यक्रम

स्नातक स्तर पर हर छात्र को तीन वर्षो यानी छह सेमेस्टर के प्रत्येक सेमेस्टर में एक सह-पाठ्यक्रम (को-करीकुलर) लेना होगा। सभी सह पाठ्यक्रमों को 40 प्रतिशत अंकों के साथ छात्रों को उत्तीर्ण करना होगा। प्रथम सेमेस्टर में भोजन, पोषण व स्वच्छता पढ़ाया जाएगा। द्वितीय सेमेस्टर में प्राथमिक चिकित्सा और स्वास्थ्य, तीसरे सेमेस्टर में मानव मूल्य व पर्यावरण अध्ययन, चौथे सेमेस्टर में शारीरिक शिक्षा और योग, पांचवें सेमेस्टर में विश्लेषणात्मक योग्यता और डिजिटल जागरूकता व छठवें सेमेस्टर में संचार कौशल और व्यक्तिगत विकास पढ़ाया जाएगा।

2021-22 से स्नातक स्तर पर नई शिक्षा नीति लागू कर दी गयीं हैं, इसे कार्य परिषद् से अनुमोदन मिल चुका है।

C.V. Raman Biography: Early Life, Career, Awards and Achievements

Shivangi Jadaun
M.Sc. Final, Chemistry

Dr. C.V Raman full name is Dr. ChandrasekharaVenkata Raman. On 28 February, 1928, he discovered the Raman Effect and win Nobel Prize in Physics for the discovery. Every year on 28 February, National Science Day is celebrated to pay tribute to the Nobel Laureate Dr. C.V. Raman. Let us read more about him, his childhood days, education, family, discoveries, awards, and achievements.

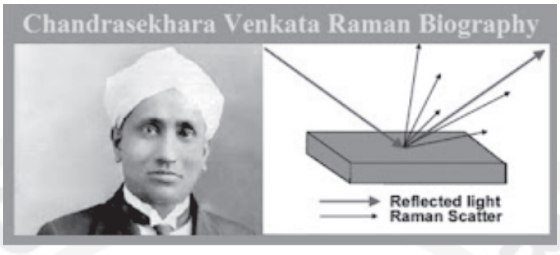

Dr. C.V Raman's contribution to science and his innovative research helped India and the World. He was born on 7 November, 1888 in Tiruchirappalli,Tamil Nadu. His father was a lecturer in Mathematics and Physics and so at a young age, he was exposed to an academic environment.

Name: Dr. ChandrashekhraVenkataraman or C.V. Raman Born on: 7 November, 1888

Place of Birth: Tiruchirappalli, Tamil Nadu Father's Name:R.Chandrashekhara Aiyer **Mother's Name:** Parvathi Ammal

Spouse Name: Lokasundari Ammal Died on: 21st November, 1970

Place of Death: Bangalore, Mysore State, India Discovery: Raman Effect

Awards: Matteucci Medal, Knight Bachelor, Hughes Medal, Nobel Prize in Physics, Bharat Ratna, Lenin Peace Prize, Fellow of the Royal Society

Dr. Chandrasekhara Venkata Raman (C.V.Raman): Worksand Discovery

He established the Indian Journal of Physics in 1926 where he was the Editor. He also sponsored the establishment of the Indian Academy of Sciences and served as the President since its inception. He was the President of the Current Science Association in Bangalore, which publishes Current Science (India).

In 1928, he wrote an article on the theory of musical instruments to the 8th Volume of the Handbuch der Physik. He published his work on the "Molecular Diffraction of Light"in 1922 which led tohis ultimate discovery of the radiation effect on the 28th February 1928 and gained him to receive Nobel Prize in Physics in 1930. He became the first Indian to receive a Nobel Prize.

Other researche scarried out by Dr. C.V. Raman were:Diffraction of light by acoustic waves of ultrasonic and hypersonic frequencies and effects produced by X-rays on infrared vibrations in crystals exposed to an ordinary light.

In 1948, he also studied the fundamental problems of crystal dynamics. His laboratory has been dealing with the structure and properties of diamond, and the structure and optical behaviour of numerousiridescent substances like pearls, agate, opal, etc.

He was alsointerestedin the optics of colloids, electrical and magnetic anisotropy and the physiology of human vision.

As briefly described that he is best known for discovering the 'Raman Effect' or the theory related to the scattering of light. He showed that when light traversesa transparent material, some of the deflected light changes its wave length.

Dr. Chandrasekhara Venkata Raman (C.V.Raman): Early Life and Family

Dr. C.V. Raman was born on 7 November, 1888 in an orthodox South Indian Brahmin family in Tiruchirappalli, Tamilnadu. His father's name was Chandra Shekhara Aiyer who was a lecturer in Mathematics and Physics in a college inVishakhapatnam.His mother's name was Parvathi Ammal. C. V. Raman was an intelligent and brilliant student since his early childhood. At the age of 11, he passed his matriculation and 12th class at the age of 13 with a scholarship. In 1902, he joined the Presidency College and received his graduate degree in1904.That time, he was the only student who received the first division. He has done his Master's in Physics from the same college and broke all the previous records.In 1907, he married to Lokasundari Ammal and had two sons namely Chandrasekhar and Radhakrishnan.

List of Important Discoveries in Physics

Dr. ChandrasekharaVenkata Raman (C.V. Raman): Career Because of his father's interest, he appeared for the Financial Civil Services (FCS)examination and top pedit.In1907,he went to Calcutta (now Kolkata) and joined as Assistant Accountant General. But in the spare time, he went to the laboratory for doing research at the Indian Association for Cultivation of Sciences. Let us tell you that, his job was very hectic then also he continued his research work in night due to his core interest in science.

Though the facilities available in the laboratory were very limited, he continued his research and published his findings in leading international journals including 'Nature', 'The Philosophical Magazine', 'Physics Review', etc. At that time, his researches were focused on the areas of vibrations and acoustics.

He got an opportunity to join the University of Calcutta in 1917, as the first Palit Professor of Physics. After 15 years at Calcutta, he became the Professor at the Indian Institute of Science at Bangalore from 1933-1948 and since 1948, he became the Director of the Raman Institute of Research at Bangalore which was established and endowed by him only.

Dr. Chandrasekhara Venkata Raman (C.V.Raman): Awardsand Honours

- In 1924, he was electedasa Fellow of the Royal Society early in his career and was knighted in 1929.
- He won the Nobel Prize in Physics in 1930.
- He was awarded the Franklin Medalin 1941.
- He was awarded the Bharat Ratnain 1954, the highest civilian award in India.
- In 1957, he was awarded the Lenin Peace Prize.
- The American Chemical Society and the Indian Association for the Cultivation of Science in 1998 recognised Raman's discovery as an International Historic Chemical Landmark.

On 28 February every year, India celebrates National Science Day to commemorate the discovery of the Raman Effect in 1928 in his honour.

In 1970, he received a major heart attack while working in the laboratory. He took his last breath in the Raman Research Institute on 21st November, 1970.

Dr.C.V.Raman was one of the great legends from India whose hardwork and determination made India proud and became the first Indian to receive Nobel Prize in Physics. He proved that, if a person really wants to pursue his/her desires nobody can stop. His interest in science and dedication towards research works made him discovered the Raman Effect. He will always be remembered as a great Scientist, Physicist and a Nobel laureate.

Prafulla Chandra Ray Contribution to Swadeshi Movement

Dr. Pradeep Jain
Assit. Prof. Chemistry Department
C.L. Jain College, Firozabad

Prafulla Chandra Ray was an Indian chemist and education who made significant contributions to chemistry, He was the first person to synthesise mercury and also pioneered the use of mercury to treat shin diseases.

He also discovered the element Thallium.

In addition to his scientific achievements. Ray was also a committed educationist and played a key role in establishing the Bengal Chemical and Pharmaceutical works, the first Indian company to manufacture drugs and chemicals. He also wrote several popular science books, which helped to popularise sceince among the general public. Ray's work laid the foundation for developing modern chemistry in India, and he is widely regarded as the father of Indian chemistry.

A nation wide appeal for the Swadeshi movement advocated the elimination of all purchases of British goods in favour of the exclusive use of Indian-made goods to foster the growth of India's local manufacturing sector. Acharya Prafulla Chendra Ray was a prominent Bengali chemist, author, and industrialist.

With the purpose of high-quality manufacturing drugs, pharmaceuticals, and chemicals using home grown technology to satisfy the requirements of millions of ordinary people, encourage the expansion of Indian industries, conted with imported products, and reach a state of complete independence, It should be mentioned here that some of the products that were very popular during thar period, such as fire extinguishers, surgical and hospital instruments, talcum powder, toothpaste, glycerin soap, carbolic soap and so on, were eventually discarede because it was determined that the products were not profitable bases on the current market scenario.

Prafulla Chandra Ray, The Father of Indian Chemistry

The 2nd of August 1861 saw the birth of the Indian chemist Prafulla Chandra Ray. Ray is often honoured as the **"father of chemistry in India."** As a yound man in Bengal, he had remarkable potential in his academic pursuits, and as a result, he was granted a scholarship to attend the University of Edinburgh in 1882.

'While a student at Edinburgh I found to my regret that every civilized country including Japan was adding to the world's stock of knowledge but unhappy that Indian was lagging behind. I dream that. God willing , a time would come when she too would contribute her quota. Half-a-century has since then rolled by. My dream I have the gratification of finding fairly materialized. A new era has evidently dawned upon India. Her sons have taken kindly to the zealous pursuit of different branches of Science. May the torch thus kindled burn with greater brilliance from generation to generation.

There, he first earned his Bachelor of Science Degree and then went on to get his Doctor of Philosophy degree in 1887. When organic chemistry was all the rage, he decided to study inorganic chemistry and became an expert in mineral salts such as sulphates and nitrates. In this article, you will learn about Bengali Chemist Prafulla Chandra Ray and his Royal Society of Chemistry.

Life history of Indian chemist

Prafulla Chandra Ray was born on 2nd August 1861 in a Brahmin family. He was the son of Harish Chandra Ray and Bhubanmohini Debi.

He passed the Entrance Examination from the first division and joined the presidency College. After passing his B.Sc. Examination with Honours in Chemistry, he joined as a teacher in Calcutta's City College. He was awarded an M.Sc. degree from Calcutta University and obtained the B.Sc. degree from Edinburgh University for his thesis on 'The Chemical Constituents of Asparagus.'

He discovered the stable compound **Mercurous Nitrite** in 1895. The British Government first honored with the imperial title of CIE (Companion of the Indian Empire), and then with the Knighthood in 1919. In 1920. he was elected General President of the Indian Science Congress.

Prafulla Chandra Ray was a great scientist, teacher, chemist and renowned scientist in India. he also contributed to the field of chemistry as well as world science. He was awarded many awards, including the Hope Prize award.

Prafulla Chandra Ray had studied at Presidency College, Kolkata. He demonstrated that alcohol could be made from pyruvic acid through fermentationn using yeat during his college days. Prafulla Chandra Ray was born in a small village in Bengal, India.

He had some education from a village pathshala, but he joined the Hare School and passed his Entrance Examination from the first division at the age of ten. After completing his bachelor's degree, he joined Presidency College, Kolkata and received his master's degree. He received his doctorate with high distinetion at the University of Edinburgh.

जी.एस.टी.

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

भारतीय अर्थव्यवस्था में करों का एक विशेष महत्व है। करो के द्वारा हमारी सरकार पूंजी का संकलन अपने राजस्व प्राप्ति हेतु लेती है। अत: इसमें किया गया सुधार हमारी अर्थव्यवस्था एवं आम नागरिकों की भलाई हेतु किया जाता है।

इस परिपेक्ष्य में 1 जुलाई 2017 को भारत देश की अर्थव्यवस्था में एक नवीन सुधारवादी नीति का उदय हुआ, जिसे हम जी.एस.टी. के नाम से जानते हैं।

जी.एस.टी. का पूरा नाम गुड्स एवं सर्विस टैक्स है जिसको हम वस्तु एवं सेवा कर कहते है। यह हमारे देश में 1 जुलाई 2017 को लागू कर दिया गया है। यह एक अप्रत्यक्ष कर है। जो व्यापक पैमाने पर पूरे देश के निर्माता व्यापारी वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्ताओं पर लगेगा इस कर को देने के पश्चात् और कोई अन्य कर भी नहीं देना होगा देश में जीएसटी के दो भाग है एक केन्द्र द्वारा लगाए जाने वाला जीएसटी तथा दूसरा राज्यों द्वारा लगाए जाले वाला जीएसटी दोनों को स्वीकार्यता को ध्यान में रखकर तय किया जाता है।

जीएसटी लागू होने के बाद देश को कई फायदे हो रहे हैं जैसे टैक्स चोरी में कमी आएगी, कम विकसित राज्यों को अधिक आय प्राप्त होगी, पुराने टैक्स समाप्त हो जाएंगे इस व्यवस्था में वन टैक्स का कांसेप्ट अमल में आएगा। जिससे शासन को अधिक सुविधा होगी।

3 अगस्त 2016 को हमारे देश में जीएसटी बिलपारित किया गया औरर एक जुलाई 2017 से पूरे देश में इसे मान्यता देकर व्यवहारिक रूप से लागू कर दिया गया। सरकार के अनुसार इसके लागू होने से टैक्स देने वालों को काफी सुविधा मिलेगी। सरल शब्दों में कहा जाए तो सभी वस्तुओं एवं सेवाओं में नया जीएसटी टैक्स लगाया जाएगा। इससे पूरे देश में एक ही टैक्स सिस्टम रहेगा, कोई और टैक्स इसके साथ नहीं देना होगा।

जीएसटी बिल के अंतर्गत टैक्स की दरें कम होगी, परंतु करदाताओं की संख्या लगभग 5 से 6 गुना तक बढ़ जाएगी। टैक्स का दायरा बढ़ने के कारण सरकार को आय संबंधी लाभ प्राप्त होंगे, कर की दरें एक समान होगी, जो धीरे-धीरे तय की जानी है।

वित्त मंत्रालय द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार इस व्यवस्था से निम्न लाभ संभावित हैं

व्यापार और उद्योग के लिए आसान, अनुपालन, पारदर्शिता : एक मजबूत और व्यापक सूचना प्रौद्योगिकी प्रणाली भारत में जीएसटी व्यवस्था की नींव होगी इसलिए पंजीकरण, रिटर्न, भुगतान आदि जैसी सभी कर भुगतान सेवाएं करदाताओं को ऑनलाइन उपलब्ध होंगी, जिससे इसका अनुपालन बहुत सरल और पारदर्शी हो जायेगा।

- **कर दरों और संरचनाओं की एकरूपता :** जीएसटी यह सुनिश्चित करेगा कि अप्रत्यक्ष कर दरें और ढांचे पूरे देश में एकसमान है। इससे निश्चितता में तो बढ़ोत्तरी होगी ही व्यापार करना भी आसान हो जाएगा। दूसरे शब्दों में जीएसटी देश में व्यापार के कामकाज को कर तटस्थ बना देना फिर चाहे व्यापार करने की जगह का चुनाव कहीं भी किया जाये।

- **करों पर कराधान (कैसकेडिंग) की समाप्ति :** मूल्य श्रृंखला और समस्त राज्यों की सीमाओं से बाहर टैक्स क्रेडिट की सुचारू प्रणाली से यह सुनिश्चित होगा कि करों पर कम से कम कराधान हों। इससे व्यापार करने में आने वाली छुपी हुई लागत कम होगी।
- **प्रतिस्पर्धा में सुधार** – व्यापार करने में लेन–देन लागत घटने से व्यापार और उद्योग के लिए प्रतिस्पर्धा में सुधार को बढ़ावा मिलेगा।
- **विनिर्माताओं और निर्यातकों को लाभ** – जीएसटी में केन्द्र और राज्यों के करों के शामिल होने और इनपुट वस्तुएं और सेवाएं पूर्ण और व्यापक रूप से समाहित होने और केन्द्रीय बिक्री कर चरणबद्ध रूप से बाहर हो जाने से स्थानीय रूप से निर्मित वस्तुओं और सेवाओं की लागत कम हो जाएगी। इससे भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में होने वाली प्रतिस्पर्धा में बढ़ोत्तरी होगी और भारतीय निर्यात हो भी बढ़ावा मिलेगा। पूरे देश में कर दरों और प्रक्रियाओं की एकरूपता में अनुपालन लागत घटाने में लंबा रास्ता तय करना होगा।

केन्द्र और राज्य सरकारों के लिए –

- **सरल और आसान प्रशासन** – केन्द्र और राज्य स्तर पर बहु आयामी अप्रत्यक्ष करों को जीएसटी लागू करके हटाया जा रहा है। मजबूत सूचना प्रौद्योगिकी प्रणाली पर आधारित जीएसटी केन्द्र और राज्यों द्वारा अभी तक लगाए गए सभी अन्य प्रत्यक्ष करों की तुलना में प्रशासनिक नजरिए से बहुत सरल और आसान होगा।
- **कदाचार पर बेहतर नियंत्रण** – मजबूत सूचना प्रौद्योगिकी बुनियादी ढ़ांचे के कारण जीएसटी से बेहतर कर अनुपालन परिणाम प्राप्त होंगे। मूल्य संवर्धन की श्रृंखला में एक चरण से दूसरे चरण में इनपुट कर क्रेडिट कर सुगम हस्तांतरण जीएसटी के स्वरूप में एक अंत:निर्मित तंत्र है, जिससे व्यापारियों को कर अनुपालन में प्रोत्साहन दिया जाएगा।
- **अधिक राजस्व निपुणता** – जीएसटी से सरकार के कर राजस्व की वसूली लागत में कमी आने की उम्मीद है। इसलिए इससे उच्च राजस्व निपुणता को बढ़ावा मिलेगा।

उपभोक्ताओं के लिए –

वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य के अनुपाती एकल एवं पारदर्शी कर – केन्द्र और राज्यों द्वारा लगाए गए बहुत अप्रत्यक्ष करों या मूल्य संवर्धन के प्रगामी चरणों में उपलब्ध गैर–इनपुट कर क्रेडिट के कारण आज देश में अनेक छिपे करों अधिकांश वस्तुओं और सेवाओं की लागत पर प्रभाव पड़ता है। जीएसटी के अधीन विनिर्माता से लेकर उपभोक्ताओं तक केवल एक ही कर लगेगा, जिससे अंतिम उपभोक्ता पर लगने वाले करों में पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा।

- **समग्र कर भार में राहत** – निपुणता बढ़ने और कदाचार पर रोक लगने के कारण अधिकांश उपभोक्ता वस्तुओं पर समग्र कर भाग कम होगा, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा।

ई–शिक्षा का महत्व

डॉ. अरुण कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली (ई–लर्निंग) को सभी प्रकार के इलैक्ट्रोनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूपमें परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। सूचना एवं संचार प्रणालियां, चाहे इनमें नेटवर्क की व्यवस्था हो या ना हो, शिक्षा प्रक्रिया को कार्यान्वित करने वाले माध्यम के रूप में अपनी सेवा प्रदान करती है।

ई–शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ई–शिक्षा इलैक्ट्रॉनिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। ई–शिक्षा के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब–आधारित शिक्षा, कम्प्यूटर–आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और डिजीटल सहयोग शामिल है। पाठ्य–सामग्रियों का वितरण इंटरनेट, इंट्रानेट/एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी–रोम (CD-ROM) के माध्यम से किया जाता है। इसे खुद ब खुद या अनुदेशक के नेतृत्व में किया जा सकता है और इसका माध्यम पाठ, छवि, एनीमेशन, स्ट्रीमिंग वीडियो और ऑडियो है।

ई–शिक्षा के समानर्थक शब्दों के रूप में सीबीटी (CBT) (कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षा), आईबीटी (IBT) (इंटरनेट आधारित प्रशिक्षा) या डब्ल्यूबीटी (WBT) (वेब आधारित प्रशिक्षा) जैसे संक्षिप्त शब्द–रूपों का इस्तेमाल किया जा सकता है। आज भी कोई व्यक्ति ई–शिक्षा (ई–लर्निंग/e-learning) के विभिन्न रूपों जैसे– e-learning और Education (इनमें से प्रत्येक– ई लर्निंग/ईशिक्षा), के साथ–साथ उपरोक्त शब्दों का भी प्रयोग होता देख सकता है।

ई–लर्निंग के लाभ –

1. ई–लर्निंग बहुत फ्लैक्सिबल है और छात्र को उसके अनुसार लर्निंग को आसान बनाता है।
2. इसमें शिक्षकों की एनर्जी अटेंडेंस लेने और आंसर शीट का मूल्यांकन करने जेसे कार्यों में लगने के बजाए पूरी तरह से पढ़ाने पर फोकस होता है।
3. ऑडियो विजुअल कंटेंट के माध्यम से इसमें पढ़ाई ज्यादा मजेदार व आसान हो जाता है। जिससे स्टूडेंट्स टफ कॉन्सेप्ट को भी आसानी से समझ पाते हैं।
4. यह हर तरह के स्टूडेंट्स को पैरलर प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है। यहां तक कि विजुअली चेलेंज्ड स्टूडेन्ट्स का स्क्रीन रीडर और वैसे स्टूडेंट्स जो टाइप नहीं कर सकते उन्हें जरूरी उपयोगी टूल्स उपलब्ध करता है।
5. यह ज्योग्राफिक्स बैरियर को खत्म करता है और स्टूडेंट्स की पहुंच सबसे बेस्ट संस्थान या बेस्ट एजुकेशन तक संभव बनाता है। भले की स्टूडेन्ट्स देश के किसी कोने में रहते हों।

ई–शिक्षा (Online study) इससे जुड़े संगठनों एवं व्यक्तियों को लाभ प्रदान कर सकता है।

संशोधित प्रदर्शन : अमेरिका शिक्षा विभाग द्वारा किए गए 12 वर्षों के अनुसन्धान के एक मेटा–विश्लेषण से पता चला कि आम तौर पर प्रत्यक्ष पाठ्यक्रमों का अनुसरण करके उच्चतर शिक्षा के लिए अध्ययन करने वाले छात्रों

की तुलना में ऑनलाइन अध्ययन करने वाले छात्रों का प्रदर्शन काफी बेहतर था।

वर्धित उपयोग : सबसे अधिक बुद्धि वाले प्रशिक्षक अपनी हदों के बाहर भी अपने ज्ञान का साझा कर सकते हैं, जिससे छात्रगण अपने शारीरिक, राजनैतिक और आर्थिक के बाहर भी इन पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकते है। मान्यता प्राप्त विशेषज्ञों के पास किसी भी इच्छुक व्यक्ति को न्यूनतम लागत पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना उपलब्ध कराने का अवसर होता है। उदाहरण के लिए एमआईटी ओपन कोर्सवेयर (MIT Open Course Ware) कार्यक्रम ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और व्याख्यान के पर्याप्त अंशों को मुफ्त ऑनलाइन उपलब्ध करा दिया है।

शिक्षार्थियों की सुविधा एवं नम्यता : कई परिस्थितियों में, ईलर्निंग/ईशिक्षा खुद से भी किया जाता है और इसका शिक्षा सत्र 24X7 उपलब्ध रहता है। शारीरिक रूप से कक्षाओं में भाग लेने के लिए शिक्षार्थी किसी विशेष दिन/समय के अधीन नहीं होते हैं। वे अपनी सुविधानुसार शिक्षा सत्रों को कुछ देर के लिए रोक भी सकते है। सभी ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए आमतौर पर केवल बुनियादी इंटरनेट उपयोग, ऑडियो और वीडियो की जानकारी होना ही काफी है। इस्तेमाल किए जाने वाले प्रौद्योगिकी के आधार पर छात्र काम के वक्त भी अपना पाठ्यक्रम शुरू कर सकते हैं और इस पाठ्यक्रम को किसी दूसरे कम्प्यूटर पर अपने घर में भी पूरा कर सकते हैं।

खास तौर पर 21वीं सदी में शिक्षार्थियों के अनुशासन, पेशे या कैरियर में आवश्यक डिजीटल साक्षरता कौशल की मौजूदगी को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कौशल एवं क्षमताओं को विकसित करना बेट्स (2009) कहते हैं कि ई–शिक्षा के हित में एक प्रमुख तर्क यह है कि यह पाठ्यक्रम के भीतर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के उपयोग को अंत: स्थापित कर ज्ञान के आधार पर काम करने वाले लोगों के लिए आवश्यक कौशल को विकसित करने में शिक्षार्थी को समर्थ बनाता है। वह यह भी तर्क देते हैं कि इस तरह से ई–शिक्षा के उपयोग में शिक्षार्थियों के पाठ्यक्रम डिजाइन और मूल्यांकन का प्रमुख आशय निहित होता है।

एन.सी.सी. कविता

राधिका मुदगल
बी.एस सी. (तृतीय सेमेस्टर)
जीव विज्ञान

कभी ठंड में ठिठुर कर देख लेना
कभी तपती धूप में जलकर देख लेना,
कैसे होती है हिफाजत मुल्क की,
कभी सरहद पर चलकर देख लेना।

जगत में बड़ो बतायौ काम

डॉ. संजय कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

जगत में बड़ो बतायौ काम
बिना काम करने वालों की होती न कोई शान
काम करने वाले जब काम करने खड़े हुये,
मुर्दे भी तो जाग पड़े, जमीनों में गढ़े हुये,
शेर बब्बर काँप गये गुफाओं में पड़े हुये
आयने भी जुड़ने लगे, सामने जो पड़े हुये,
फोंजों के भी कारखाने टूट गये अड़े हुये,
समुद्रों में रेत हुआ पहाड़ सारे दड़े हुये,
हुई सुबह से शाम। जगत में बडौ.....
दुनियाँ में इंसान काम करने की जो टाल करे,
आपत्ति के आने पर तकदीर का सवाल करे,
उसका तो ईश्वर भी बिल्कुल नहीं ख्याल करे,
उल्टा को सुल्टा करे, करने की न हाल करे,
जिन्दगी को चाहे तो देव या चंडाल करे,
अपने हाथ आत्मा को शेर या श्रृगांल करे,
पर्वत को राई और राई को पहाड़ करे,
जल में बसाय दये गाँव।। जगत में बड़ो.....
राणा प्रताप बने, मुगलों की शान पर,
शिवाजी ने सवाया कीया गौरव अपनी आन पर
''दुर्गावती'' रानी आयी शोला बन 'वान' पर
''जयमल–फत्ता'' जंग ''लड़े'' खेल अपनी जान पर,
पृथ्वी ने ताले डाले काफिरों की जुबान पर,
क्षत्रियों ने छत्र रखा, आन–बान–शान पर,
जाना जगत तमाम।। जगत में बड़ो .....
पहले कर्मवीर फिर वाद को अमीर बना,
दीनो का देव बन, वही जाहरवीर बना,
हट का हमीर और पत्थर को लकीर बना,
भोजनों में खीर और फलों में अंजीर बना,
ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र ऋषियों का वजीर बना,
अभिमन्यु चक्रव्यूह भेद दुनियाँ की नजीर बना,
सहकर कष्ट तमाम।। जगत में बड़ौ.....

बेटियाँ

नन्दिनी शर्मा
बी.एस.सी (तृतीय सेमेस्टर)
(जीव विज्ञान)

जब–जब जन्म लेती है बेटियाँ,
खुशियाँ साथ लाती हैं बेटियाँ।
ईश्वर की सौगात है बेटियाँ,
सुबह की पहली किरण हैं बेटियाँ।
तारों की शीतल छाया है बेटियाँ,
आँगन की चिड़िया हैं बेटियाँ।
त्याग और समर्पण सिखाती हैं बेटियाँ,
नये–नये रिश्ते बनाती हैं बेटियाँ।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटियाँ,
बार–बार याद आती हैं बेटियाँ।
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं हैं बेटियाँ।

Indian Army

Nandni Sharma
B.Sc., (IIIrd Sem)
(Bio)

" Our flag does not fly
Because the
Wind moves it, it flies
with
the last breath of each
soldier who died
Protecting it"

प्यारी मेरी मैया

डॉ. अरुण कुमार यादव
आसिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया
तू कितनी अच्छी है तू कितनी भोली है
तू कितनी सच्ची है तू प्यारी न्यारी है
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

ये जो जग है बन है काँटों का
तू फुलवारी है तू रखवाली है।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

दूखन लागी है मैया तेरी अँखियाँ
मेरे लिए जागी है ते सारी–सारी रतियाँ
मेरी निंदिया पे अपनी निंदिया भी तूने वारी है
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

तू पी जाती दुख मेरा सारा
उड़ेलती मुझ पर अपनी ममता की धारा
देकर अपने पुण्यों का फल,
हर लेती मेरे हर पाप को।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

मैं करता गलतियां अनगिनत,
फिर भी रहती तू उद्यत,
मुझसे मेल–मिलाप को
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया
बचपन में तेरे आंचल में सोया,
तूने लोरी सुनाई जब भी में रोया।
चलता था घुटनों पर जब
बजती थी तेरी ताली तब।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

हल्की सी रोने की आवाज पर मेरी,
न्यौछावर कर देती थी खुशियाँ अपनी सारी।
चलने की कोशिश मैं जब–जब में गिरा
झट से सीने से लगा कर फरमाइश पूरी की मेरी।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

जब भी नहीं पकड़ा तेरे आंचल का कोना
ढूंढ़ लिया तूने घर का हर एक कोना।
हाथ दिखाकर पास बुलाना,
आंख मिचौली खेल खिलाना।
ख्वाहिशों का गला घोंट कर
मेरी जिद पूरी सारी कर।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया
तेरे कदमों की आहट, घर आंगन खिल जाता है
तेरे हाथों की मेहनत से, घर सारा महक जाता है।
दुनिया के सब सुख से बढ़कर, तेरे आंचल का कोना

है।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया
तेरा अपना न सुख-दुख कोई
मैं मुस्कारा तू मुस्काई मैं रोया तू रोई
मेरे हँसने पे मेरे रोने पे तू बलिहारी है
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

तुझ बिन अब खाऊं कैसे
तुझ बिन अब जिऊ कैसे
अब कौन मुझे मनाएगा
अब अपनी ममतामयी हाथों से,
कौन मुझे खिलाएगा।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

जीवन की इस बीच मझधार में
मुझे क्यों छोड़ गई इस संसार में
अब कौन पार लाएगा
तेरे अरुण की नैया
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

पास आने को तेरे चांहू कितना,
ये दिल कितना मजबूर है।
याद में तेरी तड़प रहा हूं,
मेरा आंचल मांग रहा हूं।
नींद नहीं है आती मुझको,
आवाज सुनने को तरस रहा हूं।

ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया
अदा नहीं कर पाऊंगा मैं,
तेरे दिए इस कर्ज को,
निभाऊंगा लेकिन इतना मैं,
बेटे के हर फर्ज को।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

अच्छे बुरे में फर्क बताया,
तुमने अपना कर्तव्य निभाया।
अच्छा बेटा बनूंगा मैया,
तेरी वाणी का पालन करूंगा मैया
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

करूंगा तेरा गुणगान सदा में मैया
करूंगा मेरा सम्मान सदा में मैया।
शब्द भी पड़ गए थोड़े तेरे गुणगान में मैया,
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

जीवन की हर गलती की मैया
भीगी आंखें से होकर करुण
क्षमा याचना कर रहा हे तेरा अरुण।
ओ मेरी मैया
प्यारी मेरी मैया

Indian Mathematican S. Ramanujan - Biography

Dr. Uday Raj Singh
Associate Professor, Mathematics Department

Born in 1887, Ramanujan's life, as said by Sri Aurobindo, was a "rage to mathematical riches" life story. His geniuses of the 20th century are still giving shape to 21st Century mathematics.

Discussed below is the history, achievements, contributions, etc. of Ramanujan's life journey.

Birth -

- Srinivasa Ramanujan was **born on 22nd December 1887** in the south Indian town of Tamil Nadu, named Erode.
- His father, **Kappuswamy Srinivasa Iyengar** worked as a clerk in a saree shop and his **mother, Komalatamma** was a housewife.
- Since a very early age, he had a keen interest in mathematics and had already becomes a child prodigy.

Srinivasa Ramanujan Education -

- He attained his **early education and schooling from Madras,** where he was enrolled in a local school.
- His **love for mathematics had grown at a very young age** and was mostly self-taught.
- He was a promising student and had won many academic prizes in high school.
- But his love for mathematics proved to be a disadvantage when he reched college. As **he continued to excel in only one subject and kept failing in all others.** This resulted in him **dropping out of college.**
- However, he continued to work on his collection of mathematical theorems. ideologies and concepts until he got his final breakthrough.

Final Break Through-

- **S. Ramanujam did not keep all his discoveries to himself but continued to send his work to International mathematicians.**
- In 1912, he was appointed at the position of clerk in the madras Post Trust Office. where the manager, S.N. Aiyar encouraged him to reach out to G.H. Hardy, a famous mathematicians at the Cambridge University.
- **In 1913, he had sent the famous letter to hardy, in which he had attached 120 theorems as a sample of his work.**
- Hardy along with another mathematics at Cambridge, J.E. Littlewood **analysed his work and concluded it to be a work of true genius.**
- It was after this that his journey and recognitions as one of the greatest mathematicians had started.

Death -

- In 1919, Ramanujan's health had started to deteriorate, after which he decided to move back to india.
- After his return in 1920, his health further worsened and he died at the age of just 32 years.

Srinivasa Ramanujan Contributions

- Between 1914 and 1914, while Ramanujan was in England, he along with Hardy published over a dozen research papers.
- During the time period of three years, he had published around 30 research papers.
- **Hardy and Ramanujan had developed a new method, now called the circle method,** to derive an asymptomatic formula for this function.
- **His first paper published, a 17-page work on Bernoulli numbers that appeared in 1911 in the Journal of the Indian Mathematical Society.**
- One remark result of the Hardy-Ramanijan collaboration was a **formula for the number p(n) of partitions of a number 'n'.**

Achievements of Srinivasa Ramanujan

- At the age of 12, he had completely read Loney's book on Plane *Trignimetry and A Synopsis of Elementary Result inn Pure and Applied Mathematics,* Which were beyond the standard of a high school student.
- **In 1916, he was granted a Bechelor of Science degree "by research" at the Cambridge University.**
- **In 1918,** he became the first Indian to be honoured as a **Fellow of the Royal Society.**
- In 1997, ***The Ramanujan Journal*** was launched to publish work "in areas of mathematics influenced by Ramanujan"
- **The year 2012 was declared as the National Mathematical Year** as it marked the 125th birth year of one of the greatest Indian mathematicians.
- Since 2021, his birth anniversary, **December 22, is observed as the National Mathematicians Day** every year in India.

ऐसी थी मेरी माँ...

डॉ. अरुण कुमार यादव
आसिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

ईश्वर ने उस स्वर्ग से इस धरा पर एक
सुंदर फूल खिलाया जिसका नाम माँ धरा।
ऐसी थी मेरी माँ ।

पहली धड़कन भी मेरी धड़की थी माँ के भीतर
आंखें जो पहली दफा तेरा ही चेहरा दिखा।
खामोश मेरी जुबां को सुर भी तूने ही दिया
श्वेत पड़ी अभिलाषाओं में एक नया रंग तूने ही भर दिया।
ऐसी थी मेरी माँ ।

अपना निवाला छोड़कर उसमें से मेरे लिए बचाया करती थी,
भले ही मैं नाकाम रहा दुनिया में मेरे होने पर गर्व किया करती थी।
मेरी लाखों गलतियों पर मुझको ना डाँटा करती थी
मेरे रूठने पर हर पल मुझे मना कर खाना खिलाया करती थी।
ऐसी थी मेरी माँ

जब मैं बेतहाशा धूल में खेल कर घर पर आया करता था
लगता था वह मुझे डांटेगी, मारेगी, पर
हाथ मेरे सिर पर बड़े प्यार से फिराया करती थी।
ऐसी थी मेरी माँ

जितना–जितना मैंने अपनी उम्र का पड़ाव पार किया
उतना अपने अशीष से मेरे जीवन रंगों को भर दिया।
जरा सी देर होने पर सब से पूछा करती थी
पलक झपके बिना घर की खिड़कियों से दरवाजा तकती थी।
ऐसी थी मेरी माँ

जिस नाम से दुनिया में पहचान मिली वो नाम कभी ना दोहराया करती थी।
अपने लाड़ प्यार के नामों से कभी दीपू, कभी जुम्मा कभी उपेन्द्रा नाम से पुकारा करती थी।
ऐसी थी मेरी माँ

डायरी में शायरी

अनामिका तिवारी
बी.एस सी. (तृतीय सेमेस्टर)

1. अगर हम ना होते तो तुम्हें अमल कौन कहता ?
अगर हम ना होते तो तुम्हें गजल कौन कहता ?
ये तो करिश्मा है कुदरत का वरना !
पत्थर को ताजमहल कौन कहता ?

2. ईश्वर का दिया अल्प नहीं होता।
जो बीच में ही टूट जाए वो संकल्प नहीं होता।
हार को लक्ष्य से दूर ही रखना क्योंकि,
जीत का कोई संकल्प नहीं होता।

3. उनकी किस्मत का भी क्या फसाना होगा।
जिनको मेरी तरह किस्मत ने मारा होगा।
किनारे पर बैठे लोग ये क्या जाने।
डूबने वाले ने किस-किस को पुकारा होगा।

कोशिश कर

अंशिका सागर
बी.कॉम. (तृतीय सेमेस्टर)

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।

मेहनत कर, पौधो को पानी दे,
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा।

सीने में उम्मीदों को, जिंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

संघर्ष

अंशिका सागर
बी.कॉम. (तृतीय सेमेस्टर)

एक क्षण पराजय का ....
जीवन बन सकता नहीं,
है क्या ऐसा संसार में,
जो तू कर सकता नहीं।

विकल हो रहा हो जो मन,
तो सम्भल जायेगा,

विफल होते हैं प्रयास,
मनुज मगर हार सकता नहीं,
है क्या ऐसा संसार में।
जो प्रयत्न साध सकता नहीं,
जो तू कर सकता नहीं।

सकल संसार हो जाए रिपु,
तेरे भीतर ही तेरा सखा-ऋजु,

तू वो कायर नहीं...
जो संघर्ष से डरे,
चल, शेष तेरा समर फिर जीवित करे,

विहग-विशाल को समूह का आश्रय नहीं,
अकेला ही उड़े, उसे किसी का भय नहीं,
छट जाए पर, हो जाए जर्जर
फिर भी संघर्ष छोड़ता नहीं।

है क्या ऐसा संसार में,
जो प्रखर-मन भेद सकता नहीं,
जो तू कर सकता नहीं।

मैं नारी हूँ !

श्रद्धा उपाध्याय
एम. एस–सी. (प्रथम वर्ष)

तोड़ के हर पिंजरा
जाने कब मैं उड़ जाऊँगी।
चाहे लाख बिछा लो बंदिशें,
फिर भी दूर आसमां में
अपनी जगह बनाऊँगी मैं,
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ।
भले ही परम्परावादी जंजीरों से बांधे हैं
दुनिया के लोगों ने पैर मेरे
फिर भी इन जंजीरों को तोड़ जाऊँगी,
मैं किसी से कम नहीं
सारी दुनिया को दिखाऊँगी,
हाँ गर्व है, मुझे मैं नारी हूँ।

काजल कंगन से परे मेरे भी कुछ ख्वाब हैं,
दिल तिरंगे की आस में बेताब है
वाकिफ हूँ लड़कियों के दायरों,
मगर वतन से मोहब्बत बेहिसाब है
जेहन लड़की का जरूर दिया होगा
खुदा ने बरखुदार...
पर दिल गलती से फौजी का डाल दिया।

अपने हौसलों को मत बताओ
कि तुम्हारी तकलीफ कितनी बड़ी है,
अपनी तकलीफ को बताओ, तुम्हारा हौसला
कितना बड़ा है।

कोई अर्थ नहीं ...

प्रशान्त बघेल
बी.एस–सी. (तृतीय वर्ष)

नित जीवन के संघर्षों से जब टूट चुका हो
अन्तर्मन तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।
जब फसल सूखकर जल के बिन तिनका–तिनका
वन गिर जाये फिर होने वाली वर्षा
का रह जाता कोई अर्थ नहीं।
सम्बन्ध कोई भी हो लेकिन यदि दु:ख
में साथ न दे अपना फिर सुख में उन
सम्बन्धों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।
छोटी–छोटी खुशियों के क्षण निकल जाते हैं।
रोज जहाँ, फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।
मन कटुवाणी से आहत हो भीतर तक
छंलनी हो जाये फिर बाद कहे प्रिय वचनों
का रह जाता कोई अर्थ नहीं
सुख साधन चाहे जितने हो पर काया
रोगों का घर हो फिर अन अगनित
सुविधाओं का रहा जाता कोई अर्थ नहीं।

किताबों की बातें।

- अंकित कुमार
कक्षा- बी.एस सी. तृत्तीय सेमेस्टर (द्वित्तीय वर्ष)

किताबों की बातें-जिंदगी में उतारा करो।
जितना हैं पास, उसमें गुजारा करो।
चाहते हो गर, नाम हो रोशन तो,
तुम खुद को हर रोज सुधारा करो।

पता है, कुछ बातें माँ से छिपाते हो।
अपने आप को। उनकी डांट से बचाते हो,
करतें हो ये सब अपनी खुशी के लिए,
घर में सीधे हो, बाहर जलवे दिखाते हो।

जो कोशिश करता है, वही पाता है।
जिंदगी में अपने बदलाव लाता है,
बढ़ाया गर उसने सोच का दायरा तो
दुनिया मे अपना नाम करके जाता है।

पेट दर्द का बहाना। मत बनाया करो।
आलस के बहकावे में मत आया करो।
अगर बनाना है वजूद, अपना भी तो
मुसीबतों को हंस खेलकर उठाया करो।

एक हसीन ख्वाब सजाकर देख।
पुस्तकों को अपना बनाकर देख।
मंजिल भी सलाम ठोकेगी तुझे।
कदम जोश से अपना बढ़ाकर देख।

टयूशन पढ़ रहे हो तो लाभ होना चाहिए।
चेहरा ये तुम्हारा आफताब होना चाहिए।
सुनो मार्कशीट के नंबर देखकर,
माँ बाप का मुखड़ा गुलाब होना चाहिए।

यूँ ही पड़ा रोता रहेगा क्या।
कीमती वक्त खोता रहेगा क्या।
कब खिलाएगा फूल जिंदगी में,
या यूँ ही कांटे बोता रहेगा क्या।
भीड़ देखकर घबराना नहीं है।
बाधा आने पर रूक जाना नहीं है।
चाहे कितनी भी आए मुसीबत,
जिंदगी छोड़ कर मर जाना नहीं है।

क्यों उदास बैठे हो हंस कर दिखाओ,
बोल्ट जो ढीले हैं उन्हें कसकर दिखाओ।
हार कर बैठने से काम नहीं चलता दोस्त,
कुछ करके दिलों में बस कर दिखाओ।

एन.सी.सी. पर एक कविता

जहाँ एक कमरे के लिए बहिनों में झगड़ा होता है
वहाँ हम एक बेस्ट में 50 लडकियाँ रहती हैं।

जहाँ दर्द में भी कोई साथ नहीं होता है,
वहाँ हम साथ में रगड़ा खाते हैं।

जहाँ लोगों के लिए 5 स्टार में खाना भूख मिटाता है
वहाँ हम कैंप के खाने में 5 स्टार ढूढ़ँते हैं।

जहाँ लोगों को इंस्टाग्राम, फेसबुक पे ऑनलाइन रहना अच्छा लगता है
वहाँ हमें कम्बल परेड, थाली परेड में व्यस्त रहने में अच्छा लगता है।

वहाँ हमें कॉलेज के साथ दिन बिताने में सुकून मिलता है
जहाँ लोगों के नाम के सामने श्री कुमारी लगता है

वहाँ हमारे नाम की शुरूआत की कैडेट्स से होती है
इसलिए तो बाकियों से हम अलग हैं और हमें **NCC Cadets** कहते हैं।

भारतीय समाज में नारी का स्थान

डॉ. हेमलता यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

प्राचीन भारत से ही नारी को विशेष पूज्यनीय माना गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता है। हमारे प्राचीन भारतीय वेदो से हमें यह ज्ञान होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में मातृसत्तात्मक था। नारी यह समाज का मूल आधार है तथा ईश्वर द्वारा बनाई गई सबसे खूबसूरत अमूल्य वस्तु है। समाज में नारी, बहन, माँ, पत्नी ऐसे अनेक रिश्ते निभाती है। शक्ति का दूसरा नाम नारी कहलाती है। अपने वंश को आगे बढ़ाने के उपकार में कभी माता के रूप में तो कभी पत्नी के रूप में जीवन संगिनी हर कठिन समस्याओं में साथ देने के लिए। प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी का अमूल्य स्थान था। नारी को पूज्यनीय माना जाता था वेद कालीन समाज मे महिलाओं कौ स्थिति महत्वपूर्ण थी।

परंतु ना जाने क्यों जैसे–जैसे समाज आगे बढ़ता गया और मध्य युग आते गया समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई। पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार बढ़ते गए। कभी बाल विवाह स्त्री भ्रूण हत्या ऐसे ग्रुप बताओ ने समाज में अपने पैर फैला लिए। स्त्री को उपभोग की वस्तु समझकर उसे चाहरदीवादी में कैद कर दिया गया। बाल विवाह के कारण महिलाओं पर होने वाले अत्याचार बढ़ गये तथा बाल विवाह के कारण उन्हें शिक्षा से वंचित होना पड़ा। छोटी सी उम्र में उन पर बड़ी–बड़ी जिम्मेदारी डाल दी गई। महिलाओं की आजादी छीनकर उन्हें पुरुषों की उपभोग की वस्तु बना दिया गया। नारी पर होने वाले शोषण अत्याचार दिनों–दिन बढ़ते गए।

समाज में बिगड़ रहे स्त्री के जीवन को सुधारने के लिए अनेक समाज सुधारक को है कार्य किया। सती प्रथा को बंद करने के लिए राजा राममोहन ने अथक प्रयत्न किए। इसके फलस्वरूप 1829 सती प्रथा पर रोक लगा दी गई। नारी को शिक्षित करने के लिए ज्योतिबा फुले ने अनेक कष्ट सहे। उनका यह मानना था कि यदि एक नारी शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को सिखाती है। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने पुरूषों के कदम से कदम मिलाकर कार्य किया। भारत के आजादी के लिए अपना हरसंभव योगदान दिया। आजादी के बाद अपना कर्तव्य दिखाते हुए महिला पुरुषों के कदम से कदम मिलाकर कार्य किया। भारत के आजादी के लिए अपना हरसंभव योगदान दिया। आजादी के बाद अपना कर्तव्य दिखाते हुए महिला पुरुषों के कदम से कदम मिलाकर चलने लगी। आज समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। आज महिला चाँद तक जा पहुँची है। परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि आज संपूर्ण नारी जाति शोषण से मुक्त है। आज के कई समाज में नारियों का शोषण किया जाता है उन्हें उपभोग की वस्तु समझी जाती है। तो दूसरी ओर महिलाऐं आकाश की बुलंदियों को छू रही हैं और हर क्षेत्र में पुरुषों को पछाड़ रही है। दहेज की कुप्रथा आज के समाज में मौजूद है। दहेज के कारण स्त्रियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जाते हैं।

नारी मातृत्व का रूप होती है। जीवन का मूल आधार होती है। हमें नारी का सम्मान करना चाहिए। नारी से अधिक शक्ति और सहनशक्ति इस संसार में किसी के पास नही। सीता, सरस्वती नारी हर रूप में पुज्यनीय है। भारतीय संस्कृति को बनाये रखते हुए हमें नारी का सम्मान करना चाहिए। क्योंकि नारी से ही जीवन है।

आज के इस आधुनिक युग में नारी पुरुष से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो या सामाजिक या व्यवसायिक या वैज्ञानिक या कला का क्षेत्र नारी हर क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान बना चुकी है। हमारे देश की ऐसी कई महान नारियां है जिन्होंने आसमान की बुलंदियों को छुआ है और देश का नाम रोशन किया है। उदाहरण के लिए स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी (प्रधानमंत्री), किरण बेदी (आई.पी.एस. अधिकारी), सुनीता

फोमाटने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर लिया है। मदर टेरेसा का नाम भी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उल्लेखनीय है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।

यत्रैतास्तु न पूजयन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।

(जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते है।)

भारत रत्न प्राप्त डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डॉ. राहुल चतुर्वेदी
असिस्टेंट प्रोफे. वाणिज्य विभाग

अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 में तमिलनाडू के एक गाँव धनुषकोड़ी में हुआ था। इनके पिता मछुवारों को किराए पर नाव देते थे। कलाम ने अपनी पढ़ाई के लिए धन की पूर्ति हेतु अखबार बेचने का कार्य भी किया। डॉ. अब्दुल कलाम ने जीवन में चुनौतियों का सामना किया। उनका जीवन सदा संघर्षशील रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जिसने कभी हार नहीं मानी तथा देशहित में अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हुए, सदा उत्कृष्टता के पथ पर चलते रहे। 71 वर्ष की आयु में भी वे अथक परिश्रम करते हुए भारत को सुपर पावर बनाने की ओर प्रयासरत् थे।

भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति बने। वे भारत रत्न से सम्मानित होने वाले तीसरे राष्ट्रपति हैं। भारत के मिसाइल कार्यक्रम में जनक, डॉ. कलाम ने देश को 'अग्नि' एवं 'पृथ्वी' जैसी मिसाइल देकर, चीन एवं पाकिस्तान को इनकी रेंज में लाकर, दुनिया को चौंका दिया।

एक बार एयरफोर्स के पायलेट के साक्षात्कार में 9 वें नम्बर पर आने के कारण (कुल 8 प्रत्याशियों का चयन करना था) उन्हें निराश होना पड़ा था। वे ऋषिकेश बाबा शिवानन्द के पास चले गए एवं अपनी व्यथा सुनाई। बाबा ने उन्हें कहा–

Accept your destiny and go ahead with life. You are not destined to become an Airforce Pilot. What you are destined to become is not revealed now but it is predetermined. Forget this failure, as it was essential to lead you to your existence. Become one with yourself, my son. Surrender yourself to the wish of God.

बाबा शिवानन्द का कहने का अर्थ यह था कि असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं। यह असफलता आपकी दूसरी सफलताओं के द्वार खोल सकती है। तुम्हें जीवन में कहाँ पहुँचना है, इसका पता नहीं। आप कर्म करो, ईश्वर पर विश्वास करो।

डॉ. कलाम का जीवन, हर उस नवयुवक के लिए आदर्श प्रेरणा स्त्रोत हैं, जो अपने जीवन में एक असफलता मिलने पर ही निराश हो जाते हैं। डॉ. कलाम ने अपने सारे जीवन में नि:स्वार्थ सेवा कार्य किया। उनका राष्ट्र प्रेम और उनका देशभक्ति का जज्बा हर भारतीय के लिए सबब एवं प्रेरणा का पुंज है और हमेशा रहेगा।

तकनीकी संसाधनों से सामाजिकता का हनन हुआ है।

मदन बघेल
बी.एससी. (तृतीय वर्ष)

विगत सत्र को देखते हुए अधिकांश जन को विश्वास ही नहीं अपितु इन्हें आभास भी है कि तकनीकि संसाधन का महत्व आज एक ऐसी कुंजी है, जो मानव की समस्याओं रूपी तालों को क्षणभर में खोलने की क्षमता रखती है। क्योंकि कोरोनाकाल में इन संसाधनों के अलावा हमारे पास और कोई संसाधन होते या ये संसाधन न होते, तो फिर आज यह लेख संभव ना हो पाता, लेकिन जैसा की हम जानते हैं कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, तो इसका पहला महत्वपूर्ण पहलू तो इसके लाभ हैं, इसके विपरीत दूसरा पहलू प्राकृतिक व सामाजिक हानि भी है।

तकनीकि संसाधनों में बढ़ोत्तरी हमें हर क्षण सामाजिक व पर्यावरण क्षेत्र में लाभ तो प्रदान कर ही रहा है, लेकिन यह लाभ हमें भारी भी पड़ रहा है। जो व्यक्ति इन संसाधन को खरीदने में सक्षम है तो ठीक है, अगर नहीं तो उसकी हालत का अंदाजा हम यहाँ बैठे–बैठे नहीं लगा सकते। तकनीकि संसाधन में हर एक नई पहल एवं कम्प्यूटर विभाग में हर एक नया एप्लीकेशन बेरोजगारी के मार्ग के एक नये दरवाजे को खोलता है।

आज हमें हर काम के लिए एक डिजिटल स्क्रीन पर अपना अधिकतम समय गुजराने के लिए मजबूर होना पड़ता है। जिसके परिणामस्वरूप इसका इफेक्ट हमारी आँखों के साथ–साथ हमारे दिमाग पर भी पड़ रहा है। आज समाज में कुछ दशकों पहले नागरिकों में तनाव व क्रोध के आँकड़े आज के नागरिकों से कम हुआ करते थे। इसका कारण भी इन्हीं तकनीकि संसाधनों के कारक जैसे– सोशल मीडिया का दुरूपयोग, डिजिटल उपकरणों में गेमिंग करने की अधिकता व इन्हीं से संबन्धित फिल्म जगत का कुछ दशकों पहले का समाज के उन पहलुओं को दिखाना, जो अश्लील विचारों व फूहड़पने से भरपूर हैं, आज अधिकांश युवा इसका अच्छा खासा शिकार है। परिणामस्वरूप इन युवाओं को ऐसी विलक्षण बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का रुझान आज के दिनों में शारीरिक दक्षता में ना होकर इन्हीं समस्याओं को गले लगाने में लग रहा है। आज के नियमित रूप से मोबाइल उपयोग में अधिकांश लोग रोगी से जाने पड़ते है। उदाहरण के लिए मेरी माताजी 6–7 वर्ष पूर्व मुझ पर गर्व किया करती कि मैं उनकी अपेक्षा कुशलता से मोबाइल का उपयोग कर सकता था। पर अब ये कुशलता मेरे हृदय में लत का विशाल आकर ले लेती है, तो फिर में केवल आज अपने परिवार के लिए जिंदा लाश के समान ही हूँ और अगर बात करें धोखाधड़ी व चोरी की तो आप इसमें तकनीकि विकास का एक नया रूप देख सकते हैं।

आइये बात करें यातायात की दिन–प्रतिदिन वायु प्रदूषण की बढ़ोत्तरी व ग्लोबल वार्मिंग की नई खबरें भी आप बड़ी ही आसानी से देख सकते हैं। लेकिन देखेगा कौन ? क्योंकि आज का मनुष्य सच्चाई देखने में नहीं अपितु झूठ का काला सच पहनकर समाज को दिखाने में विश्वास करता है। आज के समय में सभी लोगों की प्राइवेसी की बात करें तो आप सुरक्षा की नजर से दूर जाते नजर आएंगे। क्योंकि दिन–प्रतिदिन नये साइवर क्राइम /अटैक्स को विभिन्न नकारात्मक स्त्रोतों से भी देखा व सुना जा सकता है।

आज मैं शहरों में विकसित उन इमारतों को देखता हूँ, तो विचारमग्न होकर अचानक अचंभित भी होता हूँ। क्योंकि जितनी ऊँचाई की इमारतों को हम बनाते हैं, तो उसके अवयवों की पूर्ति हेतु हम पृथ्वी को उससे कई गुना खोद डालते हैं।

निम्न श्लोक को तो आपने सुना ही होगा–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत्।।

ॐ शान्ति! ॐ शान्ति!! ॐ शान्ति!!!

अर्थ – "सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दु:ख का भागी न बनना पड़े।"

क्या आज हम वास्तव में ऐसी विचारधारा मन में रखते हैं, जी नहीं हम हमेशा यह कल्पना करते हैं कि हमसे उच्चपदासीन व्यक्ति ही भ्रष्ट हैं, तो हमारे करने से क्या होगा ? नहीं ! हमें याद रखना चाहिए अटल बिहारी जी के उन वचनों को जो सरकारों के आने जाने पर विचार करके, इस देश की मंगल भावना पर आधारित हैं। इसी प्रकार मैं भी यह कहने का प्रयास कर रहा हूँ कि प्रोद्यौगिकी बढ़ेगी व उसके दुष्परिणाम भी आएंगे, लेकिन हमें प्रकृति व मानव के स्वास्थ्य के मंगलमय उपस्थिति की कामना के साथ–साथ निरंतर कर्मशील रहना चाहिए।

माना आज हम उन संसाधनों से काल्पनिक खुश तो हैं व आगे आने वाली पीढ़ी भी खुश होंगी। लेकिन एक बार आप स्वयं से भी प्रश्न करें कि जो प्राकृतिक संसाधन व अनावरण को हमने देखा हैं, क्या इस प्रकार की उन्नति से आने वाली पीढ़ी भी परिचित हो पायेगी ?

मित्रता

साक्षी राठौर, शालिनी राठौर
बी.एस–सी (तृतीय वर्ष)

(बातों–बातों में – 'दोस्ती कैसी होनी चाहिए?'आपकी दोस्ती में दुनिया को आप खुद से कितना जुड़ाव महसूस करते हैं। इस कहानी में दोस्ती पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि मित्रता किस प्रकार से तथा किस हद तक निभाई जा सकती है।)

आप सभी लोग जानते हैं कि जिन्दगी में एक खास दोस्त का होना कितना आवश्यकता है। हम चाहें खुश हों या दुखी हों बिना झिझक के अपने मन की बात अपने मित्र को बता देते हैं क्योंकि हमें विश्वास होता है कि हमारा मित्र हमारी मदद जरुर करेगा। सच्ची दोस्ती वह होती है जो हर परिस्थिति में आपका साथ दे इसलिए हम आपको दो ऐसे दोस्त की कहानी बताने जा रहे हैं जिसे सुनकर आपको सच्ची मित्रता का एक अनुभव होगा।

एक छोटे से शहर में राजू और लता एक दम्पत्ति एक साथ रहते थे उनका व्यक्तिगत जीवन ठीक प्रकार से भली–भाँति अच्छा चल रहा था। परन्तु विवाह के कई सालों तक भी उनके कोई संतान न थी इसलिए उन्होंने अपने बहन की बेटी को गोद ले लिया उन्होंने उसका नाम रिया रखा। रिया बचपन से ही हर प्रकार के काम में बहुत उत्साहित होती थी उसके आने से घर में बहुत खुशियाँ आई। राजू का एक मित्र था जिसका नाम था नीरज। नीरज भी अपने परिवार के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहा थ मित्रता के नाते नीरज और राजू दोनों का एक दूसरे के घर आना जाना लगा रहता था। जिससे नीरज की बेटी रितिका और रिया भी मित्र बन गए।

रिया बचपन से ही होशियार थी और उसका हर विषय में बहुत बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने का उत्साह बना रहता था। रिया और रितिका की मित्रता बहुत अच्छी थी। उनकी मित्रता इतनी अच्छी थी कि सब लोग उनकी मित्रता की बहुत तारीफ करते थे। सब कुछ ठीक चल रहा था परन्तु समय के अनुसार सब कुछ बदल जाता है। जिस प्रकार शुरुआत में रिया को उसके माता –पिता बहुत प्यार करते थे परन्तु धीरे–धीरे उनका रिया के प्रति प्यार कम होता गया

और उन्होंने उसके साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। उनका व्यवहार दिन पर दिन रिया के प्रति बहुत बुरा होता गया। वे रिया को पढ़ने नहीं जाने देते थे उन्होंने रिया को पैसे देने के लिए भी मना करना चालू कर दिया। और रिया को हर चीज के लिए ताने देना चालू कर दिया। रिया बहुत रोती परन्तु किसी से कुछ न बोल पाती परन्तु रिया की सहेली रितिका उसके कुछ बिना बताए सब कुछ समझ जाती। रितिका उसकी हर प्रकार से जैसी भी जरूरते उसकी मदद करती। समय काफी बीत चुका था। रिया पढ़ने में बहुत ही होशियार थी इसलिए वो हमेशा रितिका को समझा देती थी। एक बार की बात है दोनों रिया व रितिका लुटेरो के चगुल में फंस गयी रितिका तो बचकर निकल आई। परन्तु रिया फंस गई थी। परन्तु यह जानते हुए कि उनके पास जाकर वो भी फंस जाएगी। बिना परवाह किए वह फिर भी उसे बचाने के लिए चली गई और उसने उन लुटेरों में से एक के हाथ में इतनी तेज काट लिया जिससे रिया छूट गई और दोनों भाग गए।

रिया और रितिका दोनों ही बहुत बहादुर थीं जिसमें रिया का पढ़ाई में ज्यादा मन लगता था वहीं रितिका का खेलकूद आदि में ज्यादा ध्यान था। दोनों पढ़ लिखकर बढ़े हो और दोनों ने कॉलेज में दाखिला लिया। दोनों ही
ही लोग मन लगाकर पढ़ते थे साथ ही अपनी मित्रता पर पूरा ध्यान देते थे। दोनों की परीक्षा नजदीक आ गई। दोनों के पास परीक्षा की तैयारी का भरपूर समय था परन्तु रिया के घरवाले उसे पढ़ने का समय नहीं देते थे वह घर का सारा काम करती और साथ ही रात–रात भर जागकर पढ़ाई करती उसे पढ़ने के लिए समय भी नहीं मिल पाता था वही दूसरी ओर रितिका के घर वालों ने उसे पूरा पढ़ने के लिए ही छोड़ दिया। दोनों मित्र की परीक्षा का दिन था और दोनों बहुत ही खुश थे और दोनों की पूर्ण तैयारी थी दोनों की परीक्षा अच्छी ही हुई थी और उसके एक माह बाद परीक्षा का परिणाम घोषित होना था।

एक माह निकल चुका था परीक्षा का परिणाम घोषित होने का कुछ ही समय शेष रह गया था। परन्तु जब परिणाम सामने आया जिसका किसी को भी आभास नही था। रिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिससे उसके बुरे व्यवहार करने वाले माँ–बाप ने भी इसे खूब प्यार किया और आश्चर्यचकित रह गए। वहीं दूसरी ओर रितिका परीक्षा में फेल हो गई और उसका रो–रोकर बुरा हाल था, रितिका ने पढ़ाई वहीं खत्म करने की ठान ली थी, रितिका की पूरी उम्मीद टूट चुकी थी परन्तु उसने हिम्मत नही हारी और उसकी नौकरी लग गई और रिया ने भी धीरे–धीरे मेहनत करके नौकरी लगा ली। दोनों अपनी जिंदगी में सफल हो गयी और सफलता के वाद भी उनकी दोस्ती सबको प्रेरणा दे गई।

जिन्दगी में बहुत सारे दोस्त बनाना कोई खास बात नहीं है, लेकिन एक ही दोस्त के साथ जिन्दगी भर साथ निभाना यह खास बात है।

निष्कर्ष – इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम कोई भी रिश्ता निभाएं परन्तु मन व अद्ध से निभाएं और दोस्ती ऐसी हो जो किसी के बुरा वक्त आने पर साथ नही छोड़ना चाहिए।

धुँधली सी यादें...

डॉ. प्रदीप जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

स्कूल के चार पक्के दोस्तों की एक आँखें नम करने वाली कहानी है। जिन्होंने एक ही स्कूल में कक्षा बारहवीं तक पढ़ाई की है। उस समय शहर में एक इकलौता लग्जरी होटल था। कक्षा बारहवीं की परीक्षा के बाद उन्होंने निश्चय किया कि हमें उस होटल में जाकर चाय–नाश्ता करना चाहिए। उन चारों ने मुश्किल से चालीस रूपये जमा किए, रविवार का दिन था और साढ़े दस बजे वे चारों साइकिल से होटल पहुँचे। दिन, महीने, साल बीत गए।

पचास वर्षों में उस शहर में आमूल–चूल परिवर्तन आया, शहर की आबादी बढ़ी, सड़कों, फ्लाई ओवर ने महानगरों की सूरत बदल दी। अब वह होटल फाइव स्टार होटल बन गया था, वेटर कालू अब कालू सेठ बन गया और इस होटल का मलिक बन गया। पचास साल बाद, निर्धारित तिथि 1 अप्रैल को दोपहर में, एक लग्जरी कार होटल के दरवाजे पर आई। सीताराम कार से उतरा और पोर्च की ओर चलने लगा, सीताराम के पास अब तीन ज्वैलरी शो रूम हैं। सीताराम होटल के मालिक कालू सेठ के पास पहुँचा, दोनों एक दूसरे को देखते रहे। काले सेठ ने कहा कि रविशरण सर ने आपके लिए एक महीने पहले एक टेबल बुक किया था। सीताराम मन ही मन खुश था कि वह चारों में से पहला था, इसलिए उसे आज का बिल नहीं देना पड़ेगा और सबसे पहले आने के लिए अपने दोस्तों का मजाक उड़ाएगा। एक घंटे में जयराम आ गया, जयराम शहर का बड़ा राजनेता व बिजनेस मैन बन गया था। अपनी उम्र के हिसाब से वह अब एक सीनियर सिटिजन की तरह लग रहा था। अब दोनों बातें कर रहे थे और दूसरे मित्रों का इंतजार कर रहे थे, तीसरा मित्र रामचन्द्र आधे घंटे में आ गया उससे बात करने पर दोनों को पता चला कि रामचन्द्र बिजनेसमैन बन गया है। तीनों मित्रों की आँखें बार–बार दरवाजे पर जा रही थी, रविशरण कब आएगा ? इतनी देर में कालू सेठ ने कहा कि रविशरण सर की ओर से एक मैसेज आया है, तुम लोग चाय–नाश्ता शुरू करो, मैं आ रहा हूँ। तीनों पचास साल बाद एक–दूसरे से मिलकर खुश थे। घंटों तक मजाक चलता रहा, लेकिन रविशरण नहीं आया। कालू सेठ ने कहा कि फिर से रविशरण सर का मैसेज आया है, आप तीनों अपना मनपंसद मेन्यू चुनकर खाना शुरू करें। खाना खा लिया तो भी रविशरण नहीं दिखा, बिल माँगते ही तीनों को जबाब मिला कि ऑनलाइन बिल का भुगतान हो गया है। शाम के आठ बजे एक युवक कार से उतरा और भारी मन से निकलने की तैयारी कर रहे तीनों मित्रों के पास पहुँचा, तीनों उस आदमी को देखते ही रह गए। युवक कहने लगा, मैं आपके दोस्त का बेटा यशवर्धन हूँ, मेरे पिता का नाम रविशरण है। पिताजी ने मुझे आज आपके आने के बारे में बताया था, उन्हें इस दिन का इंतजार था, लेकिन पिछले महीने एक गंभीर बीमारी के कारण उनका निधन हो गया। उन्होंने मुझे देर से मिलने के लिए कहा, अगर मैं जल्दी निकल गया, तो वे दुखी होंगे, क्योंकि मेरे दोस्त तब नहीं हँसेंगे, जब उन्हें पता चलेगा कि मैं इस दुनिया में नहीं हूँ, तो वे एक–दूसरे से मिलने की खुशी खो देंगे। इसलिए उन्होंने मुझे देर से आने का आदेश दिया। उन्होंने मुझे उनकी ओर से आपको गले लगाने के लिए भी कहा, यशवर्धन ने अपने दोनों हाथ फैला दिए। आसपास के लोग उत्सुकता से इस दृश्य को देख रहे थे, उन्हें लगा कि उन्होंने इस युवक को कहीं देखा है। सीताराम, जयराम, रामचन्द्र और रविशरण चाय–नाश्ता करते हुए बातें करने लगे। उन चारों ने सर्वसम्मति से फैसला किया कि पचास साल बाद हम 1 अप्रैल को इस होटल में फिर मिलेंगे। तब तक हम सब को बहुत मेहनत करनी चाहिए, यह देखना दिलचस्प होगा कि किसकी कितनी प्रगति हुई है। जो दोस्त उस दिन बाद में होटल आएगा उसे उस समय का होटल का बिल देना होगा। उनको चाय नाश्ता परोसने वाला वेटर कालू यह सब सुन रहा था, उसने कहा कि अगर मैं यहाँ रहा, तो मैं इस होटल में आप

सब का इंतजार करूँगा। आगे की शिक्षा के लिए चारों अलग–अलग हो गए। सीताराम शहर छोड़कर आगे की पढ़ाई के लिए अपने फूफा के पास चला गया था, जयराम आगे की पढ़ाई के लिए अपने चाचा के पास चला गया, रामचन्द्र और रविशरण को शहर के अलग–अलग कॉलेजों में दाखिला मिला। आखिरकार रामचन्द्र भी शहर छोड़कर चला गया। यशवर्धन ने कहा कि मेरे पिता शिक्षक बने, और मुझे पढ़ाकर कलेक्टर बनाया, आज मैं इस शहर का कलेक्टर हूँ। सब चकित थे, कालू सेठ ने कहा कि अब पचास साल बाद नहीं, बल्कि हर पचास दिन में हम अपने होटल में बार–बार मिलेंगे, और हर बार मेरी तरफ से एक भव्य पार्टी होगी। अपने दोस्त मित्रों व सगे–सम्बन्धियों से मिलते रहो, अपनों से मिलने के लिए बरसों का इंतजार मत करो, जाने कब किसकी बिछड़ने की बारी आ जाए और हमें पता ही न चले। शायद यही हाल हमारा भी है। हम अपने कुछ दोस्तों को सुप्रभात, शुभरात्रि आदि का मैसेज भेज कर जिंदा रहने का प्रमाण देते हैं। जिंदगी भी ट्रेन की तरह है जिसका जब स्टेशन आयेगा, उतर जायेगा। रह जाती हैं सिर्फ धुंधली सी यादें...

सच्चा गुरू अपने शिष्यों में जीवित रहता है

डॉ. एस.पी. सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, जंतु विभाग

गुरू और शिष्य के संबंधों के पीछे की आध्यात्मिक अवधारणा है कि गुरू–शिष्य संबंध और इस संबंध की परंपरा जानना आवश्यक है हमारे पारंपरिक संज्ञान में 'संसार को संबंधों का संसार कहा गया है, कुछ संबंध हैं जो रक्त संबंध हैं, वे हमारा चुनाव नहीं जो सामाजिक संबंध हैं, उन्हें हम अपने प्रयोजन से निर्मित करते हैं, गुरू–शिष्य संबंध न तो रक्त संबंध हैं और न ही किसी प्रयोजन से बनाया गया सामाजिक संबंध यह तत्वत: एक 'आध्यात्मिक संबंध है।

गुरू के पास हम एक विशेष ज्ञान , विशेष प्रति, विशेष साधना, विशेष सर्जना, विशेष आचरण और विशेष सिद्धि के लिये जाने जाते हैं। एक शिष्य का 'समर्पण' ही इस संबंध की आधारशिला है, गुरू–शिष्य परंपरा का पहला रूप आध्यात्मिक साधना से संबंध रखता है, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए सदियों–सदियों से भारत में जिज्ञासू शिष्यत्व ग्रहण करने सिद्ध गुरूओं के पास जाते रहे हैं। योग साधना और तंत्र साधना तो बिना गुरू के संभव नहीं है।

आज के शैक्षणिक वातावरण में गुरू की क्या व्याख्या है?

आज शिक्षा के केन्द्र में 'ज्ञान नहीं 'जानकारी है, प्रतिभा और 'पात्रता' का प्रश्न बचा नहीं है, 'गुरू' की जगह 'नौकरीपेशा अध्यापक' ने ले ली है और 'शिष्य की जगह 'छात्र' ने, विद्या प्राप्त करने की 'जिज्ञासा का प्रश्न नहीं, शिक्षा प्राप्त करने की अनिवार्य बाध्यता है। सारा ध्यान केन्द्रित है ऐसी शिक्षा पर जो नौकरी दे सके, इसे कहा गया–व्यवसायिक शिक्षा।

अब 'ज्ञान' की शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रहा, दर्शन, साहित्य, भाषा या ललित कलाओं की शिक्षा 'रोजगार नहीं दे सकती तो इनका कोई मूल्य नहीं बचा। प्राकृतिक विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन तथा कम्प्यूटर की शिक्षा ही सबको चाहिये। रही–सही कसर शिक्षा के व्यवसायीकरण ने पूरी कर दी। शिक्षा अब 'लाभदायक धंधा' है और दुष्ट राजनीति के पंजे में फंसी है। कुछ चींजें जीवन में ऐसी रही हैं जो 'धंधे' या लाभ हानि के 'गणित और राजनीति से बची रहीं शिक्षा उनमें एक थी।

अब यह संभव नहीं रहा, लेकिन एक बात तय है। परंपरा ने हमें बताया कि 'विद्या का 'धंधा' नहीं किया जा

सकता। जो लोग विद्या का भी धंधा कर लें वे एक दिन अपनी 'आत्मा' का भी धंधा शुरू कर देते हैं फिर कोई सीमा नहीं, परंपरा ने हमें यह भी बताया कि जानकारी कभी ज्ञान का विकल्प नहीं हो सकती जो समाज शिक्षा के नाम पर जानकारी को ज्ञान का विकल्प बना रहे हैं वे देर–सबेर एक सम्पन्न मूर्ख समाज में बदल जायेंगे यही उनकी नियति है।

ज्ञान अपना विकल्प स्वयं है, विद्या सिर्फ शिक्षा नहीं वह एक गुरू की सानिध्य में प्राप्त होने वाला दुर्लभ संज्ञान है, इसलिये विद्या का क्षेत्र गुरू–शिष्य परंपरा का क्षेत्र रहा है। आध्यात्मिक साधना लालित्य के क्षेत्र में सिद्धि और विद्या के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति ये तीन क्षेत्र विशेष रूप से भारत में गुरू–शिष्य परंपरा के क्षेत्र रहे हैं। जब भी हम गुरू शिष्य परंपरा का स्मरण करें, इन तीनों क्षेत्रों को उल्लेखित करना चाहिए।

मौजूदा समय में गुरू की जरूरत

अब सवाल यह है कि विज्ञान और तकनीक के फलते–फूलते समय और समाज में गुरू की उपस्थिति कितनी जरूरी और महत्वपूर्ण रह गई है? इस पर डॉ. कपिल तिवारी का कहना है कि समय के परिवर्तन से विज्ञान और तकनीक ने अनेक साधन और विधियाँ हमें दी हैं। थोड़ा समझने की कोशिश करिये तकनीक स्वयं आध्यात्म, लालित्य और विद्या के क्षेत्र में क्या कर सकती है? वह अभिव्याक्ति और संप्रेषण के ढंग में परिवर्तन कर सकती है, स्वयं ज्ञान, सौंदर्यबोध और विद्या नहीं हो सकती।

आखिर हम इतने सारे साधनों और तकनीक के बावजूद क्यों कुछ विशिष्ट और दुर्लभ रूपाकारों और शैलियों के ज्ञान के लिये गुरू–शिष्य परंपरा के कुछ केंद्र स्थापित कर रहे हैं? हम अनेक शास्त्रीय नृत्यों और ध्रुपद जैसी संगीत शैलियों के लिये गुरू–शिष्य परंपरा पर आधारित कुछ कला केंद्र स्थापित कर उसकी पुनर्स्थापना कर रहे हैं? तकनीक ज्ञान और सौन्दर्यबोध का विकल्प नहीं है। उसकी भूमिका अब संरक्षण, दस्तावेजीकरण और अभिव्यक्ति के क्षेत्र का विस्तार करने में हैं।

तकनीक की अपनी यह क्षमता बड़ी विशाल है और वहां उसका उपयोग किया जाना चाहिये, प्रविधि और तकनीक संगीत पैदा नहीं कर सकती। लेकिन संगीत रसिकों के समाज का दायरा बहुत बढ़ा सकती हैं और उसने यह किया भी है। पहले एक महान संगीतकार के अवसान के साथ ही एक स्वर सदा के लिए खो जाता था। शिष्यों और घरानों के रूप में एक परंपरा जरूर बचती थी। लेकिन स्वयं उस आवाज को बचाने का कोई उपाय नहीं था। हमें तकनीक का ऋणी होना चाहिए कि उसने यह दिया।

भारत में गुरू–शिष्य परंपरा और एक विशेष विचार के आधार पर विकसित 'संप्रदाय' या 'गुरूकुल' रहे हैं जहां समवेत रूप से एक विचार का विकास बहुत सारे लोगों ने एक साथ किया और वह पंरपरा बन गई। दरअसल में यह कहना चाहता हूँ कि भारत में गुरू–शिष्य परंपरा को कोई आयामों में समझने की जरूरत है। तकनीक और प्रविधि के क्षेत्र दूसरे हैं। वे कला के क्षेत्र में सम्प्रेषण और माध्यम के विस्तार में भूमिका निभाते हैं। स्वयं कला का विकल्प नहीं बन सकते।

कला सृजन मानवीय अद्वितीयता और अनूठापन है। वह प्रतिभा और साधना है, वह सौंदर्यबोध की विशेष क्षमता और अभिव्यक्ति का कौशल है। जब तक यह 'अद्वित्तीयता' है तब तक तकनीकी भूमिका सीमित होगी।

महिला सशक्तीकरण

डॉ. रूबी यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

महिला सशक्तीकरण से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। सशक्तीकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपरिक पितृसत्तामक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और युएनडीपी आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। महिला सशक्तीकरण भौतिक या आध्यात्मिक, शारिरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सश्क्तीकरण क्या है?

महिला सशक्तीकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाऐं शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तीकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके।

भारत में महिला सशक्तीकरण

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है और विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अगर महिला श्रम में योगदान दे तो भारत की विकास दर दहाई की संख्या में होगी । फिर भी यह दुर्भाग्य की बात है कि सिर्फ कुछ लोग महिला रोजगार के बारे में बात करते हैं जबकि अधिकतर लोगों को युवाओं के बेरोजगार होने की ज्यादा चिंता है। हाल ही में प्रधानमंत्री की 'आर्थिक सलाहकार परिषद' की पहली बैठक में 10 ऐसे प्रमुख क्षेत्रों को चिन्हित किया गया जहां ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। दुर्भाग्य की बात यह है कि महिलाओं का श्रम जनसंख्या में योगदान तेजी से कम हुआ है। यह लगातार चिंता का विषय बना हुआ है। लेकिन फिर महिला रोजगार को अलग श्रेणी में नहीं रखा गया है नेशनल सैंपल सर्वे (68 वां राउंड) के अनुसार 2011-12 में महिला सहभागिता दर 25.51% थी जो कि ग्रामीण क्षेत्र में 24.8% और शहरी क्षेत्र में मात्र 14.7% थी। जब रोजगार की कमी है तो आप महिलाओं के लिए पुरुषों के समान कार्य अवसरों की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। एक पुरुष ज्यादा समय तक काम कर सकता है उसे मातृत्व अवकाश की जरूरत नहीं होती है और कहीं भी यात्रा करना उसके लिए आसान होता है निर्माण कार्यों में महिलाओं के लिए पालना घर या शिशुओं के लिए पालन की सुविधा मुहैया कराना जरूरी होता है।

ऐसे कई कारण हैं जिनसे भारत की महिला श्रमिक सहभागिता दर्ज में पिछले कुछ वर्षो में गिरावट आई है और यह दर दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के बाद सबसे कम है। नेपाल, भूटान और बांग्लादेश में जनसंख्या के अनुपात के अनुसार महिला रोजगार ज्यादा है। इन क्षेत्रों के पुरुष काम करने के लिए भारत आतें हैं और उनके पीछे महिलाऐं अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए खेतों में काम करती हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महिलाऐं मात्र 17% का योगदान दे रही हैं। अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार क्रिसटीन लगार्डे का कहना है कि ज्यादा से ज्यादा महिलाऐं अगर श्रम में भागीदारी करें तो भारत की GDP 27% तक बढ़ सकती है।

समान वेतन का अधिकार – समान पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार अगर बात वेतन या मजदूरी की हो तो लिंग के आधार पर किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया जा सकता।

कार्यस्थल में उत्पीड़न के खिलाफ कानून – यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत आपको वर्किंग प्लेस पर हुए यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का पूरा हक है। केंद्र सरकार ने भी महिला कर्मचारियों के लिए नए नियम लागू किए हैं, जिसके तहत वर्किंग प्लेस पर यौन शोषण के शिकायत दर्ज होने पर महिलाओं को जांच लंबित रहने तक 90 दिन का पैड लीव दी जाएगी।

कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार – भारत के हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह एक महिला को उसके मूल अधिकार 'जीने के अधिकार' का अनुभव करने दें। गर्भादान और प्रसव से पूर्व पहचान करने की तकनीक लिंग चयन पर रोक अधिनियम (PCPNDT) कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार देता है।

संपत्ति पर अधिकार – हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम के तहत नये नियमो के आधार पर पुश्तैना संपत्ति पर महिला और पुरुष दोनों का बराबर हक है।

गरिमा और शालीनता के लिए अधिकार – किसी मामले में अगर आरोपी एक महिला है तो उस पर की जाने वाली कोई भी चिकित्सा जांच प्रक्रिया किसी महिला द्वारा या किसी दुसरी महिला की उपस्थिति में ही की जानी चाहिए।

महिला सशक्तीकरण – महिलाओं का पारिवारिक बंधनो से मुक्त होकर अपने और अपने देश के बारे में सोचने की क्षमता का विकास होना ही महिला सशक्तीकरण कहलाता है।

महिला श्रेष्ठता – समाज में महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए क्योंकि आज के समय में महिला हर क्षेत्र में आगे है चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर खेल के क्षेत्र में

About Chemistry

Nandni Sharma
B.Sc. (IIIrd Semester) Bio

If life is chemistry then,
Boil your ego,
Melt your sorrow,
Expand your happiness,
enhance your kinetic energy,
Filter your Mistake,
Think like a proton and,
Stay positive.

Chemistry Says :
"Old bond break When new ones are formed"

Important of English for Students

Dr. Ruby Yadav
Assistant Professor, English Department

English language plays an essential role in our lives as it helps in communication. It is the main language for studying any subject all over the world. English is important for students as it. broadens their minds, develops emotional skills, improve the quality of life by providing job opportunities.

Moreover, the use of English as an International language is growing with time because it is the only medium for communication in many countries. English is also used widely in the literature and media section to publish books, most of the writers write in the English language due to the vast majority of readers know only the English language and they can describe their ideas best in the English language.

Core skills of English Language

As we are aware that English language skills depend upon four core skills. These skills are essential for learning the English language that is:

Listening skills: It improves the imagination and vocabulary of a learner. While listening we used to visualize the scene and memorize in our memory.

Speaking skills: When a learner speaks, he gets to know his mistakes and he can improve it further.

Reading skills: Reading a book or a passage helps in improving the vocabulary and concentration of a learner.

Writing skills: When we write we get to know, what we are writing and do we know the spellings of all words.

If a student master these four skills then his English will automatically improve and gain confidence in presenting his skills.

Why Learning English language is important?

Perfect communication – It is important to speak effectively. People get impressed by those who have good communication skills.

Gain Confidence – If you own good communication skills then your confidence will automatically be high.

Achieve your goal early – Effective English language skills help you meet your career goals quickly.

Effective personality – When we speak effectively and with confidence, anyone can get attracted.

Part of the Global community- English language is a part of the global world. So, if one knows good English then one can interact with others.

Multiple Career Prospects –A person possessing effective communication skills have more career opportunities than others.

Zoology+Botony Department

Zoology Lab

Commerce Department

Botony Lab

Computer Science Department

Computer Science Lab

Physics Department

Physics Lab

Chemistry Department

Chemistry Lab

Math Department

अनुशासन विभाग

English+Library Department

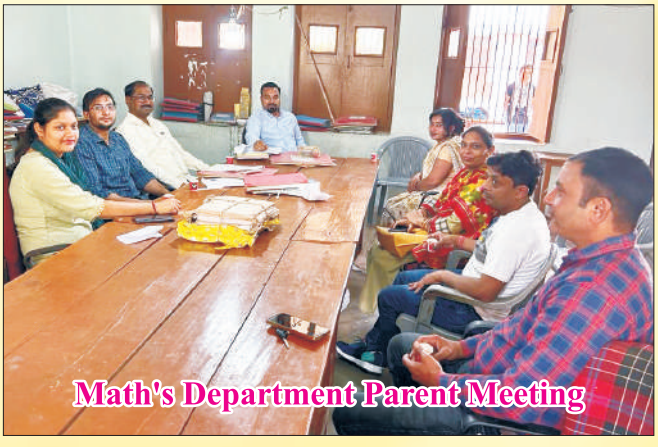

Math's Department Parent Meeting

About the Department of Zoology

Dr. Kuber Singh M.Sc., B.Ed., Ph.D, Incharge of the department Zoology, has a rich teaching experience of more than 20 years at C.L. Jain (P.G.) College Firozabad. He has taught subject such as all Biology, Genetics, Invertebrates, Vertabrates, Embryology, Ecology, Evaluation and Animal behaviour to undergraduate students.

According to new education policy (NEP) our laboratory to rich for practical classes. Approximate 100 to 150 students pass out per year in which several students select in medical line Dr. S.P. singh is also in this department.

About the Commerce Department

The department of commerce was started in 2015 offering undergraduate course B.com and the Postgraduate course M.Com is going to college. We have a competent faculty member with Blending Knowledge and responsiblity which has enriched the performance of the students.

Activities of the Department

In order to enrich the students with knowledge and skills, essential to meet the challenges and reveal them in today's fiercely competitive global business Environment. The Department offers job-oriented courses like Tally, Computer Accounting, ICAI Foundation, and Typewriting classes.

Extension Activities:

Our Staff members conducted special classes for higher secondary students in surrounding villages

Best Practices:

The department provides opportunities for students to exhibit their managerial talent by participating in various competitions

Display of newspaper cuttings for job opportunities in various fields

Students serve rural people to fill out Bank challans and Applications in the Bank.

Students collected small enterpreneur's excellence from various fields

Future Plans:

To develop students for a professional career in accounting, finance, research and higher education.

To organize internation seminars/confrences and guest lectures

To develop a department library

To motivate students to participate in skill development programs

To organize seminars/workshops for enterpreneurial development among the students

Faculties:

Dr. Arun Yadav (Incharge) Assitant Professor (M.Com., Ph.d.)

Dr. K.K. Singh (M.Com, Ph.D)

Assistant Professor

Dr. Rahul Chaturvedi (M.Com, Ph.D)

Assistant Professor

About the computer Science Department

This College is one of the premier & best institutions is Firozabad & Dr. B.R. Ambedkar University, Agra. The Goal of providing Innovation and quality education with high standards to achieve academic excellence. It gives me immense pleasure to lead the department of computer Science. The department has well qualified and eminent faculty. The main objective of the department is to develop the students both personally and professionally to achieve a successful career in industry, Research and Academics.

The computer Science department has excellent infrastructure well-equiped laboratories, and department library with a good collection of books, magazines and journals to ensure quality education, innovative methods of teaching and learning process are adopted to achieve learning abilities through practice, exposure and motivation. For the over all development of students. Students participate in various activities to gain knowledge and Department also conducts student activities to improve their leadership qualities and technical skills.

Faculty are also provided with a platform to upgrade their academic and technical skills by encouraging them to enhance their qualifications and also learn new technologies by participating in FDP's workshops, conferences and seminars.

I feel it as a privilege to lead this department and also congratulate the faculty and students for their excellent performance. I will put all my efforts and give my best for the overall development of the government.

The department of Computer Science is a center of excellence providing in-depth technical knowledge and opportunities for innovation and research with up-to-date computer facilities.

It has grown by leaps and bounds over the last two decades in terms of infrastructure, courses and faculty. The department started B.,Sc. Computer Science course in the year 1999. Interact with students and staff of other top colleges in Dr. B.R. Ambedkar University, Agra

आख्या – रसायन विज्ञान विभाग

1– रसायन विज्ञान विभाग में छ: प्राध्यापक कार्यरत हैं। सभी प्राध्यापक अपने–अपने कार्य का विधिपूर्वक एवं संतोषजनक निर्वहन कर रहे हैं प्राध्यापकों एवं छात्रों को तालमेल संतोषजनक है छात्रों की प्रत्येक कठिनाई को विभाग हर समय दूर करने के लिए तत्पर रहता है। सभी प्राध्यापकों का मृदु व्यवहार छात्रों को प्रोत्साहित करता है।

2– विभाग में पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों की एक रोल (Postgraduate study and research council) गठित की गयी है जिसमें छात्र/छात्राओं को अनुसंधान परिषद से जोड़ा गया है तथा छात्र/छात्राऐं इसमें बढ़ –चढ़कर भाग ले रहे हैं।

3– विभाग में सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक कक्षायें समय से पूर्ण हो गयी हैं तथा छात्रों को यह भी निर्देश दे दिया है कि अगर किसी की विषय सम्बन्धित समस्या हैं तो वे प्राध्यापकों से मिलकर दूर कर सकते हैं।

4– विभाग द्वारा छात्र/छात्राओं के हितों को देखते हुए Parent Teacher Meeting (PTM) का आयोजन भी किया जा रहा है।

5– विभाग में उपस्थित सभी प्राध्यापक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी महाविद्यालय में सही निर्धारित समय से उपस्थित होकर महाविद्यालय व विभाग की सभी गतिविधियों का पूर्णत: पालन कर रहे हैं।

6– महाविद्यालय द्वारा M.Sc. (Final) Chemistry की छात्रा दीपाली शर्मा को Gold Medal दिया गया। उसने सर्वाधिक अंक प्राप्त किया गया था

7– National Science Day पर 28 February को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

आख्या – गणित विभाग

1– गणित विभाग में चार प्राध्यापक कार्यरत हैं। जिसमें दो एसोसिएट प्रोफेसर एवं दो असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। सभी प्राध्यापकों एवं छात्रों का तालमेल भी उत्कृष्ट है। सभी प्राध्यापकों का मृदु व्यवहार छात्रों को प्रोत्साहित करता है।

2– विभाग में पोस्टग्रेजुएट छात्रों की एक शैल (Post gradute study and Research Council) गठित की गई है।जिसमें छात्र/छात्राओं को अनुसंधान परिषद से जोड़ा गया है तथा छात्र/छात्राऐं इसमें बढ़ –चढ़कर भाग ले रहें हैं।

3– वर्तमान में गणित विषय में पाँच शोधार्थी शोध कर रहे हैं। विभाग में तीन दर्शन से अधिक शोधार्थी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। 100 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं में छप चुके हैं।

4– विभाग में थ्योरी तथा प्रयोगात्मक कक्षायें समय से पूर्ण हो गयीं हैं तथा छात्र/छात्राओं को यह भी निर्देश दिया गया है कि अगर किसी की विषय सम्बन्धित समस्या है तो वे प्राध्यापकों से मिलकर दूर कर सकते हैं।
गम्भीरता के अनुसार महाविद्यालय द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती है।

5– NEP के अन्तर्गत सभी सेमेस्टरों की पुस्तकें डॉ. ऊषा सिंह तथा डॉ. उदयराज सिंह द्वारा विभिन्न प्रकाशनों में प्रकाशित हैं।

6– विभाग द्वारा छात्र/छात्राओं के हित को देखते हुए 18-3-23 को एक Parent Teacher Meeting (PTM) का आयोजन किया गया था।

7– महाविद्यालय स्तर पर M.Sc. (Final) गणित विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर आलोक शर्मा को गोल्ड मेडल दिया गया।

आख्या – वनस्पति विज्ञान विभाग

1. वनस्पति विज्ञान विभाग में दो प्राध्यापक कार्यरत हैं। प्राध्यापकों एवं छात्रों का तालमेल भी उत्कृष्ट है। सभी प्राध्यापकों का मृदु व्यवहार छात्रों को प्रोत्साहित करता है।

2. विभाग में सभी प्राध्यापक व निर्धारित समय से उपस्थित होकर महाविद्यालय व विभाग की सभी गतिविधियों का पूर्णत: पालन कर रहे हैं।

3. विभाग में प्रयोगात्मक कक्षायें समय से पूर्ण हो गयी हैं तथा छात्र/छात्राओं को यह भी निर्देश दिया गया है कि अगर किसी भी विषय से सम्बन्धित समस्या है तो वे प्राध्यापकों से मिलकर दूर कर सकते हैं।

भौतिक विज्ञान की सत्र 2022–23 की प्रगति रिपोर्ट (आख्या भौतिक विभाग)

भौतिक विज्ञान में निम्न प्राध्यापक कार्यरत हैं।

1- डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव
2- श्री हवा सिंह
3- श्रीमती पूजा त्यागी
4- डॉ. रविन्द्र कुमार
5- डॉ. दीपिका चौधरी

भौतिक विज्ञान विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा कक्षाऐं सुचारू रूप से संचालित की जा रही हैं तथा आंतरिक परीक्षा कराकर मूल्यांकन भी हो चुका है।

भौतिक विज्ञान की प्रयोगशाला में अच्छी गुणवत्ता के उपकरण उपलब्ध हैं । तथा NEP-2020 के अनुसार अन्य उपकरण भी मंगाये जा चुके हैं एवं कुछ पुराने उपकरणों की मरम्मत की जा चुकी है।

भविष्य में NEP के अनुसार और भी उपकरण मंगाये जायेंगें। प्राध्यापकों द्वारा छात्र/छात्राओं को अधिकतम प्रैक्टीकल कराये गये है।

सभी छात्र/छात्राओं की प्रायोगिक NOTE BOOK का फरवरी माह के अन्त तक निरीक्षण हो चुका है।

छात्र हित में सभी प्राध्यापक छात्रों की समस्याओं के निस्तारण हेतु हर समय उपलब्ध रहते हैं। विभागाध्यक्ष द्वारा NEP-2020 के अनुसार Text Book जैसे:-

1- Thermodynamics & Kinetic Theory of Gases
2- Practical Physics (Ist Semester)
3- Basic Mathematic in Physics
4- Theory of Nuclear Emission
5- Electricity and Magnetism

राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय जरनल में शोध-पत्र प्रकाशित कराये गये हैं तथा कुछ शोध-पत्रों को प्रकाशित कराने के लिए उन पर कार्य किया जा रहा है।

आख्या – शारिरिक शिक्षा विभाग

सी.एल. जैन महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के द्वारा सत्र 2022–23 में सी.एल. जैन महाविद्यालय के बीएससी प्रथम, द्वित्तीय एवं तृत्तीय वर्ष के उन सभी छात्रों जिन्होंने शारीरिक शिक्षा को एक विषय के रूप में चुना था, की शारीरिक शिक्षा विषय की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षाऐं सुचारू रूप से संचालित की गई। इसमें समस्त छात्र/छात्राओं के सैद्धांतिक कक्षांऐं हेतु समय सारणी में आवंटित समयानुसार संपन्न हुई। प्रयोगात्मक कक्षाओं हेतु निर्धारित वेशभूषा सफेद टी-शर्ट एवं काला लोअर पहनकर कक्षाओं में शामिल हुए। प्रयोगात्मक कक्षा हेतु सभी छात्र छात्राऐं योगासन मेट अथवा दरी भी अपने साथ लायें।

उक्त सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं के साथ ही महाविद्यालय के सभी छात्र छात्राऐं विभिन्न इंडोर एव आउटडोर खेलकूद में शामिल/भाग लेते रहे हैं। जो कि महाविद्यालय के प्राध्यापकों के सहयोग से संचाालित किए जाते रहे। आउटडोर खेलों में वॉलीबॉल और बैडमिंटन छात्र-छात्राओं द्वारा खेला जाता रहा एवं इंडोर खेलों में शतरंज एवं कैरम में छात्र-छात्राऐं प्रतिभाग करते रहे। यह सभी खेलकूद समय सारणी के अनुसार के अनुसार छात्र-छात्राओं के लिए खाली समय में खेलने के लिए उपलब्ध रहे।

इस एकेडमिक सत्र 2022-23 मे एक उपलब्धि महाविद्यालय के लिए ताइकवांडो खेल में रही। ताइकवांडो खेल में महाविद्यालय की बी.कॉम. तृतीय वर्ष की छात्रा काजल शर्मा ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा की अर्न्तमहाविद्यालयी प्रतियोगिता मे अंडर 55 किलोग्राम भार वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके पश्चात काजल शर्मा ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा की विश्वविद्यालय टीम के सदस्य के रूप में शामिल होकर दिनांक 3 जनवरी 2023 से 12 जनवरी 2023 तक गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर में आयोजित राष्ट्रीय अंतर विश्वविद्यालय ताइकवांडो प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

वागवानी समिति वार्षिक रिपोर्ट

डॉ. हेमलता यादव
(असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विभाग)
प्रभारी– बागवानी समिति

महाविद्यालय के सौन्दर्यीकरण करने के लिये सर्वप्रथम प्राचार्य कक्ष के सामने मैदान की साफ–सफाई व पेड़ों की कटिंग करायी गयी। बी.एस.सी. (बायो) के विद्यार्थियों द्वारा डॉ. एस.पी.सिंह (सदस्य) वनस्पति विज्ञान (विभागाध्यक्ष) के सहयोग से Botanical Garden तैयार किया गया। जिसमें Medicinal व Flowering Plant लगाये गये। जो विद्यार्थियों की ज्ञान वृद्धि एवं Plant Description (पौधे के विवरण) में सहायक सिद्ध होगा। समस्त कॉलेज परिसर में से अनावश्यक जंगली पौधो को अलग कर साफ–सफाई की गयी।

महाद्यिालय में रसायन विज्ञान के सामने कोर्टयार्ड (Courtyard) में चारों तरफ क्यारी बनाई गयी व उसमें विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के Flowering Plant लगाये गए। समिति के सदस्य अनेक प्रस्तावों पर भविष्योन्मुख है।

वार्षिक रिपोर्ट AISHE समिति (2022–23)

दीपक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग
प्रभारी– AISHE समिति

भारत सरकार द्वारा शिक्षा मंत्रालय के तत्वाधान में उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत आयोजित ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजूकेशन (AISHE) की शुरूआत वर्ष 2010–11 में की गई थी। इस सर्वे का प्राथमिक प्रयास हर क्षेत्र तक उच्च शिक्षा की पहुँच सुगम करना है, जिससे भारतवर्ष विश्व गुरू की तरह एक बार फिर से जाना जा सके।

महाविद्यालय निरंतर ही प्रारंभ से इस सर्वे में शामिल होता आया है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय द्वारा AISHE (2021–22) हेतु प्रतिभाग किया गया तथा अपना सम्पूर्ण संबधित डाटा निर्धारित प्रारूप एवं मानकों के आधार पर AISHE पोर्टल पर अपलोड किया गया।

भविष्य में भी महाविद्यालय निर्धारित मानकों के अनुरूप ही अपनी कार्य एवं शिक्षण–प्रणाली को जारी रखने के लिए आश्वस्त है तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जन–जन तक अपनी पहुँच बनाने हेतु प्रयत्नशील है।

नगण्य स्थिति

मदन बघेल
बी.एससी (तृतीय वर्ष)

मैं बैठा आज एक परिस्थिति को निहार रहा था,
वो क्षण जब एक लेखक अपनी लेखन कला को खो देता,
वो क्षण जब एक कवि अपनी कविता को भुला देता,
वो क्षण जब एक पंछी अपनी उड़ान को ही उड़ा देता,
जब अध्यापक अपने नाम को छोड़ तटस्थता पर चला जाता,
जब छात्र अपने ज्ञान को छोड़ शून्यता में भटक जाता,
जब प्रेमी अपने प्रेम में विश्वास की हीनता पाता,
जब सैनिक अपने कर्म को स्वीकार ना पाता,
जब साधु अपने ध्यान में अनियंत्रण को पाता,
और तो और ये चलती कलम, कोरा कागज व बेजान
अपनी कार्यशक्ति भुलाते हैं,
उस शून्यता, तटस्थता, उदासीनता का अनुभव किया है आपने ... ?
कुछ क्षण के बाद सब सब रंगीन हो जाता,
प्रेमी प्रेम को पाता,
कवि कविता गुनगुनाता,
छात्र को ज्ञान फिर मिलता,
अध्यापक चौक सरकाता,
मुनि फिर मोक्ष को जाते,
सैनिक फिर गरज जाते,
वो पंछी पंख फड़फाड़ता,
पता ना क्या से स्थिति हमकों पुनः कंधे पर उठाती है,
ना जाने कहाँ से वो साकार सुबह लाती है?

एसिड – अटैक

अनामिका तिवारी
बी.एससी. तृतीय वर्ष, जीवविज्ञान

चलों फेंक दिया तो फेंक दिया .....
अब कसूर भी बता दो मेरा
तुम्हारा इज्हार था, मेरा इन्कार था
बस इतनी सी बात पर फूंक दिया तुमने चेहरा मेरा
गलती शायद मेरी थी प्यार तुम्हारा देख न सकी
इतना पाक प्यार था कि उसको मैं समझ न सकी
अब अपनी गलती मानती हूँ
क्या अब तुम अपनाओगे मुझे?
क्या अब अपना बनाओगे मुझे?
क्या अब सहलाओगे मेरे चेहरे को?
जिन पर अब फफोले है।
मेरी आँखें में आँखें डालकर देखोगे
जो अब अन्दर धंस चुकी है
चलाओगे अपनी अंगुलिया मेरे गालों पर
जिन पर पड़े छालों से अब पानी निकलता है!
हाँ, शायद तुम कर लोगे
तुम्हारा प्यार तो सच्चा ..... है ना?
अच्छा एक बात तो बताओ
ये ख्याल तेजाब का कहाँ से आया? क्या
किसी ने तुम्हें बताया?
या जहन में तुम्हारे खुद ही आया?
अब कैसा महसूस करते हो तुम मुझे जलाकर...?
गौरवान्वित..... ?
या पहले से ज्यादा और भी मर्दाना....?
तुम्हें पता है सिर्फ मेरा चेहरा जला है

जिस्म अभी भी पूरा बाकी है।
एक सलाह दूँ?
एक तेजाब का तालाब बनवाओ
फिर इसमें मुझे छलांग लगवाओ
जब पूरी जल जाऊँगी मैं
फिर शायद तुम्हारा प्यार मुझमें, और गहरा और सच्चा होगा....
एक दुआ है....
अगले जन्म मैं तुम्हारी बेटी बनूँ
और मुझे तुम जैसा आशिक फिर मिले
शायद तुम फिर समझ पाओगे
तुम्हारी इस हरकत से मुझे, और मेरे परिवार को कितना दर्द सहना पड़ा है।
तुमने मेरा पूरा जीवन बर्बाद कर दिया है।
तुमने मेरा पूरा जीवन तबाह कर दिया है।

किताबों की दुनिया

रूपाली
बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)

किताबें एकान्त में हमारा साथ देती है और हमें खुद पर बोझ बनने से बचाती हैं। एक किताब की तरह वफादार कोई दोस्त नहीं है तब भी एक अच्छी किताब पढ़ते हैं तो कहीं न कहीं दुनिया में अपने लिए रोशनी का एक नया दरवाजा खुलता है यदि आपके पास एक बगीचा और एक पुस्तकालय है तो आपके पास वह सब कुछ है जो आपको होना चाहिए। यदि आप केवल उन पुस्तकों को पढ़ते हैं जो हर कोई पढ़ रहा है तो आप भी केवल वही सोच रहे हैं। किताबें सबसे शान्त और सदाबहार दोस्त हैं, ये सबसे सुलभ और बुद्धिमान काउन्सलर हैं और सबसे धैर्यवान शिक्षक हैं।

किताबें मेरी दोस्त हैं ये मुझे हसाँती है और रुलाती है और मुझे जीवन का अर्थ बताती हैं। बिना किताबों वाला कतरा आत्मा के बिना शरीर के समान है।

Albert Einstein Ka Jivan Parichay

Dr. S.C. Yadav
Assitt. prof. Deptt. of Physics

Albert Einstein was born on 14 March 1879 in Ulm, Württemberg, Germany, to a secular, middle-class Jews. His father was Hermann Einstein, and his mother was Pauline Koch. His father was a feather bed salesman, and later he ran an electro chemical factory with moderate success. Albert Einstein had one sister, named Maria. His family moved to Munich, where he started his schooling at the Luitpold Gymnasium. Later, his parents moved to Italy, where he continued his education at Arau, Switzerland. He went to the Swiss Federal Polytechnic School in Zurich in 1896. There, he was trained as a teacher in physics and mathematics. In 1901, Albert gained his diploma and acquired Swiss citizenship. At that time, he didn't get the teaching post, but he took a position as a technical assistant in the Swiss Patent Office. He gained his doctor's degree in 1905.

Albert Einstein would write that in his early years, two wonders deeply affected him. The first was his encounter with the compass. At that time, he was five years old. He was puzzled that invisible forces could deflect the needle. And the second one was when he discovered a book of geometry at the age of 12 and called it his "sacred little geometry book".

In the Swiss Patent Office, when he got spare time, he produced much of his remarkable work. He was appointed Private dozent in Berne in 1908. He became Professor Extraordinary at Zurich in 1909 and Professor of Theoretical Physics at Prague in 1911. In the following year, he returned to Zurich to fill a similar post.

He was also appointed Director of the Kaiser Wilhelm Physical Institute in 1914 and Professor at the University of Berlin. In 1914, he became a citizen of Germany and remained in Berlin until 1933. In 1940, he became a United States citizen and retired from his post in 1945.

Albert Einstein married Mileva Maric in 1903. The couple had a daughter and two sons. In 1919, they divorced. In the same year, Albert married his cousin, Elsa Lowenthal, who died in 1936.

Childhood and education:

Einstein's parents were secular, middle-class Jews. His father, Hermann Einstein, was originally a featherbed salesman and later ran an electrochemical factory with moderate success. His mother, the former Pauline Koch, ran the family household. He had one sister, Maria (who went by the name Maja), born two years after Albert Einstein would write that two “wonders” deeply affected his early years. The first was his encounter with a compass at age five. He was mystified that invisible forces could deflect the needle. This would lead to a lifelong fascination with invisible forces. The second wonder came at age 12 when he discovered a book of geometry, which he devoured, calling it his “sacred little geometry book.” **Einstein** became deeply religious at age 12, even composing several songs in praise of God and chanting religious songs on the way to school. This began to change, however, after he read science books that contradicted his religious beliefs. This challenge to established authority left a deep and lasting impression. At the Luitpold Gymnasium, Einstein often felt out of place and victimized by a Prussian-style educational system that seemed to stifle originality and creativity. One teacher even told him that he would never amount to anything.

Yet another important influence on Einstein was a young medical student, Max Talmud (later Max Talmey), who often had dinner at the Einstein home. Talmud became an informal tutor, introducing Einstein to higher mathematics and philosophy. A pivotal turning point occurred when Einstein was 16 years old. Talmud had earlier introduced him to a children's science series by Aaron Bernstein, Nature wissens chaftliche Volks bucher (1867–68; Popular Books on Physical Science), in which the author imagined riding alongside electricity that was traveling inside a telegraph wire. Einstein then asked himself the question that would dominate his thinking for the next 10 years: What would a light beam look like if you could run alongside it? If light were a wave, then the light beam should appear stationary, like a frozen wave. Even as a child, though, he knew that stationary light waves had never been seen, so there was a paradox. Einstein also wrote his first “scientific paper” at that time (“The Investigation of the State of Aether in Magnetic Fields”).

Albert Einstein: Scientific Career and Inventions: Albert Einstein was a leading figure in the World Government Movement after World War II. He was also offered the Presidency of the State of Israel, but he declined it, and he collaborated with Dr. Chaim Weizmann in developing the Hebrew University of Jerusalem.

He was always interested in solving the problems of physics and also had a clear view and determination to solve them. He made his strategy his own and was able to visualise the main stages on the way to his goal. In fact, he saw his critical achievements as merely one more step toward the next level of advancement.

When his scientific work started, Albert Einstein realised the inadequacies of Newtonian mechanics and his special theory of relativity emanated from an attempt to reconcile the laws of mechanics with the laws of the electromagnetic field.

World renown and Nobel Prize:

Einstein's work was interrupted by World War I. A lifelong pacifist, he was only one of four intellectuals in Germany to sign a manifesto opposing Germany's entry into war. Disgusted, he called nationalism "the measles of mankind." He would write, "At such a time as this, one realizes what a sorry species of animal one belongs to."

In the chaos unleashed after the war, in November 1918, radical students seized control of the University of Berlin and held the rector of the college and several professors hostage. Many feared that calling in the police to release the officials would result in a tragic confrontation. Einstein, because he was respected by both students and faculty, was the logical candidate to mediate this crisis. Together with Max Born, Einstein brokered a compromise that resolved it.

After the war, two expeditions were sent to test Einstein's prediction of deflected starlight near the Sun. One set sail for the island of Principle, off the coast of West Africa, and the other to Sobral in northern Brazil in order to observe the solar eclipse of May 29, 1919. On November 6 the results were announced in London at a joint meeting of the Royal Society and the Royal Astronomical Society.

Nobel laureate J.J. Thomson, president of the Royal Society, stated.

One of the deep thoughts that consumed Einstein from 1905 to 1915 was a crucial flaw in his own theory: it made no mention of gravitation or acceleration. His friend Paul Ehrenfest had noticed a curious fact. If a disk is spinning, its rim travels faster than its center, and hence (by special relativity) metre sticks placed on its circumference should shrink. This meant that Euclidean plane geometry must fail for the disk. For the next 10 years, Einstein would be absorbed with formulating a theory of gravity in terms of the curvature of space-time. To Einstein, Newton's gravitational force was actually a by-product of a deeper reality: the bending of the fabric of space and time.

Awards and Honors:

. Barnard Medal (1920)
. Nobel Prize in Physics (1921)
. Matteucci Medal (1921)
. For MemRS (1921)
. Copley Medal (1925)
. Gold Medal (1926)
. Max Planck Medal (1929)
. Benjamin Franklin Medal (1935)
.Member of the National .Academy of Sciences (1942)
.Time Person of the Century (1999).

Einstein Politics:

In 1914, Einstein remained in Berlin and became a German citizen. It was not until 1933 that he renounced his citizenship to Germany for political reason. Einstein had some pretty good reasons to leave Germany. One good reason in particular was the fact that his name was on the Nazi assassination list.

'I believe the most important mission of the state is to protect the individual and make it possible for him to develop into a creative personality….'-Albert Einstein

Einstein left Germany and came to the United States. He became a professor of Theoretical Physics at Princeton University. In 1940, he became an official citizen of America. Einstein worked on many different projects with various govern.

अर्धांगिनी

डॉ. जी.सी. यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

सेवानिवृत्ति के बाद अनोखेलाल ने अपनी बीबी रामकटोरी के साथ बैंक में एक ज्वाइन्ट अकाउंट खुलवाया। ज्वाइन्ट अकाउंट में रिटायरमेंट बेनिफिट के 50 लाख रुपये जमा हुये और नियमित पेंशन भी प्रारम्भ हो गई। अनोखेलाल ने एक दिन बीबी को ऑनलाइन बैंकिंग का सारा सिस्टम समझाया। साथ ही ओटीपी का महत्व भी बताया और बताया कि जब तक में जिंदा हूँ तब तक इस पर आधा हक तुम्हारा भी है और सख्त हिदायत भी दी कि किसी भी स्थिति में कभी भी किसी के साथ ओटीपी शेयर न करना।

एक दिन अनोखेलाल अपना मोबाइल घर पर ही भूलकर कहीं बाहर निकल गये। तीन चार घण्टे बाद जब वे लौटे तो आते ही रामकटोरी से पूछा: '' कोई कॉल तो नहीं आया था ?''

रामकटोरी: '' बैंक वालों का आया था ?''

अनोखेलाल (घबराते हुऐ): '' ओटीपी से सम्बन्धित तो नहीं था ?''

रामकटोरी (गर्व से): '' अरे वाह! आप तो बड़े स्मार्ट हो ? हाँ ओटीपी ही पूछ रहे थे कि हमारे बैंकिंग स्टेटस को सिल्वर से हटाकर डायमंड में डालना है जो हमारे लिए बहुत बेनीफिटेबिल रहेगा ?''

अनोखेलाल (मंद स्वर में) : हे भगवान! कहीं तुमने ओटीपी तो नहीं बता दिया ?''

रामकटोरी : '' अरे! जब बैंक वाले खुद पूछ रहे थे तो क्यों न बताती ??''

अनोखेलाल जी का सिर चकराया और वो धम्म से सोफे पर बैठ गये ?

अनोखेलाल हड़बड़ाकर मोबाइल हाथ में लेकर बैंक अकॉउंट चेक करने लगे और साथ ही बड़बड़ाये: '' अरी महातमन, कमदिमाग, मूढ़ औरत, गये अपने सारे लाखों रुपये, आज गये...?''

लॉगिन के बाद चैक करने पर अनोखेलाल सुखद आश्चर्य से भर उठे ? क्योंकि उनका अकाउंट सही सलामत था और साथ ही बैंक ने आज ब्याज की रकम भी जोड़ दी थी ?

फिर अनोखेलाल ने रामकटोरी से पूछा: '' मोबाइल क्या तुमने सही ओटीपी बताया था ?''

रामकटोरी: हाँ जी, बिलकुल सही बताया था ? **बैंक वाले बार-बार मुझसे कह रहे थे कि फिर से चेक करके सही ओटीपी बताओ ?** लेकिन मैंने कहा कि चैक करके ही बताया है ? फिर पता नहीं क्या हुआ, फोन पर बोलने वाला मुझ पर चिल्लाने लगा और गालियाँ बकने लगा तो मैंने भी गुस्से में आकर फोन काट दिया ?''

अनोखेलाल: '' क्या था ओटीपी ?''

रामकटोरी: '' ओटीपी तो 8406 आया था लेकिन अपना तो ज्वाइन्ट अकांउट है, तो मैंने अपना आधा ओटीपी '4203 ही उन्हें बताया।

अनोखेलाल ने अपनी बीवी का माथा चूम लिया और उसकी पीठ थपथपाते हुये बोले कि बीवी हो तो ऐसी, वाकई में तुम मेरी अर्धांगिनी हो !!!

परीक्षा में शिक्षक का महत्व

शिवानी गोयल
असिस्टेंट प्रोफे. गणित विभाग

आश्रम में शिष्यों की शिक्षा का अंतिम दिवस था। आज उनकी अंतिम परीक्षा थी। इसमें सफल होने पर वे अपने घर वापस जा सकते थे अन्यथा असफल होने पर आश्रम में पुन: रहकर शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। आचार्य जी ने सभी शिष्यों को बांस की टोकरी दी और कहा पास कि, '' नदी से इसमें जल भर के लाओ और पौधों को सींचों।''

कुछ शिष्यों ने सोचा कि आचार्य जी यह कैसी परीक्षा ले रहे हैं। बांस की टोकरी में तो पानी आ ही नहीं सकता। फिर भी आचार्य जी की आज्ञा का पालन करने सभी लोग अपनी–अपनी टोकरी लेकर नदी पर गए और जल भरने लगे। जैसे ही वे टोकरी में जल भरकर ऊपर लाते, सारा जल टोकरी के छिद्रों से बाहर बह जाता।कुछ शिष्यों ने तो एक दो बार में ही कहा, ''यह नहीं हो सकता'' और वापस आ गए। कुछ थोड़ी देर तक प्रयास करते रहे। कुछ जल भरकर लाये तो रास्ते में ही जल बह गया। उन्होंने टोकरी वहीं फेंक दी। इनमें से तीन शिष्य ऐसे थे जिन्हें गुरू की बात पर विश्वास था। तीनों बांस की टोकरी को बार–बार भरते रहे और निकालते रहे। लगभग घंटे भर बाद उन्होंने देखा कि बांस की टोकरी में पानी भरने पर वह नीचे नहीं गिर रहा है क्योंकि इतने देर में टोकरी पानी से फूल गई थी और बांस की टोकरी लेकर आश्रम आए और पौधों को सींचा।

आचार्य जी ने परीक्षा परिणाम घोषित किया जिसमें यह तीनों शिष्य ही सफल हुए। बाकी शिष्यों को आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आश्रम में ही रुकना था।

आचार्य जी ने सभी को बताया कि हमारे जीवन में गुरू पर विश्वास, अभ्यास और धैर्य होना बहुत आवश्यक है। इसलिए मैंने यह परीक्षा तुम लोगों से ली। आप सब देखिए अन तीनों में मेरे कथन पर विश्वास था। यह बिना थके निरंतर टोकरी में जल भरने का कार्य करते रहे। उन्होंने अभ्यास नहीं छोड़ा। अंत तक धैर्य बनाकर प्रतीक्षा की और विश्वास, अभ्यास तथा धैर्य से आज सफल हुए।''सभी शिष्य अपनी असफलता का कारण समझ चुके थे।

श्रद्धा आध्यात्मिकता के महल की नींव है। सत्य में श्रद्धा, साक्षात्कार के लिए अपनाऐ उचित मार्ग में उस योग्य गुरू में श्रद्धा जिसकी शरण में गए हैं – वह चट्टान है जिस पर हमें आध्यात्मिकता का महल बनाना चाहिए यदि हम वास्तव में सफलता प्राप्त करना चाहते है।

यादें

डॉ. कुबेर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, जंतु विज्ञान विभाग

वही आँगन, वही खिड़की, वही दर याद आता है,
मेरी बेसाख़्ता हिचकी, मुझे खुलकर बताती है,
जो अपने पास हो उनकी कोई कीमत नहीं होती
सफलता के सफ़र में तो कहाँ फुर्सत कि कुछ सोचें
मई और जून की गर्मी बदन से जब टपकती है
अकेला जब भी होता हूँ मुझे घर याद आता है
तेरे अपनों को गाँओं मे, तु अकसर याद आता है
हमारे भाई को ही लो, बिछड़कर याद आता है
मगर जब चोट लगती है, मुकद्दर याद आता है
नवम्बर याद आता है, दिसम्बर याद आता है

महाविद्यालय शिक्षक मण्डल

प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन - प्राचार्य

पी–एच.डी, एम.फिल.
नैट, गेट, एल. एल. बी.
एम. बी.ए.

रसायन विज्ञान विभाग

1. डॉ. जी.सी. यादव	एसोसिएट प्रोफेसर
2. डॉ. (श्रीमति) रश्मि जिन्दल	असिस्टेंट प्रोफेसर
3. डॉ. हेमलता यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
4. श्री दीपक कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
5. डॉ. प्रदीप जैन	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
6. डॉ. संजय सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)

भौतिक विज्ञान विभाग

1. डॉ.सर्वेश चन्द्र यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
2. श्री हवा सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
3. श्रीमती पूजा त्यागी	असिस्टेंट प्रोफेसर
4. डॉ. रविन्द्र कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
5. डॉ. दीपिका चौधरी	असिस्टेंट प्रोफेसर

गणित विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) ऊषा सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर
2. डॉ. उदय राज सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर
3. शिवानी गोयल	असिस्टेंट प्रोफेसर
4. श्री राहुल कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर

शारीरिक शिक्षा विभाग

1. डॉ. मुकेश चौधरी	एसोसिएट प्रोफेसर

जन्तु विज्ञान विभाग

1. डॉ. कुबेर सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. डॉ. एस. पी. सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)

वनस्पति विज्ञान विभाग

1. डॉ. एस. पी. सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. छवि जादौन	असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थाई)

वाणिज्य विभाग

1. डॉ. अरूण यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. डॉ. के.के. सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
3. डॉ. राहुल चतुर्वेदी	असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थाई)

कम्प्यूटर विभाग

1. डा. अरूण यादव (इन्चार्ज)	असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. शाहरूख हुसैन	कम्प्यूटर लैब असिस्टेंट (अस्थाई)

अंग्रेजी विभाग

1. डा. रूबी यादव	(अस्थाई)

महाविद्यालय शिक्षणेत्तर मण्डल

1. श्री अचिन्त कुमार यादव	कार्यालय अधीक्षक
2. श्रीमति कमला देवी	नैत्यिक लिपिक
3. श्री पूरन सिंह ब्रजवासी	नैत्यिक लिपिक
4. श्री अमर सिंह	प्रयोगशाला परिचर (रसायन विज्ञान)
5. श्री परमानन्द	कार्यालय परिचर
6. सन्तोष कुमार	जमांदार
7. श्री जितेन्द्र पाल सिंह	बिजली मिस्त्री सह मैकेनिक
8. श्रीमति रेनू बघेल	प्रयोगशाला परिचर (रसायन विज्ञान)
9. श्री ऋषि शर्मा	प्रयोगशाला परिचर (भौतिक विज्ञान)
10. श्री शंकर गुप्ता	नैत्यिक लिपिक (अस्थाई)
11. श्री अंकुश गुप्ता	कम्प्यूटर ऑपरेटर (अस्थाई)
12. श्री अभय शर्मा	पुस्तकालय परिचर लिपिक (अस्थाई)
13. श्री अरवेन्द्र सिंह	प्रयोगशाला परिचर (जंतु विज्ञान) (अस्थाई)
14. श्री लोकेश मिश्रा	प्रयोगशाला परिचर (रसायन विज्ञान) (अस्थाई)
15. श्री नवीन कुमार	माली (अस्थाई)
16. श्रीमती उर्मिला देवी	कार्यालय परिचर (अस्थाई)
17. श्री विनोद कुमार शंखवार	कम्प्यूटर लैब परिचर (अस्थाई)
18. श्री विनोद कुमार	चौकीदार (अस्थाई)

निर्धन छात्र–छात्राओं को महाविद्यालय की ओर से चैक वितरण

नेहरू युवा केन्द्र

दृष्टि ऐनुअल फीस्ट के अर्न्तगत प्रश्न मंच प्रतियोगिता में प्राइज वितरण

Y-20 प्रोग्राम मे विजय छात्र
अमन वर्मा तथा रिषभ कुमार

13 जनवरी को सेठ श्री छदामी लाल जैन की पुण्यतिथि पर उत्क्रष्ठ छात्र–छात्राओं का मेयर द्वारा सम्मान

नेहरू युवा केन्द्र

Printed By : S. Navrang Offset #9897015610